मासिक

शिविरा

पत्रिका

150 YEARS OF CELEBRATING THE MAHATMA

वर्ष : 61 | अंक : 10 | अप्रैल, 2021 | पृष्ठ : 52 | मूल्य : ₹20

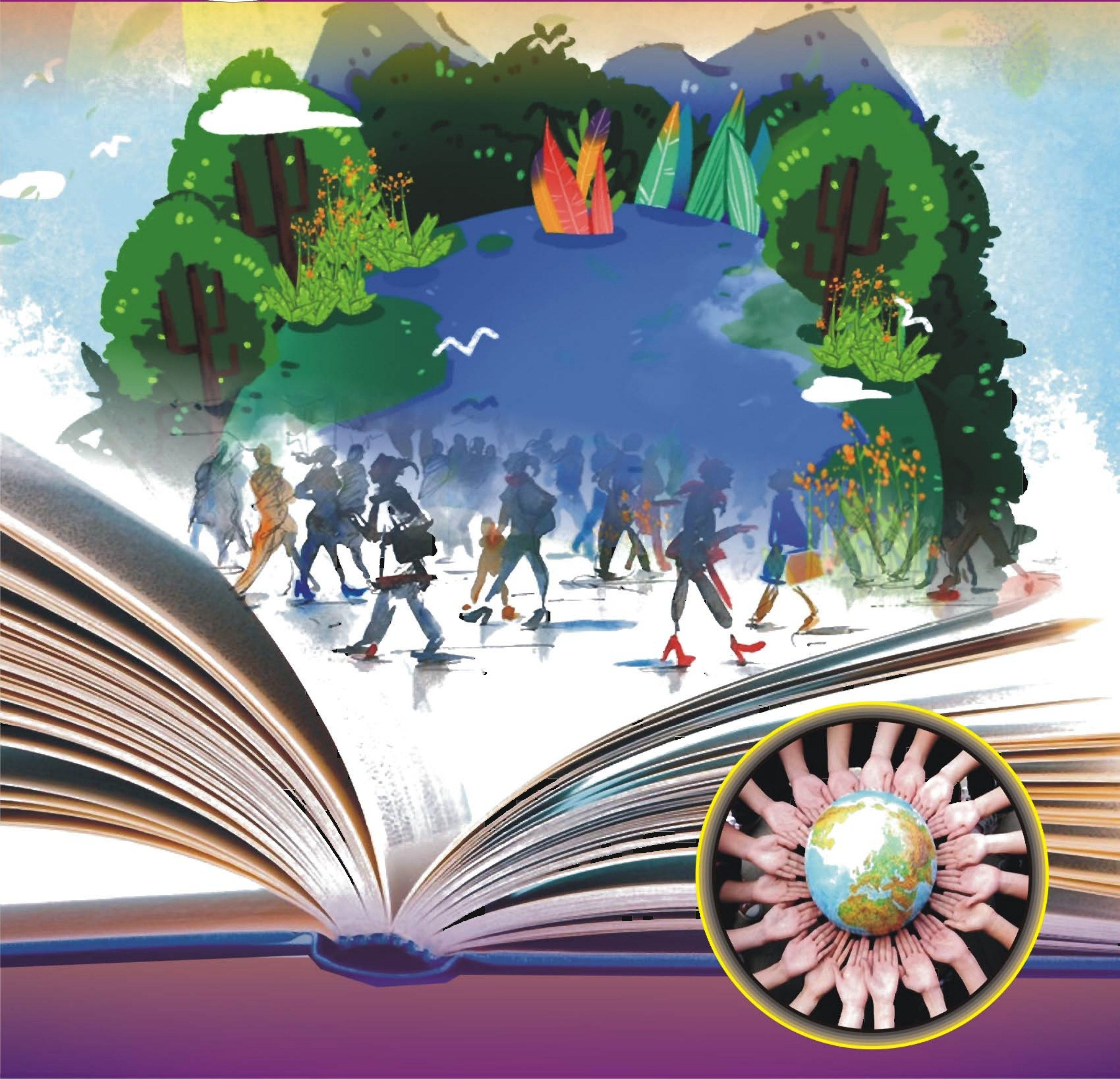

सत्यमेव जयते

श्री गोविन्द सिंह डोटासरा
राज्य मंत्री
शिक्षा (प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा) विभाग
(स्वतंत्र प्रभार)
पर्यटन एवं देवस्थान विभाग
राजस्थान सरकार

समय का मूल्य

एक और शैक्षिक सत्र : 2020-21 अवसान की ओर कदम बढ़ा रहा है। समय की एक निश्चित चाल है, जिसके अनुसार वह निरन्तर आगे बढ़ता रहता है-बिना थके, बिना रूके। समय बहुत मूल्यवान है। इसीलिए समय को धन (Time is Wealth) कहा गया है, जो समय का मूल्य समझकर उसका सम्मान करते हैं, समय उसका मधुर सुफल देता ही है। समय का मूल्य समझना उसका सदुपयोग करना है। समय एक ऐसा निवेश (Investment) है जिसका एवज में न केवल स्वयं आपको जीवन पर्यन्त फायदा मिलता हैं, बल्कि भावी पीढ़ी भी उससे लाभान्वित होती हैं।

प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में अच्छे दिन यानि शुभ अवसर आते हैं। जो समझदार होते हैं, वे उन अच्छे दिनों को यानी अच्छे अवसरों को उपलब्धियों में बदल लेते हैं और ऐसे अवसरों के समय बेपरवाही-लापरवाही करने वाले ताजिंदगी पश्चाताप करते रहते हैं। संत कबीर ने कितना सटीक कहा है-

आछा दिन पाछा गया, कियो न हरि से हेत।
अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत।।

इस दोहे में संत कबीर ने बहुत सुन्दर बात कही है- 'कियो न हरि से हेत' का आशय हमें प्राप्त हुए अवसर का लाभ नहीं उठाने से हैं। मित्रों एवं परिजनों से बात करते हुए और स्वयं को भी, भीतर से टटोलने पर हमें इस दोहे की सार्थकता समझ में आती है।

समापन की ओर अग्रसर इस सत्र की अधिकांश अवधि कोरोना महामारी के प्रतिकूल प्रभावों से ग्रसित रही है। इस वैश्विक महामारी के दौर में भी शिक्षा विभाग ने अपने उपलब्ध संसाधनों एवं दृढ़ निश्चय के बल पर प्रत्येक विद्यार्थी तक निःशुल्क पाठ्यपुस्तकें पहुंचाने की सुनिश्चितता की। विद्यार्थियों का विद्यालय आवागमन बाधित होने के कारण इस दौरान स्माईल प्रोजेक्ट, स्माईल-2, शिक्षा वाणी, शिक्षा दर्शन, ई-कक्षा, आओ घर में सीखे जैसे नवाचारी कार्यक्रम के मध्यम से जहाँ प्रदेश में समस्त कक्षाओं के विद्यार्थियों को लॉकडाउन और विद्यालय बंद रहने के दौरान भी पाठ्यक्रम एवं अध्ययन कार्य से निरन्तर जोड़े रखने का श्लाघनीय कार्य अंजाम दिया, वहीं सम्पूर्ण देश में इन कार्यक्रमों ने प्रशंसा प्राप्त करते हुए इस प्रतिकूल समय में स्कूली बच्चों के शिक्षण-अधिगम को जारी रखने हेतु एक दिशा-निर्देशक की भूमिका भी निभाई।

प्रत्येक वर्ष ग्रीष्मावकाश के पश्चात् जुलाई माह में विद्यालय खुलने के नौ माह पश्चात् अप्रैल माह में वार्षिक परीक्षाओं का आगाज होता है। इसी क्रम में इस सत्र की वार्षिक परीक्षाएं सन्निकट हैं। वैश्विक महामारी कोविड-19 के मद्देनजर एवं विद्यार्थियों को राहत प्रदान करने हेतु विभिन्न कक्षाओं-विषयों के पाठ्यक्रम को इस सत्र के लिए कम कर दिया गया है, ताकि विद्यार्थी इन विषम परिस्थितियों में किसी प्रकार का दबाव महसूस न करें, बल्कि अपना सर्वोच्य प्रदर्शन कर सकें। इस उद्देश्य से मेरी समस्त गुरुजनों से अपेक्षा है कि वे-

- विद्यार्थियों का सतत् मार्ग-दर्शन एवं हौसला अफजाई करें, ताकि विद्यार्थी परीक्षा काल में सहज महसूस कर सकें।
- इस दौर में विद्यार्थियों को अपने माता-पिता, अभिभावकों, परिजनों एवं गुरूजनों से सर्वाधिक सहयोग एवं सपोर्ट की आवश्यकता होती है। अतः गुरुजन इस सम्बन्ध में विद्यार्थियों के माता-पिता, अभिभावकों से सम्पर्क कर उचित मार्गदर्शन, सहयोग एवं सम्बल प्रदान करें।
- समस्त संस्थाप्रधानों एवं शिक्षकगण से अपील है कि वे वर्तमान परिस्थितियों के मद्देनजर कोविड-19 के सम्बन्ध में जारी गाईडलाईन की पूर्ण पालना आवश्यक रूप से सुनिश्चित करावें। चूंकि वर्तमान में कोरोना पुनः अपना असर दिखा रहा है, इसलिए परीक्षा के दौरान मास्क लगाने, सेनिटाइजर के छिडकाव, सोशल डिस्टेंसिंग, स्वच्छता आदि व्यवस्थाएं समुचित रूप से करवाएं।

मुझे Team Education की क्षमता में पूरा भरोसा है। हम सब मिलकर बिना किसी बाधा, रूकावट के परीक्षा यज्ञ को पूर्ण कर सकेंगे, मुझे इसका पूर्ण विश्वास है।

शिक्षा के बल पर हम एक नए राजस्थान का निर्माण कर सकें, इसी भावना एवं शुभकामनाओं के साथ...

(गोविन्द सिंह डोटासरा)

"प्रत्येक वर्ष ग्रीष्मावकाश के पश्चात् जुलाई माह में विद्यालय खुलने के नौ माह पश्चात् अप्रैल माह में वार्षिक परीक्षाओं का आगाज होता है। इसी क्रम में इस सत्र की वार्षिक परीक्षाएं सन्निकट हैं। वैश्विक महामारी कोविड-19 के मद्देनजर एवं विद्यार्थियों को राहत प्रदान करने हेतु विभिन्न कक्षाओं-विषयों के पाठ्यक्रम को इस सत्र के लिए कम कर दिया गया है, ताकि विद्यार्थी इन विषम परिस्थितियों में किसी प्रकार का दबाव महसूस न करें, बल्कि अपना सर्वोच्य प्रदर्शन कर सकें।"

मासिक

शिविरा पत्रिका

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते -श्रीमद्भगवद्गीता 4/38

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है।
In this world there is no purifier as great as knowledge.

वर्ष : 61 | अंक : 10 | चैत्र-वैशाख, २०७८ | अप्रैल, 2021

प्रधान सम्पादक
सौरभ स्वामी

वरिष्ठ सम्पादक
अनिल कुमार अग्रवाल

सम्पादक
मुकेश व्यास

सह सम्पादक
सीताराम गोदारा

प्रकाशन सहायक
नारायणदास जीनगर
रमेश व्यास

मूल्य : ₹ 20

वार्षिक चंदा दर व शर्तें

- शिक्षकों/लिपिकों के लिए ₹ 100
- राजकीय संस्थाओं/कार्यालयों/विद्यालयों के लिए ₹ 200
- गैर राजकीय संस्थाओं के लिए ₹ 300
- मनीऑर्डर/बैंक ड्रॉफ्ट/पोस्टलऑर्डर **निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर** के नाम देय हैं।
- चैक स्वीकार्य नहीं है।
- कृपया पूर्ण पता मय पिन कोड लिखें।
- नवीनीकरण हेतु चंदा राशि कृपया दो माह पूर्व भिजवाएँ।

पत्र व्यवहार हेतु पता
वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा पत्रिका
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान
बीकानेर-334 011
दूरभाष : 0151-2528875
E-mail : shivira.dse@rajasthan.gov.in

शिविरा पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार होते हैं। अभिव्यक्त विचारों से **शिक्षा विभाग राजस्थान** का सहमत होना आवश्यक नहीं है। **-वरिष्ठ संपादक**

इस अंक में

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ
- मूल्यांकन और नया संकल्प 5

आलेख
- सिम्बल ऑफ नॉलेज-डॉ. अम्बेडकर 6
  कुशलाराम मेघवाल
- शिक्षण में नवाचार 7
  मंजू कुमारी
- विश्व पृथ्वी दिवस 8
  राम किशन गोठवाल
- सभी क्षेत्रों में जरूरी है एकाग्रता 9
  डॉ. पुनीत जोशी
- जलियाँवाला बाग-ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में 10
  रामजीलाल घोड़ेला
- अम्बेडकर के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता 11
  चेनाराम सीरवी
- भारत रत्न डॉ. अम्बेडकर का शैक्षिक चिन्तन 12
  विजय सिंह माली
- जन-जन के मन में बसे हैं राम 14
  ओमप्रकाश सारस्वत
- परीक्षा : सफलता के नए द्वार 16
  नव प्रभात दुबे
- संतुलित आहार का आधार-पोषण वाटिका 17
  कमलेश शर्मा
- अनूठी ग्रीन स्कूल 19
  भूरमल सोनी
- माँ सरस्वती के मंदिर का बनवाया भव्य मुख्य द्वार 20
  बलराम मटोरिया
- राजकीय गुरु नानक भवन संस्थान, जयपुर 22
  रेखा कुमारी
- आत्मरक्षा 24
  मंजू छीपा
- विद्यालयी शिक्षा में नैतिक शिक्षा की आवश्यकता 28
  पीराराम शर्मा
- आत्मविश्वास जो हमारे भीतर ही है 30
  राजकुमार बुनकर 'इन्द्रेश'
- वर्तमान परिप्रेक्ष्य में संयुक्त परिवार की भूमिका 31
  शशिकांत द्विवेदी 'आमेटा'
- विद्यार्थी के व्यक्तित्व निर्माण में शिक्षक की भूमिका 33
  अमिता शर्मा
- सपनों को हमेशा जीवित रखो 34
  सीताराम गुप्ता
- जैव विविधता - नैसर्गिक खजाना 35
  विष्णु कुमार गुप्ता
- लोकतंत्र के निर्माण में अम्बेडकर का योगदान 36
  राजकुमार तोलम्बिया
- शिक्षण अधिगम सामग्री का उपयोग 37
  राजेन्द्र सिंह चौहान

कविता
- गुरु-शिष्य और शाला : **उषा शर्मा** 21
- पुस्तकें : **गौरी शंकर वैश्य 'विनम्र'** 31

स्तम्भ
- पाठकों की बात 4
- आदेश-परिपत्र : अप्रैल, 2021 25-26
- शिक्षावाणी प्रसारण कार्यक्रम 27
- बाल शिविरा 43-44
- शाला प्रांगण 45-48
- चतुर्दिक समाचार 49
- हमारे भामाशाह 50

पुस्तक समीक्षा 38-42
- मायली बात
  लेखक : डॉ. कृष्णा आचार्य
  समीक्षक : **शंकर सिंह राजपुरोहित**
- काया री कळझळ
  लेखिका : संतोष चौधरी
  समीक्षक : **मोनिका गौड़**
- बगत रो फेर
  लेखक : डॉ. सूरज सिंह नेगी
  समीक्षक : **डॉ. योगेन्द्र सिंह नरूका 'फुलेता'**
- पत्थर भी मुखड़ा खोलेंगे
  लेखक : रघुबीर सिंह नाहर
  समीक्षक : **रत्नकुमार सांभरिया**

मुख्य आवरण :
नारायणदास जीनगर, बीकानेर

विभागीय वेबसाइट : **www.education.rajasthan.gov.in/secondary**

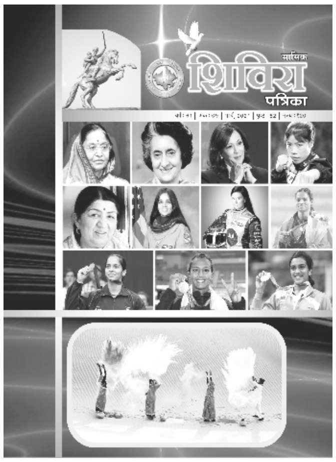

▼ चिन्तन

क्षणशः कणशश्चैव विद्यां अर्थं च साधयेत्।
क्षणे नष्टे कुतो विद्या कणे नष्टे कुतो धनम्।।

भावार्थः प्रत्येक क्षण का उपयोग सीखने के लिए और प्रत्येक छोटे से छोटे सिक्के का उपयोग उसे बचाकर रखने के लिए करना चाहिए, क्षण को नष्ट करके, विद्याप्राप्ति नहीं की जा सकती और सिक्कों को नष्ट करके धन प्राप्त नहीं किया जा सकता।

पाठकों की बात

- माह मार्च 2021 की शिविरा पढ़ने का सौभाग्य मिला। सबसे पहले संपादक मण्डल का आभारी हूँ जो मेरी भावनाओं को शिविरा पत्रिका तक पहुँचाते हैं। चिन्तन तो महत्त्वपूर्ण है ही जो विद्या की महिमा का गुणगान करता है। माह मार्च में विश्व महिला दिवस पर शिविरा के मुख्य पृष्ठ पर उन महिलाओं का सचित्र प्रकाशन किया है जो विश्व स्तर पर अपनी पहचान बनाए हुए हैं। **'अपनों से अपनी बात'** में शिक्षा मंत्री जी ने अनुशासन विशेषतः आत्म अनुशासन एवं जवाबदेही का उल्लेख अपनी सशक्त लेखनी से किया है। उनका एक ही वाक्य काफी है। **'अन्त भला तो सब भला'** बीति ताहि बिसार के आगे की सुध लेय। शिवरात्रि व होली की शुभकामनाएँ दी हैं, उसके लिए उनका बहुत-बहुत धन्यवाद। दिशाकल्प में 'चुनौतियाँ और हम' में स्पष्ट रूप से उल्लेख किया है कि जो करते हैं चुनौतियों का सामना सफलता उनकी होती है। अब तक शिक्षा विभाग ने जिन चुनौतियों का सामना किया है उन्हें आगे भी करते रहेंगे। इसी आशा और सद्भावना के साथ 30 मार्च को राजस्थान दिवस समारोहपूर्वक मनाने का आग्रह किया है। राज्यस्तरीय बालिका पुरस्कार वितरण समारोह का शिविरा के अंतिम पृष्ठ पर सचित्र चित्रांकन इस अंक की विशिष्टता है। बाल शिविरा विद्यार्थियों में सृजनात्मक शक्ति का एक प्रशंसनीय कदम है। अब सवाल आता है आलेखों व कविताओं का। 'शैक्षिक विकास के संवाहक बनें' अपर्णा अरोरा प्रमुख शासन सचिव के आलेख की विषय वस्तुः पढ़ने के काबिल है। शिक्षाकर्मियों के उत्साहवर्धन की एक सफल चेष्टा है। शारीरिक शिक्षा पर मात्र एक ही आलेख पढ़ने को मिला। चुस्त दुरस्त रहने के लिए व्यायाम कीजिए। जो श्रेष्ठ है। 'तुम हो' जीवन को वरदान समझो दोनों कविता अंक को सरस बना रही हैं। अग्नि पुत्री 'टेस्सी थॉमस' का प्रेरणास्पद चरित्रांकन अभूतपूर्व विशिष्टता है। वे भारत की प्रथम महिला प्रक्षेपास्त्रांगना हैं उनका यह चरित्र चित्रण पठनीय है। पर्यावरण संरक्षण एवं संवर्धन में विद्यालयों की भूमिका' अहम भूमिका निभाता है। 'जल है तो कल है' 22 मार्च को विश्व जल दिवस के रूप में मनाया जा रहा है यह जानकारी भी शिविरा से मिली है। पाठ्य सामग्री चयन के लिए सम्पादक मंडल का आभार।

टेकचन्द्र शर्मा, झुंझुनूं

- महिला दिवस एवं होली उत्सव से सुसज्जित शिविरा मार्च, 2021 का मुखावरण सुन्दर एवं समयानुकूल है। आवरणकर्ता को बधाई। शिविरा का सम्पूर्ण कलेवर एवं प्रकाशित पठनीय सामग्री शिक्षा के उत्तरोत्तर वृद्धि में सहायक रहती है। महिला दिवस पर श्री भूरमल सोनी का आलेख 'भारत की प्रथम महिला प्रक्षेपास्त्रांगना', विनोद कुमार भार्गव का आलेख 'वर्तमान शिक्षा पद्धति : एक दृष्टि', कैलाश चन्द्र पुरोहित का आलेख 'सार्वजनिक जीवन और सदाचार' सर्वाधिक अच्छे लगे। वैसे अंक में प्रकाशित सभी आलेख पाठक को शैक्षिक चिन्तन-मनन पर हो रहे प्रयासों को ठीक से अवगत भी कराते हैं। माननीय शिक्षा मंत्री व निदेशक महोदय के मार्गदर्शन के अलावा इस बार आइ.ए.एस. अपर्णा अरोरा ने 'शैक्षिक विकास में संवाहक बनें' आलेख के माध्यम से शिक्षा जगत के दायित्वाधिकारियों को आह्वान के साथ अभिभावक के रूप में मार्गदर्शन किया है। स्थाई स्तंभ बाल शिविरा के पेज व सामग्री बढ़ाएँ तथा शिक्षकों की बाल रचनाओं को भी शामिल करें तो बेहतर होगा। शाला प्रांगण, पुस्तक समीक्षा, समाचार चतुर्दिक व भामाशाह आदि बहुत ही प्रेरक हैं। संपादक मण्डल को अंक बेहतर व संग्रहणीय बनाने के प्रयासों के लिए धन्यवाद एवं बहुत-बहुत आभार।

धनराज राठौड़, पोकरण, जैसलमेर

सत्यमेव जयते

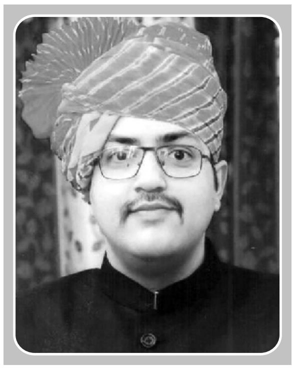

सौरभ स्वामी
निदेशक, माध्यमिक शिक्षा

"नए शिक्षा सत्र में भी हम सभी को नए उत्साह और उमंग के साथ अपने विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने के संकल्प के साथ प्रतिबद्ध रहना है। वर्तमान सत्र के विशिष्ट अनुभव हमारे नए सत्र के लिए पाथेय बनेंगे। मैं आशा करता हूँ कि हमारे शिक्षक नए शिक्षा सत्र 2021-22 के लिए व्यापक, विस्तृत प्रभावी कार्ययोजना बनाकर विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास को मूर्तरूप देने हेतु सदैव की भाँति दृढ़ संकल्पित होकर नई ऊर्जा से कार्य करने हेतु तत्पर रहेंगे।"

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

मूल्यांकन और नया संकल्प

वर्तमान शिक्षा सत्र-2020-21 सम्पन्नता की ओर है। अप्रैल माह, परीक्षा का माह है। विद्यालयी और बोर्ड परीक्षा का न केवल सफल संचालन अपितु श्रेष्ठ परिणाम भी प्राप्त करना है। श्रेष्ठ परिणाम सभी को उत्साहित करता है पर जब श्रेष्ठ परिणाम न आए तो आत्मावलोकन करना चाहिए। परीक्षा माध्यम है मूल्यांकन का और हम सभी का योगदान इसको प्रभावित करता है।

शिक्षा सत्र 2020-21 अनेक कारणों से विशिष्ट सत्र रहा जहाँ शिक्षकों, विद्यार्थियों और अभिभावकों ने गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए हर संभव कठिन परिश्रम किया। राजकीय विद्यालयों में नामांकन वृद्धि से लेकर, अच्छे भौतिक संसाधनों की उपलब्धता के साथ उच्च कोटि का शैक्षिक वातावरण रहा। नवाचार और आधुनिक तकनीक के सहारे ज्ञान और मूल्यांकन की प्रक्रिया सतत चलती रही।

नए शिक्षा सत्र में भी हम सभी को नए उत्साह और उमंग के साथ अपने विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने के संकल्प के साथ प्रतिबद्ध रहना है। वर्तमान सत्र के विशिष्ट अनुभव हमारे नए सत्र के लिए पाथेय बनेंगे। मैं आशा करता हूँ कि हमारे शिक्षक नए शिक्षा सत्र 2021-22 के लिए व्यापक, विस्तृत प्रभावी कार्ययोजना बनाकर विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास को मूर्तरूप देने हेतु सदैव की भाँति दृढ़ संकल्पित होकर नई ऊर्जा से कार्य करने हेतु तत्पर रहेंगे।

अप्रैल माह में ज्योतिबा फुले जयंती 11 अप्रैल, नवरात्रि स्थापना 13 अप्रैल, अम्बेडकर जयंती 14 अप्रैल, गणगौर पूजा 15 अप्रैल, रामनवमी 21 अप्रैल, पृथ्वी दिवस 22 अप्रैल, पुस्तक दिवस 23 अप्रैल तथा महावीर जयंती 25 अप्रैल को है। उत्सव, पर्व और जयन्तियाँ हमारे जीवन को नई प्रेरणा और उत्साह प्रदान करते हैं। सभी पर्वों के पीछे सामूहिक मंगलेच्छा का भाव ही सर्वोपरि है। आइए हम सभी सुनहरे भविष्य के लिए कृत संकल्पित हों।

आप सभी स्वस्थ रहें, प्रसन्न रहें, मंगलकामनाएँ...

(सौरभ स्वामी)

जयन्ती विशेष

सिम्बल ऑफ नॉलेज-डॉ. अम्बेडकर

❒ कुशलाराम मेघवाल

गुरु और उपास्य (देवता)– डॉ. अम्बेडकर ने कहा था कि उनका जीवन तीन गुरुओं और तीन उपास्यों से सफल बना है। उन्होंने तीन महान व्यक्तियों को अपना गुरु माना, पहले गुरु थे तथागत गौतम बुद्ध, दूसरे संत कबीर और तीसरे महात्मा ज्योतिराव फुले और तीन उपास्य (देवता) थे-ज्ञान, स्वाभिमान और शील।

डॉ. अम्बेडकर और शिक्षाः– डॉ. भीमराव अम्बेडकर का जन्म 14 अप्रैल 1891 को मध्यप्रदेश के इंदौर जिले में महू नाम के एक गाँव में हुआ था। उनके पिता रामजी सकपाल थे जो भारतीय सेना में रहते हुए देश की सेवा करते हुए अपने अच्छे कार्यों की बदौलत सेना में सूबेदार के पद तक पहुँचे थे। दादा का नाम मालोजी सकपाल था तथा माता का नाम भीमाबाई था।

शिक्षा : डॉ. अम्बेडकर का शैक्षिक जीवनः– बालक अम्बेडकर ने सतारा शहर में राजवाड़ा चौक पर स्थित गवर्नमेंट हाई स्कूल (अब प्रताप सिंह हाई स्कूल) में 7 नवम्बर 1900 को अंग्रेजी की पहली कक्षा में प्रवेश लिया। इसी दिन से उनके शैक्षिक जीवन का आरम्भ हुआ था, इसलिए 7 नवम्बर को विद्यार्थी दिवस के रूप में मनाया जाता है। उस समय उन्हें 'भिवा' कहकर बुलाया जाता था। स्कूल में उस समय भिवा राम जी अम्बेडकर यह उनका उपस्थिति पंजिका में क्रमांक 1914 अंकित था। बाद में अम्बेडकर का परिवार मुम्बई चला गया। जहाँ उन्होंने एल्फिंस्टोन रोड़ पर स्थित गवर्नमेंट हाई स्कूल में आगे शिक्षा की प्राप्त की। 1907 में, उन्होंने अपनी मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण की और अगले वर्ष उन्होंने एल्फिस्टन कॉलेज में प्रवेश किया, जो कि बॉम्बे विश्वविद्यालय से सम्बद्ध था। इस स्तर पर शिक्षा प्राप्त करने वाले अपने समुदाय से वे पहले व्यक्ति थे।

1912 तक उन्होंने बॉम्बे विश्वविद्यालय

से अर्थशास्त्र और राजनीति विज्ञान में कला स्नातक (बी.ए.) पास की और बड़ौदा राज्य सरकार के साथ काम करने लगे।

1913 में वे 22 साल की आयु में संयुक्त राज्य अमेरिका चले गए जहाँ उन्हें सयाजीराव गायकवाड़ तृतीय (बड़ौदा के गायकवाड़) द्वारा स्थापित एक योजना के तहत न्यूयॉर्क शहर स्थित कोलंबिया विश्वविद्यालय में स्नातकोत्तर शिक्षा का अवसर प्रदान करने के लिए तीन साल के लिए 11.50 डॉलर प्रति माह बड़ौदा राज्य की छात्रवृत्ति प्रदान की गई थी। जून 1915 में उन्होंने अपनी कला स्नातकोत्तर (एम.ए.) परीक्षा पास की। 1916 में उन्हें अपना दूसरा शोध कार्य 'नेशनल डिविडेंड ऑफ इण्डिया–ए हिस्टोरिक एण्ड एनालिटिकल स्टडी' के लिए दूसरी कला स्नातकोत्तर डिग्री प्रदान की गई। फिर आगे डॉ. अम्बेडकर ने लंदन की राह ली और 1916 में अपने तीसरे शोध कार्य इवोल्युशन ऑफ प्रोविन्शिअल फिनान्स इन ब्रिटिश इण्डिया के लिए अर्थशास्त्र में पी.एच.डी. की डिग्री प्राप्त की।

9 मई 1927 को उन्होंने मानव विज्ञानी अलेक्जेंडर गोल्डन वेइजर द्वारा आयोजित एक सेमिनार में भारत में जातियों, उनकी प्रणाली, उत्पत्ति और विकास नामक एक शोध पत्र प्रस्तुत किया जो उनका (डॉ. अम्बेडकर) का पहला प्रकाशित पत्र था।

3 वर्ष तक की अवधि के लिए मिली हुई छात्रवृत्ति का उपयोग डॉ. अम्बेडकर ने केवल दो वर्षों में ही अमेरिका में पाठ्यक्रम पूरा करने में किया और 1916 में डॉ. अम्बेडकर लंदन गए। वहाँ उन्होंने ग्रेज इन में बैरिस्टर कोर्स (विधि अध्ययन) के लिए प्रवेश लिया और साथ ही लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स में भी प्रवेश लिया। जहाँ उन्होंने अर्थशास्त्र की डॉक्टरेट थीसिस पर काम करना शुरू किया। जून 1917 में विवश होकर उन्हें अपना अध्ययन अस्थायी तौर पर बीच में छोड़कर भारत लौटना पड़ा क्योंकि बड़ौदा राज्य से उनकी छात्रवृत्ति समाप्त हो गई थी। लौटते समय उनके पुस्तक संग्रह को अलग जहाज पर भेजा गया था। जिसे जर्मन पनडुब्बी के टारपीडो द्वारा डुबो दिया गया। ये प्रथम विश्व युद्ध का काल था।

उन्हें चार साल के भीतर अपने थीसिस के लिए लंदन लौटने की अनुमति मिली। बड़ौदा राज्य के सेना सचिव के रूप में काम करते हुए अपने जीवन में अचानक फिर से आये भेदभाव से डॉ. अम्बेडकर निराश हो गए और अपनी नौकरी छोड़कर एक निजी ट्यूटर और लेखाकार के रूप में काम करने लगे। यहाँ तक कि उन्होंने अपना परामर्श व्यवसाय भी शुरू किया जो उनकी सामाजिक स्थिति के कारण विफल रहा। लेकिन अपने एक अंग्रेज जानकार मुम्बई के पूर्व राज्यपाल लॉर्ड सिडनेम के कारण उन्हें मुँबई के सिडनेम कॉलेज ऑफ इकोनॉमिक्स में राजनीतिक अर्थव्यवस्था के प्रोफेसर के रूप में नौकरी मिल गई। 1920 में कोल्हापुर के शाहू महाराज, अपने पारसी मित्र के सहयोग से और कुछ निजी बचत के सहयोग से वो एक बार फिर से लंदन (इंग्लैण्ड) वापस जाने में सफल हो पाए तथा 1921 में विज्ञान स्नातकोत्तर (एम.एस.सी.) की डिग्री प्राप्त की तथा 1922 में उन्हें ग्रेज इन से बैरिस्टर एट लॉज डिग्री प्राप्त

हुई। उन्हें ब्रिटिश बार में बैरिस्टर के रूप में प्रवेश मिल गया तथा 1923 में उन्होंने अर्थशास्त्र में डी.एससी. (डॉक्टर ऑफ साईंस) उपाधि प्राप्त की। उनकी तीसरी और चौथी डॉक्टरेट्स (एल.एल.डी कोलंबिया विश्वविद्यालय, 1952 और डी. लिट्., उस्मानिया विश्वविद्यालय 1953 सम्मानित उपाधियाँ थी।

प्रतिष्ठित एवं अद्वितीय विद्वान और विधिवेत्ता के कारण 15 अगस्त 1947 में भारत की स्वतंत्रता के बाद कांग्रेस के नेतृत्व वाली नई सरकार में डॉ. अम्बेडकर को भारत के पहले (प्रथम) कानून एवं न्याय मंत्री के रूप में सेवा करने के लिए आमंत्रित किया और 29 अगस्त 1947 को संविधान प्रारूप समिति के अध्यक्ष पद पर नियुक्त किया।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर एक बुद्धिमान संविधान विशेषज्ञ थे, उन्होंने लगभग 60 देशों के संविधानों का अध्ययन किया और भारत का संविधान जो संसार का सबसे बड़ा लिखित संविधान है, निर्मित कर भारतीय संविधान निर्माता कहलाए। डॉ. अम्बेडकर को 'भारत के संविधान का पिता' के रूप में मान्यता प्राप्त है।

संविधान सभा द्वारा 26 नवम्बर 1949 को संविधान अपनाया गया था। अपने काम को पूरा करने के बाद बोलते हुए डॉ. अम्बेडकर ने कहा–''मैं महसूस करता हूँ कि संविधान, बाध्य (काम करने लायक) है, यह लचीला है पर साथ ही यह इतना मजबूत भी है कि देश को शाँति और युद्ध दोनों के समय जोड़ कर रख सके। वास्तव में, मैं कह सकता हूँ कि अगर कभी कुछ गलत हुआ तो इसका कारण यह नहीं होगा कि हमारा संविधान खराब था बल्कि इसका उपयोग करने वाला मनुष्य अधम था।''

डॉ. अम्बेडकरः– डॉ. अम्बेडकर का जन्मदिवस डॉ. अम्बेडकर जयन्ती के रूप में हर वर्ष 14 अप्रैल को एक बड़े उत्सव के रूप में देश भर में मनाया जाता है। भारत सहित विश्व के अन्य देशों में भी डॉ. अम्बेडकर जयन्ती का उत्सव भी मनाया जाता है। 125वीं जयन्ती 102 देशों में तथा संयुक्त राष्ट्र संघ में मनाई गई थी।

व्याख्याता (राजनीति विज्ञान)
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय गोगागेट,
बीकानेर (राज.)
मो: 9950990737

शैक्षिक चिन्तन

शिक्षण में नवाचार

❒ मंजू कुमारी

शिक्षा जगत में भविष्य के कर्णधार बालकों का पाठ्यक्रम बदल गया है। विशेषकर नन्हें–मुन्नों का जिनका पाठ्यक्रम नवीन शिक्षा नीति–2020 के अनुसार पाठ्यपुस्तकों का भार कम कर दिया गया है। साथ ही एक ही पाठ्य पुस्तक 'आओ सीखें' में हिन्दी, अंग्रेजी, गणित तथा पर्यावरण अध्ययन को शामिल कर भाग एक, दो तथा तीन में बदल दिया गया है। एक भाग पूरा हो जाने के बाद बच्चों से दूसरा भाग मंगवाया जाएगा तथा दूसरा भाग पूरा हो जाने पर तीसरा भाग पढ़ाया जाएगा। इस प्रकार बालक बस्ते के बोझ से भी बच जाएगा तथा शिक्षण कार्य में भी सुविधा रहेगी। बालक रुचि के साथ विषय वस्तु का ज्ञान प्राप्त कर सकेगा तथा विषय वस्तु की समझ भी आसानी से हो पाएगी।

नवीन पाठ्य पुस्तक निर्माण समिति द्वारा बहुत ही रुचिपूर्ण तथा आकर्षक चित्रों युक्त विभिन्न गतिविधियों का प्रयोग कर बहुत ही अच्छा पाठ्यक्रम तैयार किया गया है। इस पाठ्यक्रम में प्रत्येक विषय को सरल अच्छे ढंग से समझाने तथा सिखाने का प्रयास किया है।

वैसे भी समय–समय पर शिक्षकों के बहुत से प्रशिक्षण करवाकर सरकार शिक्षण में नवाचार लाने का प्रयास करती है और शिक्षक विद्यालय स्तर पर नवाचार को अपनाकर शिक्षण कार्य में नवाचार लाते हुए बच्चों को सिखाने का प्रयास करते हैं।

इस बार नवीन पाठ्यपुस्तक के बदलाव के साथ ही 1 से 5 तक के विद्यार्थियों के लिए 'कार्य–पुस्तिका' प्रत्येक विषय की दी गई है जिसमें बच्चों को बहुत ही सरल तथा रोचक तरीके से अभ्यास कार्य करवाकर सिखाने का प्रयास किया गया है। वास्तव में ये पुस्तकें बच्चों के लिए बहुत ही उपयोगी सिद्ध हो रही हैं। बच्चे पूर्ण लगन तथा रुचि के साथ दिया गया अभ्यास कार्य करते हैं तथा समझकर उसे अपने व्यावहारिक जीवन में देखते हैं। जैसे विभिन्न आकृतियों की जानकारी, संख्या ज्ञान तथा वाक्य रचना, सृजनात्मकता का विकास, कहानी, कविता लेखन आदि विद्यार्थियों के लिए बहुत ही रोचक तथा आकर्षक है।

नवीन शिक्षण पद्धति में बच्चों को खेल–खेल में पढ़ना–लिखना तथा समझना सिखाया जाएगा। शनिवार के दिन 'नो बैग डे' अर्थात बिना बैग के स्कूल आना है। ताकि बच्चे सीखे हुए ज्ञान का मौखिक दोहरान कर बता सकें। उनका शारीरिक तथा मानसिक विकास अच्छा हो सके।

एक शिक्षिका तथा अभिभावक होने के नाते समस्त पाठकों से मेरा आग्रह है कि 'अपने बच्चों पर विशेष ध्यान दें। उसे भरपूर प्यार तथा ममता की आवश्यकता होती है। उसे प्रत्येक कार्य में प्रोत्साहन तथा सहयोग की आवश्यकता होती है। उसके शिक्षण कार्य पर भी विशेष ध्यान दें, उसे अकेला ना छोड़े। उस पर अनावश्यक रूप से पढ़ाई का दबाव न डालें। क्योंकि प्रत्येक बच्चें की बौद्धिक क्षमता तथा सीखने का स्तर भिन्न–भिन्न होता है। ईश्वर की इस अनुपम कृति को फूलों की भाँति मुस्कुराने दें। उसे प्रेम तथा अपनेपन के साथ सिखाने तथा समझाने का प्रयास करें।

मेरा अनुभव और विचार यही कहते हैं कि एक बच्चे का मन कोरे कागज के समान है। हम उसे जैसा बनाना चाहते हैं वह वैसा बनता चला जाता है। बस अपने बच्चे के साथ अथक प्रयास और मेहनत की नितान्त आवश्यकता है। उम्मीद करती हूँ कि मेरे विचारों से आप जरूर सहमत होंगे।

अध्यापिका
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय आभावास,
श्रीमाधोपुर, सीकर (राज.)
मो: 9829061316

शिक्षा वह नींव है जिस पर हम अपने भविष्य का निर्माण करते हैं।
–क्रिस्टीनग्रेगोइर

22 अप्रैल विशेष

विश्व पृथ्वी दिवस

❒ राम किशन गोठवाल

सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में पृथ्वी ही एकमात्र ऐसा ग्रह है जिस पर जीवन संभव है और प्राणियों के रहने के अनुकूल है। किन्तु तीव्र औद्योगिक विकास, मानव के लोभ और प्राकृतिक संसाधनों के असीमित दोहन के कारण इस ग्रह पर संकट के बादल मंडरा रहे हैं। तकनीक और विज्ञान के इस दौर में जिस तरह से ग्लोबल वॉर्मिंग बढ़ रहा है, ग्लेशियर पिघल रहे हैं, बेमौसम वर्षा हो रही है, मिट्‌टी की गुणवत्ता घट रही है, प्रदूषण तीव्र गति से बढ़ रहा है और कंक्रीट के जंगल उग रहे हैं, इन सब चीजों के बीच पृथ्वी को बचाने की महती आवश्यकता है।

अमरीका में तीव्र औद्योगिक विकास के कारण हो रहे पर्यावरण प्रदूषण के दुष्परिणामों पर ध्यान आकर्षित करने के लिए सर्वप्रथम अमरीकी सीनेटर गेलार्ड नेलसन ने अमरीकी समाज को संगठित किया, विरोध प्रदर्शनों एवं जन आन्दोलनों के लिए प्लेटफार्म उपलब्ध कराया। पृथ्वी के उत्तरी गोलार्द्ध में 21 मार्च को बसंत ऋतु का पहला दिन माना जाता है इसलिए 21 मार्च को अन्तर्राष्ट्रीय पृथ्वी दिवस मनाया जाता था जिसे संयुक्त राष्ट्रसंघ की मान्यता प्राप्त थी किन्तु अमरीकी सीनेटर गेलार्ड नेल्सन के नेतृत्व में किए जन आन्दोलनों के कारण अब संसार के 195 से अधिक देशों में 22 अप्रैल को विश्व पृथ्वी दिवस मनाया जाता है।

भूमण्डलीय उष्णता (ग्लोबल वार्मिंग) आज ज्वलन्त समस्या बन गई है। ग्लोबल वॉर्मिंग के कारण प्रकृति में बदलाव आ रहा है। कहीं भारी वर्षा तो कहीं सूखा, कहीं लू तो कहीं ठण्ड, कहीं बर्फ की चट्‌टाने टूट रही हैं तो कहीं समुद्री जल स्तर में वृद्धि हो रही है। आज जिस गति से ग्लेशियर पिघल रहे हैं इससे भारत और पड़ौसी देशों को खतरा बढ़ रहा है। ग्लोबल वॉर्मिंग, हिमस्खलन, कटाव, बर्फ के नीचे भूकम्प आना, पास के किसी अन्य ग्लेशियर में पानी की मात्रा बढ़ना, ग्लेशियर में लाखों घनमीटर पानी अथवा तलछट में पानी को रोकने की क्षमता समाप्त होने पर ग्लेशियर फटते हैं।

16-17 जून 2013 को गढ़वाल, उत्तराखण्ड में आई भीषण आपदा भी ग्लोबल वॉर्मिंग का ही परिणाम है, जिससे वर्षा, बाढ़, भूस्खलन के कारण रुद्रप्रयाग, चमोली, उत्तरकाशी, बागेश्वर, अल्मोड़ा, पिथौरागढ़ जिलों में भारी तबाही मची जिसमें दस हजार से अधिक लोग मारे गए। एक हजार से अधिक घर उजड़ गए। 8वीं शताब्दी में स्थापित भगवान शिव का विश्वप्रसिद्ध केदारनाथ मंदिर भी क्षतिग्रस्त हो गया। अभी 7 फरवरी 2021 को देवभूमि उत्तराखण्ड के चमोली जिले में जोशीमठ के पास नन्दादेवी का ग्लेशियर टूटने से ऋषिगंगा और धौली नदियों में भयंकर बाढ़ आ गई। जिसमें जन-धन की हानि हुई। चमोली की आपदा प्राकृतिक नहीं, मानव जनित है। जून 2020 में देहरादून के वाडिया भू-वैज्ञानिक संस्थान के वैज्ञानिकों ने एक शोध में ग्लेशियरों के पिघलने के खतरे को लेकर आगाह किया था।

वायुमण्डल के संघटन में कार्बन डाइ ऑक्साइड एक महत्त्वपूर्ण कारक है। कार्बन डाइ ऑक्साइड व कुछ अन्य गैसें सूर्य की किरणों का अवशोषण करके वायुमण्डल को अपेक्षित ताप तक गर्म रखती हैं। कार्बन डाइ ऑक्साइड सूर्य की किरणों को पृथ्वी पर पहुँचने देती है तथा पृथ्वी से ऊष्मा को बाहर भी निकलने देती है लेकिन यह गैस अधिक मात्रा में होने के कारण पृथ्वी के चारों ओर एक मोटा आवरण बना लेती है तथा पृथ्वी से वापस लौटने वाली ऊष्मा को रोकने लगती है इसलिए पृथ्वी के इस क्षेत्र का तापमान बढ़ जाता है। इसे ही 'ग्रीनहाउस प्रभाव' कहा जाता है। इसमें मुख्य भूमिका कार्बन डाइ ऑक्साइड (CO_2), मीथेन (CH_4), जलवाष्प, नाइट्रस ऑक्साइड (N_2O), ओजोन (O_3), क्लोरो-फ्लोरो कार्बन (CFC) आदि गैसों की है।

भूमण्डल के तापमान को बढ़ाने एवं जलवायु परिवर्तन में ग्रीनहाउस गैसों की भूमिका सबसे ज्यादा है। ग्रीनहाउस गैसें वे गैसें होती हैं जो पृथ्वी के वातावरण में प्रवेश करके यहाँ का तापमान बढ़ाने में सहायक होती हैं। वैज्ञानिकों के अनुसार इन गैसों का उत्सर्जन यदि इसी प्रकार चलता रहा तो 21वीं शताब्दी में पृथ्वी का तापमान 3 से 8 डिग्री सेल्सियस तक बढ़ सकता है और यदि ऐसा हुआ तो इसके परिणाम बहुत ही घातक होंगे। दुनिया के कई हिस्सों में बिछी हुई बर्फ की चादर पिघल जाएगी जिससे समुद्री जल स्तर में 1 से 1.5 फीट तक वृद्धि हो सकती है और न्यूयॉर्क, पेरिस, लंदन, मालदीव, हॉलैण्ड जैसे शहरों के अधिकांश भूखण्ड व अनेक छोटे-छोटे द्वीप जलमग्न हो जाएंगे। ग्लोबल वॉर्मिंग के कारण हिमनद कम हो रहे हैं और इसके कारण अधिक ऊँचाई की आर्द्र भूमियों में जल स्तर में परिवर्तन हो रहा है। जिससे अंततः निचले हिस्से प्रभावित होंगे।

वर्ल्ड मीटियोरॉलॉजिकल ऑर्गेनाइजेशन की रिपोर्ट के अनुसार ग्लोबल वॉर्मिंग बढ़ने का प्रमुख कारण मानवीय गतिविधियों के कारण वातावरण में ग्रीनहाउस गैसों की मात्रा में वृद्धि होना है। कार्बन डाइ ऑक्साइड का उत्सर्जन पिछले 10-15 सालों में 40 गुणा बढ़ गया है। दूसरे शब्दों में उद्योगिकीकरण के बाद से इसमें 100 गुणा वृद्धि हुई है। इन गैसों का उत्सर्जन आम उपयोग के उपकरणों एयरकण्डीशनर, फ्रिज, कम्प्यूटर, स्कूटर, कार आदि में होता है। कार्बन डाई ऑक्साइड के उत्सर्जन का सबसे बड़ा स्रोत पेट्रोलियम ईंधन और परम्परागत चूल्हे हैं। पशुपालन से मीथेन (CH_4) गैस का उत्सर्जन होता है। कोयला बिजली घर भी ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन के प्रमुख स्रोत हैं। हालांकि क्लोरोफ्लोरो का प्रयोग भारत में बन्द हो चुका है, लेकिन इसके स्थान पर प्रयोग हो रही गैस हाइड्रो क्लोरोफ्लोरो कार्बन सबसे हानिकारक ग्रीनहाउस गैस है जो कार्बन डाइ ऑक्साइड (CO_2) की तुलना में एक हजार गुणा ज्यादा हानिकारक है। ग्लोबल वॉर्मिंग में विभिन्न देशों का योगदान संयुक्त राज्य अमेरिका 30.3, यूरोप 27.7, सोवियत संघ 13.7, भारत, चीन और विकासशील एशिया 12.2, दक्षिण

और मध्य अमेरिका 3.8, जापान 3.7, पश्चिम एशिया 2.6, अफ्रीका 2.5, कनाडा 2.3 और आस्ट्रेलिया 1.1 प्रतिशत प्रतिवर्ष है।

पृथ्वी के वातावरण में समताप मंडल के निचले भाग में पृथ्वी से लगभग 50 किलोमीटर की ऊँचाई पर ओजोन परत है। यह सूर्य की पराबैंगनी किरणों को शोषित कर उन्हें पृथ्वी पर पहुँचने से रोकती है। ओजोन गैस की कमी व विनाश के लिए उत्तरदायी हैलोजनिक गैसें हैं जिनमें मुख्य रूप से क्लोरोफ्लोरो कार्बन, क्लोरीन, ब्रोमीन, मिथाइल क्लोरोफॉर्म, कार्बन टेट्राक्लोराइड आदि। समताप मण्डल में क्लोरीन परमाणु के विसरण से ओजोन की कमी होती है। क्लोरीन का एक परमाणु ओजोन के 1,00,000 अणुओं को नष्ट करता है। ये क्लोरीन परमाणु क्लोरोफ्लोरो कार्बन के विघटन से बनते हैं। इनके कारण ओजोन परत का तेजी से विघटन हो रहा है जिससे ध्रुवीय प्रदेशों में जमा बर्फ पिघलने लगी है तथा मानव को अनेक प्रकार के चर्म रोगों का सामना करना पड़ रहा है। रेफ्रिजरेटर तथा एयरकण्डीशनर में उपयोग होने वाली फ्रियोन और क्लोरोफ्लोरो कार्बन (CFC) गैसें भी हरितगृह प्रभाव के लिए उत्तरदायी हैं।

हरितगृह प्रभाव को कम करने के उपायों में जीवाश्म ईंधन का उपयोग कम करना। अधिकाधिक वृक्षारोपण करना क्योंकि पौधे प्रकाश संश्लेषण द्वारा कार्बन डाइ ऑक्साइड को अपचयित कर ऑक्सीजन छोड़ते हैं। इस प्रकार वायमुण्डल के कार्बन डाई ऑक्साइड स्तर में संतुलन बनाए रखते हैं। क्लोरोफ्लोरो कार्बन को रोकना-क्लोरोफ्लोरो कार्बन एक बार वायुमण्डल में प्रवेश करने पर वर्षों तक नष्ट नहीं होती है। अतः क्लोरोफ्लारो कार्बन उत्सर्जन करने वाले भौतिक साधनों के प्रयोग को रोका जाना महत्त्वपूर्ण है।

आइपीसीसी (Intergovernmental Panel on Climate Change) की रिपोर्ट में इस बात की चेतावनी दी गई है कि विश्व के देशों के पास ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन कम करने के लिए मात्र 10 वर्षों का समय है। यदि ऐसा नहीं होता है तो पूरे विश्व को इसका परिणाम भुगतना पड़ेगा।

प्राध्यापक (भूगोल)
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय सिलारपुर, नीमराना, अलवर
मो: 9166060320

एकाग्रता और सफलता

सभी क्षेत्रों में जरूरी है एकाग्रता

❐ डॉ. पुनीत जोशी

जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता के लिए जरूरी है एकाग्रता। एकाग्रता यानि कंसंट्रेशन यह एक ऐसी मनस्थिति है जब मनुष्य एक विचार या एक क्रिया पर अपने आपको केन्द्रित करता है। यद्यपि एकाग्रता लाना काफी कठिन है। हमारा ध्यान भटकाने के लिए बहुत से विचार व भावनाएँ आती हैं लेकिन उन सभी को छोड़ कर मूल विचार या क्रिया पर स्वयं को केन्द्रित करना जरूरी है। यदि व्यक्ति अपने आप को एकाग्र करने में सफल हो जाता है तो उसकी जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता निश्चित है।

यदि आप विद्यार्थी हैं तो आपकी पढ़ाई में एकाग्रता बहुत बड़ी जरूरत है। हमारी परीक्षा प्रणाली व मूल्यांकन बहुत कुछ स्मरण शक्ति पर निर्भर है। किसी भी विषय को याद करने की पहली जरूरत है एकाग्रता। यदि आप क्लास में हैं शिक्षक आपको किसी महत्त्वपूर्ण विषय को समझा रहा है और आपका ध्यान हाल ही में देखी गयी किसी फिल्म पर है या दोस्तों के साथ पार्टी मनाने का विचार चल रहा है या किसी की नाराजगी याद आ रही है या घर-परिवार की चिन्ता है तो आप कभी भी उस महत्त्वपूर्ण विषय को नहीं समझ पाएँगे। ना ही उसे याद रख पाएँगे चाहे आपको पढ़ाने वाला कितना ही बढ़िया ढँग से समझाने का प्रयास कर रहा है। यदि आप किसी कोर्स की किताब या अन्य किताब या पत्र-पत्रिका पढ़ रहे हैं लेकिन आपकी उसको पढ़ने में एकाग्रता नहीं है तो आपका पढ़ा हुआ कुछ भी समझ में नहीं आएगा, ना ही उसे आप ग्रहण कर सकेंगे। कई बार किताब के पन्ने पढ़ लेने के बाद भी आपको पता नहीं चलेगा कि आपने क्या पढ़ा क्योंकि आप मानसिक रूप से कहीं और हैं।

आप अपनी दैनिक जीवन की गतिविधियों में भी एकाग्रता नहीं लाएँगे तो उनका भी सही ढंग से निष्पादन नहीं होगा। उदाहरण के लिए आप नहा रहे हैं और आपका ध्यान नहाने में नहीं, कहीं ओर है, आप ब्रुश कर रहे हैं आपका ध्यान उस तरफ नहीं है, आप बाल बना रहे हैं और आपका ध्यान उस तरफ नहीं है तो आप इन सभी कार्यों को सही ढंग से नहीं कर पाएँगे। इनमें किसी न किसी रूप में कमी रहेगी जो आपकी पूर्णता को कम करेगी।

आप पूजा कर रहे हैं, आरती कर रहे, घंटिया बज रही हैं और आप अपनी किन्हीं विचारों के सागर में डूबे हैं तो एकाग्रता नहीं रहेगी। यह पूजा और आरती उस तरह आपके लिए प्रभावी नहीं रहेगी जिस तरह की आप अपेक्षा कर रहे हैं। कहने का मतलब यह है कि जीवन का कोई क्षेत्र हो यदि आप में एकाग्रता नहीं है तो किसी भी क्षेत्र में सफलता पाना आपके लिए बहुत कठिन कार्य होगा। सफलता के लिए एकाग्रता की आदत का विकास करना जरूरी है। यद्यपि एकाग्रता पाना बहुत आसान नहीं हैं। यह एक साधना है, यह एक तपस्या है। किसी भी बिन्दु पर एकाग्र होना बहुत ही कठिन कार्य है। लेकिन धीरे-धीरे अभ्यास तथा पूरी निष्ठा के साथ कोशिश करने पर आप एकाग्रता को लाने में सफल होंगे। एकाग्रता लाने के लिए कम से कम एक घंटा निश्चित समय पर जितना संभव हो बिल्कुल शान्त मन से लेट जाएं। अपनी सारी माँसपेशियों को ठीक कर लें। अपने मन को सभी चिन्ताओं व परेशानियों से दूर करने का प्रयास करें। शान्त व स्थिर लेटे रहें। यद्यपि प्रारंभ में यह कठिन लगेगा लेकिन दृढ़ निश्चय तथा धीरे-धीरे अभ्यास के माध्यम से यह संभव हो जाएगा। यह योग क्रियाओं में श्वासन की तरह ही है। जिसमें व्यक्ति शान्त चित्त से लेट कर सारी चिन्ताओं से मुक्त होकर लेटा रहता है। यह एकाग्रता का सबसे अच्छा उदाहरण है।

जब आप अपने मन को एकाग्रचित्त रखना सीख लेंगे तो आपके जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में मन को एकाग्र करने की कला आ जाएगी। चाहे वह पढ़ाई हो या खेलकूद रोजगार हो या पारिवारिक जीवन पूजा हो या अध्ययन जब एकाग्रता होगी तो सभी क्षेत्रों में सफलता आएगी। आप स्वयं को एक अलग आत्म-विश्वास से भरे तथा अलग पाएँगे।

बिस्सों का चौक, भैरुजी की गली, बीकानेर
(राज.)-334005
मो: 9983300720

13 अप्रैल पर विशेष

जलियाँवाला बाग - ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में

❒ रामजीलाल घोड़ेला

भारत का स्वतंत्रता संग्राम ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में शहीदों के बलिदान की गौरव गाथा है। सभी समुदायों के लोगों ने बिना किसी भेदभाव के सक्रियता से भाग लिया। जब भारत के वीर सैनिकों ने विश्वयुद्ध जीतने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया था तो अंग्रेज सरकार ने घोषणा की थी कि वह भारत को स्वायत्त शासन देने के लिए तैयार हो रही है। राष्ट्रपति विल्सन ने भी एक 14 सूत्री घोषणा पत्र जारी किया था जिसमें कहा गया था कि युद्ध के बाद सभी लोगों को आत्म निर्णय का अधिकार दिया जाएगा, किन्तु ऐसा नहीं हुआ।

रॉलेट एक्ट व दमनकारी नीतियाँ– अंग्रेज सरकार ने 21 मार्च 1919 को रॉलेट एक्ट लागू किया और इसने 'डिफेंस ऑफ इंडिया' एक्ट की जगह ली, क्योंकि यह कानून प्रथम विश्वयुद्ध समाप्त होने के साथ समाप्त हो जाना था। रॉलेट एक्ट में ऐसी विशेष अदालतों की व्यवस्था की गई थी, जिनके निर्णयों के विरुद्ध अपील नहीं की जा सकती थी। मुकदमा बन्द कमरे में होता था, जिसमें गवाह पेश करने की भी अनुमति नहीं थी। इसके अतिरिक्त अन्य ऐसे दमनकारी प्रावधान थे, जो भारतीयों पर अत्याचार से कम नहीं थे। रॉलेट एक्ट का विरोध करने के लिए गाँधीजी ने पहले कदम के रूप में जनता को आह्वान करते हुए एक प्रतिज्ञा लेने को कहा– ''जब तक इस कानून को वापिस न लिया जाए, आप सभ्यतापूर्वक इसे मानने से इनकार कर दें।' फिर 6 अप्रैल 1919 को देशभर में हड़ताल का आह्वान किया गया। उस दिन देश भर में समस्त आर्थिक गतिविधियाँ ठप्प हो गई और हड़ताल को आशातीत सफलता मिली।

राष्ट्रीय एकता और राष्ट्रव्यापी आन्दोलन– उन्हीं दिनों हिन्दू–मुस्लिम एकता का अभूतपूर्व दृश्य देखने को मिला। प्रसिद्ध आर्य समाजी नेता स्वामी श्रद्धानंद को दिल्ली में मुसलमानों ने जामा मस्जिद में भाषण देने के लिए आमंत्रित किया। इसी तरह महात्मा गाँधी और श्रीमती सरोजिनी नायडू ने बम्बई की मस्जिदों में भाषण दिए। उधर पंजाब में आंदोलन का नेतृत्व डॉ. सैफुद्दीन किचलू और डॉ. सत्यपाल ने संभाला। एक मुसलमान और एक हिन्दू, दोनों को ही अंग्रेज सरकार ने गिरफ्तार कर लिया। अमृतसर और अन्य नगरों में शानदार हड़ताल हुई। शायद उससे पंजाब का बदमिजाज और अक्खड़ लेफ्टिनेंट गवर्नर माइकेल ओ डवायर घबरा गया। गवर्नर ने घबराकर अमृतसर का नियंत्रण सेना को सौंप दिया। 11 अप्रैल की रात्रि को नगर का कार्यभार बिग्रेडियर डायर ने संभाला। नगर में सभाओं और प्रदर्शनों पर प्रतिबंध लगा दिया गया।

वैशाखी का दिन और जलियाँवाला बाग– जब यह सब हो रहा था तो 13 अप्रैल वैशाखी का दिन आ गया। जो पंजाब में फसल पकने का प्रमुख त्योहार तो है ही, सिक्खों के लिए यह बहुत ही पवित्र दिन भी है, क्योंकि इसी दिन सन 1699 ईस्वी में सिक्खों के दसवें गुरु गुरु गोविन्द सिंह जी ने खालसा पंथ की स्थापना की थी। इसलिए इस दिन किसी भी प्रकार का बंधन मानने के लिए सिक्ख तैयार नहीं थे। यह घोषणा की गई कि 13 अप्रैल को दोपहर बाद स्वर्ण मन्दिर के निकट जलियाँवाला बाग में एक सभा होगी। यह सभा प्रशासन का विरोध करने व अपने अधिकारों की रक्षा के लिए होनी थी। जलियाँवाला बाग नगर के मध्य स्थित है। यह चारों ओर से ऊँची इमारतों से घिरा हुआ है। केवल एक ही तंग रास्ता इसके अन्दर जाता है। इस सभा में लगभग 2500 से अधिक स्त्री, पुरुष और बच्चे भाग ले रहे थे।

बिग्रेडियर डायर की क्रूरता– सभा प्रारम्भ हुए अभी थोड़ा ही समय हुआ था कि बिग्रेडियर डायर अपने हथियार बंद सैनिकों के साथ वहाँ पहुँच गया। सभा को तितर–बितर करने के लिए सैनिकों को अंधाधुंध गोलियाँ चलाने का आदेश दिया। एक मात्र तंग रास्ता पहले ही अवरुद्ध कर दिया गया था। प्रत्यक्षदर्शियों ने इसी वीभत्स हत्याकांड का हृदय विदारक वर्णन किया। जैसे ही मशीनगनों से गोलियाँ बरसनी शुरू हुई, शवों के ढेर लग गए। वहाँ बुरी तरह भगदड़ मच गई। सैंकड़ों लोग पैरों तले कुचले गए। स्त्रियों और बच्चों की चीख चिल्लाहट गोलियों की धांय–धांय की आवाज में दब गई। पूरा गोला–बारूद समाप्त होने पर ही गोलियाँ चलनी बंद हुई। मृतकों और घायलों को छोड़कर डायर अपने सैनिकों सहित वहाँ से चला गया। घायलों की देखभाल तो दूर, वहाँ उन्हें कोई पानी देने वाला भी नहीं था। सरकारी आँकड़ों के अनुसार 379 लोग घटनास्थल पर ही मारे गए। हजारों लोग घायल हो गए। जलियाँवाला का कुआँ पूरी तरह भर गया। सैंकड़ों लोग इस कुएँ में दब कर मर गए। गैर सरकारी आँकड़ों के अनुसार मरने वालों की संख्या चार अंकों में थी। बाग की नालियाँ घायलों के खून से लबालब भर गई।

निर्मम हत्याकांड और ब्रिटेन के माथे पर कलंक – इस निर्मम हत्याकांड का समाचार सुनकर दुनिया दहल गई। महाकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने अपनी 'सर' की उपाधि सरकार को वापिस लौटाते हुए कहा कि– 'जिस तरह हमें अपमानित किया गया है, अब उसे देखते हुए सरकार से मिले सम्मान के तमगे हमारे लिए लज्जा का विषय बन गए हैं। इसलिए मैं अपने देशवासियों की खातिर उन सब विशेष सम्मानों से वंचित होना चाहता हूँ क्योंकि मेरे देशवासियों को इतना महत्त्वहीन समझा गया और उनसे ऐसा अपमानजनक व्यवहार किया गया जो मनुष्योचित्त भी नहीं कहा जा सकता।' जलियाँवाला बाग जैसा लोमहर्षक हत्याकाण्ड ब्रिटेन के इतिहास पर जॉन ऑफ आर्क की हत्या के बाद, सबसे बड़ा कलंक है। वास्तव में तभी से भारत में ब्रिटेन के शासन का अंत होना शुरू हो गया था।

जलियाँवाला बाग एक तीर्थ– जलियाँवाला बाग एक तीर्थस्थल है तथा यह राष्ट्रीय एकता का प्रतीक बन गया है। जहाँ सबने मिलजुल कर अपनी मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिए अपना रक्त बहाया था, उन सभी शहीदों को कोटि–कोटि की नमन।

शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर वर्ष मेले।
वतन पे मरने वालों का, यही बाकी निशां होगा।।

प्रधानाचार्य
C/O राज क्लोथ स्टोर, लूणकरणसर, बीकानेर (राज.)
मो: 6350087987

जयंती विशेष

अम्बेडकर के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता

❒ चेनाराम सीरवी

डॉ. अम्बेडकर स्वतंत्र भारत के संविधान के प्रमुख शिल्पी, उच्च क्षमता एवं विश्वसनीयता के सुयोग्य प्रशासन के साथ-साथ एक महान शिक्षाविद् एवं शिक्षा के प्रचारक भी थे। उनका जन्म 14 अप्रैल 1891 को हुआ था। उन्होंने शिक्षा को सामाजिक समरसता व मानवीय गुणों का विकास करने वाला बताया है। उनके शब्दों में समाज में शिक्षा ही समानता ला सकती है। जब मनुष्य शिक्षित हो जाता है, तब उसमें विवेक, सोच व विचार की शक्ति पैदा हो जाती है। शिक्षा सामाजिक परिवर्तन, सामाजिक क्रांति का माध्यम भी बन सकती है। जिससे उसमें अच्छे बुरे का ज्ञान और निर्णय करने की क्षमता आ जाती है। उसमें मानवीय मूल्यों का विकास होता है। शिक्षा से ही समता, स्वतंत्रता, बंधुत्व तथा देश-प्रेम की भावना का जन्म होता है। शिक्षा से ही मनुष्य को अंधविश्वास से मुक्ति, अन्याय, शोषण या दबाव के विरुद्ध संघर्ष करने की काबिलियत प्राप्त होती है। उन्होंने कहा था कि विद्या, प्रज्ञा, करुणा, शील व मित्रता इन पाँच तत्वों के आधार पर प्रत्येक मनुष्य को अपने चरित्र का निर्माण करना चाहिए। उनका कहना है कि शिक्षा रोजगार के साथ-साथ सम्मान प्राप्त करने का भी साधन है। इसलिए अंबेडकर ने पढ़ो और पढ़ाओ की सीख सबको दी।

उन्होंने शिक्षा का मुख्य उद्देश्य पुस्तकीय ज्ञान की अपेक्षा स्वतंत्र चिंतन करते हुए बौद्धिक विकास, समाज का कल्याण करना, वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास करना, खेती, अपनी समस्याओं का समाधान-अनुसंधान पूर्ण ढंग से कर सकें। तथ्य एवं विचारों की तह तक जाकर उसका विश्लेषण कर सकें। बालक का चरित्र व नैतिक मूल्यों का निर्माण, सामाजिक, समानता और लोकतांत्रिक भावना का विकास करते हुए आत्मानुभूति व आत्मोन्नति को माना है।

डॉ. अम्बेडकर को ज्ञान पिपासु, आत्म विश्वासी, बुद्धिमान, स्पष्ट वक्ता, अपने विषय का उच्चतम तथा नवीनतम ज्ञान से युक्त विषय मर्मज्ञ के साथ-साथ राष्ट्र का सारथी मानते हैं। शिक्षक को लोकतांत्रिक व सहानुभूति पूर्ण दृष्टिकोण वाला होना चाहिए। शिक्षक को उदार हृदय वाला व आचरण भेदभावपूर्ण नहीं होना चाहिए। उन्होंने कहा कि शिक्षक को नैतिक गुणों से युक्त और शीलवान होना चाहिए। शिक्षक को विद्यार्थियों के सुप्त गुणों को विकसित करना आना चाहिए। तभी वह अपने छात्रों में नैतिक मूल्यों का विकास व शील का निर्माण कर सकेगा। शिक्षक को बिना किसी पूर्वाग्रहों से ग्रसित हुए निष्पक्षता पूर्वक छात्रों का मूल्यांकन करना चाहिए। शिक्षक को छात्र के साथ आत्मीयता पूर्ण एवं मित्रतापूर्ण व्यवहार रखना चाहिए।

उनकी प्रचलित शिक्षण पद्धति में कोई आस्था नहीं थी। वे शिक्षण का माध्यम मातृभाषा को बनाना चाहते थे। इसके साथ ही लोकतांत्रिक विधि, वाद-विवाद विधि, खोज उपागम, समस्या समाधान विधि, तुलनात्मक विधि, वैज्ञानिक विधि, यथार्थ विधि आदि के साथ उन सभी विधियों के पक्षधर रहे जो शिक्षण को क्रियात्मक व सजीव बना सकें। शिक्षण में सजीवता लाने के लिए बालक की रुचियाँ व संवेगों पर आधारित शिक्षण विधि के पक्ष में थे।

बाबा साहेब अम्बेडकर ने शिक्षा को जीवन का अभिन्न अंग मानकर सामाजिक समरसता लोकतांत्रिक भावना का विकास करने वाले विषयों को पाठ्यक्रम में महत्त्वपूर्ण स्थान दिया। वे पारंपरिक जड़मूलक पाठ्यक्रम के विरोधी थे। उनके विचार से पाठ्यक्रम में व्यक्ति व समाज की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए उसमें बदलाव करना चाहिए। इस हेतु उन्होंने राजनीति शास्त्र, कृषि, विज्ञान, धार्मिक शिक्षा, नैतिक शिक्षा, दर्शनशास्त्र व तर्कशास्त्र जैसे विभिन्न विषयों को पाठ्यक्रम में सम्मिलित करने के ऊपर विशेष बल दिया।

बाबा साहेब विद्यालय को एक सामाजिक संस्था मानते है। वे विद्यालय को समाज का एक लघु रूप मानते थे। इसके द्वारा ही बच्चों में उच्च आदर्श नैतिक मूल्य, स्वतंत्रता, समता और भातृत्व की भावना का निर्माण किया जा सकता है। इसलिए उन्होंने विद्यालय में सामूहिक शिक्षा पद्धति पर बल दिया। समाज विद्यालय का निर्माण बालक के मन को सुसंस्कारित कर समाजोपयोगी बनाने के लिए व अपने नागरिकों को शिक्षा के लिए करता है। वे विद्यालय को ऐसा बनाना चाहते थे जो समाज को एक नया रूप देने में सहायक हो। इसलिए वे परंपरागत विद्यालयों के स्वरूप को स्वीकार नहीं करते क्योंकि उनमें बच्चों को पूर्व निश्चित मान्यताओं, परंपराओं एवं आदर्शों का ज्ञान कराया जाता है, जो कि सामाजिक समरसता व विकास में बाधक है।

बाबा साहेब ने स्त्री शिक्षा पर बल देते हुए कहा कि स्त्रियों को भी पुरुषों के समान शिक्षा दी जानी चाहिए। वे दलित शिक्षा के बड़े हिमायती थे। दलितों और स्त्रियों की शिक्षा के बिना देश के विकास की बात करना दिन में सपने देखने जैसा है। इसलिए उन्होंने स्त्री की शिक्षा पर बल दिया। उन्होंने स्त्रियों को भी स्वतंत्रता तथा समानता का अधिकार देने की वकालत की। स्त्रियों को पुरुषों के समान शिक्षा दी जानी चाहिए। ताकि वे देश के विकास में पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर अपना योगदान दे सकें। वे कहते हैं कि शिक्षा से ही मनुष्य को विवेक का बोध होता है और विवेकशील व्यक्ति ही अच्छे बुरे में अंतर कर पाता है। दलितों के उत्थान के लिए शिक्षा सबसे बड़ा हथियार एवं एक सशक्त धुरी है। वे कहते हैं कि शिक्षा ही एकमात्र ऐसा शस्त्र हैं जो दलित वर्ग में व्याप्त अज्ञानता, दरिद्रता तथा अंधविश्वास से मुक्ति दिला सकता है। शिक्षा ही उनके स्वाभिमान को जगा कर उन्हें अन्याय, शोषण तथा बेगारी के खिलाफ संघर्ष के काबिल बना सकती है। उन्होंने 1945 में पीपुल्स एजुकेशन सोसायटी, सिद्धार्थ कॉलेज, मिलिंद कॉलेज, बहिष्कृत शिक्षण मंडल एवं अनेक छात्रावासों की स्थापना की।

अम्बेडकर का कहना है कि शिक्षा विकासशील देश के आर्थिक एवं सामाजिक आवश्यकताओं के अनुरूप होनी चाहिए। शिक्षा को बदलते समय की माँग व चुनौतियों का मुकाबला करने में सक्षम होना चाहिए। शिक्षा ही सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक क्रांति का मूल आधार है। शिक्षा के व्यापक प्रसार से ही भारत के करोड़ों उत्पीड़ित लोगों को उनके मानवाधिकार व देश के नागरिक की हैसियत से प्राप्त अधिकारों के बारे में जागरूक बनाया जा सकता है। इसलिए उनके द्वारा दिए गए **'शिक्षित बनो, संगठित रहो और संघर्ष करो।'** इस मूल मंत्र में ही उनके मौलिक विचारों का सार है।

असिस्टेंट प्रोफेसर
आरएससीईआरटी. उदयपुर (राज.)
मो: 9983449410

जयन्ती विशेष

भारत रत्न डॉ. अम्बेडकर का शैक्षिक चिंतन

❒ विजय सिंह माली

भारतीय संविधान के शिल्पकार, सामाजिक न्याय के पुरोधा, दलितोद्धारक, महान राष्ट्रनायक, पत्रकारिता के प्रकाश स्तंभ, मूर्धन्य अर्थशास्त्री, राष्ट्र चिंतक, राष्ट्रऋषि, आधुनिक भारत के निर्माता भारत रत्न डॉ. भीमराव अम्बेडकर का जीवन बड़ा व्यापक, विस्तृत और बहुआयामी था। अर्थशास्त्र, श्रमशास्त्र, न्याय शास्त्र, समाज शास्त्र, राजनीति शास्त्र, धर्मशास्त्र तथा सांस्कृतिक विषयों का गहन ज्ञान रखने वाले पूज्य बाबा साहेब अम्बेडकर अनुपम राष्ट्रभक्त, राजनेता, जननायक, ध्येयनिष्ठ जीवन के धनी, मुक्ति के उद्घोषक थे। उन्होंने अपनी सोच में देश को सदैव ऊपर रखा। हर वर्ग के अधिकारों के लिए सतत संघर्ष करने वाले डॉ. अम्बेडकर ने शिक्षा को लेकर देश के सामने ऐसा खाका रखा जो राष्ट्र निर्माण में बड़ी भूमिका निभा सकता है।

बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर का जन्म 14 अप्रैल 1891 को रामजी सकपाल की धर्मपत्नी भीमाबाई की कोख से महू (मध्यप्रदेश) में हुआ। इनका पैतृक गाँव 'आम्बावड़े' रत्नागिरी महाराष्ट्र में था। पिता सेना में थे। मात्र 6 वर्ष की उम्र में इनके सिर से माता का साया उठ गया। 1907 में इन्होंने मेट्रिकुलेशन परीक्षा उत्तीर्ण की। शिक्षक कृष्ण जी केलुस्कर ने इन्हें 'गौतम बुद्ध का जीवन' नामक पुस्तक भेंट की जिसने भीमराव के जीवन की दिशा बदलने में आधार प्रेरणा का कार्य किया। केलुस्करजी ने इनके पिता को भीमराव को उच्च शिक्षा दिलाने के लिए प्रेरित किया। इनके प्रयत्नों से बड़ौदा महाराज सयाजीराव ने भीमराव को प्रतिमाह छात्रवृत्ति देना स्वीकार किया। 2 फरवरी, 1913 को पिता रामजी सकपाल की मृत्यु हो गई। बड़ौदा महाराज सयाजीराव की छात्रवृत्ति पर अम्बेडकर ने 21 जुलाई 1913 को न्यूयॉर्क पहुँचकर कोलंबिया विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया। अम्बेडकर ने अपने शोध प्रबंध 'प्राचीन भारत में वाणिज्य' के लिए 1915 में एम.ए. की उपाधि प्राप्त की। भारत का राष्ट्रीय लाभांश : एक ऐतिहासिक व विश्लेषणात्मक अध्ययन' विषय पर कोलंबिया विश्वविद्यालय से 1916 में पीएचडी उपाधि प्राप्त की। 1916 में ये अमेरिका से लंदन पहुँचे तथा 'ग्रेस इन' में कानून तथा 'लंदन स्कूल ऑफ इकॉनोमिक्स एवं पॉलिटिकल साइंस' में अर्थशास्त्र के अध्ययन के लिए प्रवेश लिया। 1918 ई. में मुम्बई के सिडे होम महाविद्यालय में प्राध्यापक बने। 31 जनवरी 1920 को 'मूकनायक' निकाला। 1920 में अध्ययनार्थ इंग्लैण्ड गए, 1923 में लंदन विश्वविद्यालय से डी.एस.सी. उत्तीर्ण की। 22 जुलाई 1924 को बहिष्कृत हितकारिणी सभा की स्थापना की। 3 अप्रैल 1927 'बहिष्कृत भारत' निकाला। 1927 में महाड़ सत्याग्रह किया।

1928 में साइमन कमीशन के सम्मुख अपनी बात रखी। 1930-31 में हुए तीनों गोलमेज सम्मेलन में भाग लेकर प्रखरता से अपनी बात रखी। 24 सितम्बर 1932 ऐतिहासिक पूना पैक्ट पर हस्ताक्षर किए। 27 मई 1935 को इनकी पत्नी रमाबाई की मृत्यु हो गई। 13 अक्टूबर, 1935 को येवला परिषद् में ऐतिहासिक घोषणा की। 1936 ई. में स्वतंत्र मजदूर दल का गठन किया। 9 दिसम्बर 1946 को संविधान सभा की पहली बैठक में बाबा साहेब ने ऐतिहासिक भाषण दिया। बाबा साहेब संविधान की प्रारूप समिति के अध्यक्ष थे। 25 नवम्बर 1949 के दिन संविधान सभा में बाबा साहेब का अंतिम उद्बोधक भाषण हुआ। इसमें राष्ट्र के लिए प्रेरक तथा भविष्य के लिए दिशाबोधक कई विषयों का संकेत उन्होंने किया है। 11 अक्टूबर, 1951 को इन्होंने केन्द्रीय मंत्रीमंडल से त्यागपत्र दिया। 14 अक्टूबर, 1956 को नागपुर में बौद्धधर्म स्वीकार किया। 6 दिसम्बर 1956 को इनका दिल्ली में देहावसान हो गया। 7 दिसम्बर 1956 को मुम्बई में इनका अंतिम संस्कार किया गया।

उच्च शिक्षा के पहले चरण में इंग्लैण्ड से भारत आने पर बाबा साहेब ने मुम्बई के सिडे होम महाविद्यालय में दो साल अर्थशास्त्र का अध्यापन किया। बाद में एक निजी संस्था में प्रोफेसर ऑफ मर्केन्टाइल के पद पर कार्य किया। सन् 1928 में वे शासकीय विधि महाविद्यालय में प्राध्यापक के पद पर नियुक्त हो गए। आगे चलकर इसी महाविद्यालय में सन् 1935 में प्राचार्य पद पर इनकी नियुक्ति हुई। इस पूरी अवधि में इन्होंने एक सव्यसाची, विद्यार्थी प्रिय प्राध्यापक एवं अनुशासनप्रिय प्राध्यापक के रूप में ख्याति प्राप्त की। अध्यापन, विषय का गहरा ज्ञान, चौतरफा वाचन और अत्यंत व्यामिश्र जीवनानुभव से उनका अध्यापन प्रभावी और वजनदार था। उनकी अध्यापन शैली में संवाद कुशलता, भाषा का गहरा ज्ञान था। अंग्रेजी भाषा पर उनका अधिकार देखते ही बनता था। उनको विद्यार्थियों को विषय क्रमिक पुस्तक पढ़ाने का जैसे अहसास था, वैसे ही उनका चरित्र निर्माण करना है, साथ-साथ मार्गदर्शन करना है, इसका भी ज्ञान था। महाविद्यालय के प्राचार्य के नाते बम्बई विश्वविद्यालय के कामकाज पर उन्होंने अमिट छाप छोड़ी थी।

डॉ. अम्बेडकर के अनुसार पाठशाला एक पवित्र संस्था है। वहाँ छात्रों के मन सुसंस्कृत होते हैं, इसलिए पाठशाला का कारोबार अनुशासन से चलना चाहिए। शिक्षा में अंधाधुंध गड़बड़ी होने पर नई पीढ़ी को नुकसान होगा। बहिष्कृत भारत के एक लेख में वे कहते हैं- 'पाठशाला के छात्रों के मन को समाज हित के लिए मोड़ देना चाहिए। पाठशाला उत्तम नागरिक बनाने का कारखाना है।' बाबा साहेब ने शिक्षा क्षेत्र की आदर्श संस्था का श्री गणेश पीपुल्स एजुकेशन सोसाइटी की स्थापना करके किया। शिक्षा संस्था के संचालन की जो नियमावली उन्होंने तैयार की, उससे शिक्षा संस्था के आदर्श कारोबार तथा व्यवहार के बारे में उनका दृष्टिकोण स्पष्ट होता है। वे शिक्षा संस्थाओं में अध्यापक-प्राध्यापकों की नियुक्ति करते समय जाति-पाति का नहीं उच्च योग्यता का आग्रह करते हैं।

उनका मानना था कि राजनैतिक दलों का भी शिक्षा को कार्य करना चाहिए और उसके लिए शिक्षा संस्थाओं का जाल तैयार करना चाहिए। बाबा साहेब सह शिक्षा के समर्थक थे। उन्होंने कहा है कि स्त्रियों को पुरुषों की बराबरी में एक साथ शिक्षा प्राप्त हो। बाबा साहेब स्वयं अनेक वर्षों तक प्राध्यापक रहे थे, अतः छात्रों से उसका सीधा परिचय था। उनकी मान्यता थी कि शिक्षा से छात्रों का आत्म विश्वास जागना चाहिए। बाबा साहेब मूल्य शिक्षा पर बल देते हुए कहते थे कि विद्या, विनयशील और कड़ा

अनुशासन सब कुछ छात्रों का आत्मसात करना चाहिए। वे कहते थे कि शिक्षा से छात्रों की सामाजिक संवेदनाएँ भी सजग होनी चाहिए। उपाधि की सीमाएँ स्पष्ट करते हुए बाबा साहेब का मानना था कि केवल उपाधि धारण करके कुछ भी साध्य नहीं होगा। छात्रों की कमियों को सही ढंग से जानते हुए बाबा साहेब कहते हैं कि विषय की जड़ तक पहुँचकर सम्यक ज्ञान का मार्मिक आकलन करके उसकी भलीभाँति रचना करने की योग्यता, सर्वसाधारण की बुनियादी अवस्था, युक्तिवाद, निर्दोष मत प्रदर्शन, प्रश्नों के तर्क को कसौटी पर उत्तर खोजना, मन के विचारों को सुस्पष्टता से रखना आदि बातें आजकल छात्रों में कम मात्रा में दिखाई देती हैं। सिद्धार्थ महाविद्यालय के छात्रों को सम्बोधित करते हुए बाबा साहेब ने कहा– 'शिक्षा से आपके मन, दृष्टि, विचार शक्ति, समस्या सुलझाने की ताकत का विकास होना चाहिए।'

स्वयं एक उत्कृष्ट अध्यापक रहे बाबा साहेब की अध्यापक वर्ग से बहुत अपेक्षाएँ थी। उनका कहना था कि शिक्षा एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है और अध्यापक उसका मुख्य आधार है इसलिए शिक्षा और योग्यता उनकी ज्ञान पिपासा, विद्याव्यासंग, आत्मीयता और ध्येयासक्त जीवन दृष्टि इन बातों पर निर्भर है। बाबा साहेब ने अपनी ज्ञान साधना में वाचन–मनन, चिंतन और अध्ययन के त्रिभुज को अपनाया था। इसकी वजह से वे स्वयं एक उत्कृष्ट अध्यापक और व्यापक अर्थ में समाज शिक्षक बन पाए। इस संदर्भ में उनकी भूमिका पहले करनी बाद में कथनी थी। अध्यापक को बहुश्रुत होना आवश्यक है। उसे अपने विचारों का विन्यास अच्छी तरह करना जरूरी है। अपने तथा दूसरों के विचार जांचना जरूरी है तभी वे छात्रों को अध्ययन करने तथा विचार करने के लिए प्रवृत्त कर सकेंगे। उनके मतानुसार अध्यापक तेज बुद्धि का और चयनशील वृत्ति का होना चाहिए। उसमें चिकित्सक वृत्ति व मर्मज्ञता हो। बाबा साहेब की दृष्टि में अध्यापक वर्ग राष्ट्र का सारथी है क्योंकि उसके हाथों में शिक्षा की बागडोर होती है अतः पाठशालाओं में सम्बुद्धि वाले, उदात्त विचारों से भरपूर और विशाल हृदय के अध्यापक होना जरूरी है।

बाबा साहेब के अनुसार शिक्षा निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है, शिक्षा को सच्चे अर्थों में स्वतंत्र होना चाहिए, उस पर व्यक्ति की सत्ता धोखा दायक है। शिक्षा की जिम्मेदारी स्थानिक स्वराज्य संस्थाओं को नहीं सौंपनी चाहिए। उनकी दृष्टि में शिक्षा अन्न के समान है, उसकी आवश्यकता जीवन भर होती है। उनकी स्पष्ट राय थी कि साक्षरता प्रसार विकास और सार्वत्रिक शिक्षा के संदर्भ में पूरी जिम्मेदारी शासन को ही उठानी चाहिए। शिक्षा के क्षेत्र में व्याप्त सामाजिक विषमता के बारे में उन्होंने कहा है कि माध्यमिक और उच्च शिक्षा के स्तर पर पिछड़े वर्ग की अवस्थान अत्यंत दयनीय है। शैक्षिक विषमता की जड़ सही मायने में सामाजिक और आर्थिक विषमता में है। उनका मानना था कि केवल छात्रवृत्ति देने से पिछड़े वर्ग की समस्या नहीं सुलझ पाएगी। छात्रावास, अभ्यासगृह, बालवाड़ी, संस्कार केन्द्र से उनके लिए उचित, प्रेरणादायी सामाजिक वायुमंडल का निर्माण करना आवश्यक है। उनकी मान्यता थी कि शिक्षा से समाज परिवर्तन का मार्ग प्रशस्त होता हैं। परिवर्तन की इस प्रक्रिया को गति देने के लिए समाज मानस में परिवर्तनवादी विचार दृढ़ होना आवश्यक है। व्यापक एवं सार्वत्रिक शिक्षा द्वारा ये विचार समाज में दृढ़ बन सकते हैं। शिक्षा का सामाजिक आशय कभी भी आँखों से ओझल नहीं होना चाहिए। शिक्षा किसी के व्यक्तित्व में निहित सुप्त शक्तियों को मुक्त करती है और मनुष्य को पशुता से मनुष्यत्व की ओर ले जाती है। बाबा साहेब यह कहने से भी नहीं चूकते थे कि शिक्षा का हेतु व्यक्ति का सामाजिकीकरण और नैतिकीकरण करना है क्योंकि सभ्यता और संस्कृति की बुनियाद शिक्षा है।

बाबा साहेब की ज्ञान की संकल्पना बड़ी ही व्यापक है। वे कहते हैं कि विद्या, प्रज्ञा, करुणा, शील और मित्रता इन पंचतत्वों के अनुसार हर एक को अपना चरित्र निर्माण करना चाहिए। वे कहते हैं कि विद्या के साथ शील भी चाहिए। बगैर शील के अगर शिक्षित लोग निर्मित होने लगेंगे तो उनकी शिक्षा से राष्ट्र और समाज का नाश होगा। गौतमबुद्ध की दी हुई ज्ञान यानी प्रकाश वाली परिभाषा बाबा साहेब को भाती है। यह प्रकाश सामाजिक, आर्थिक, राजकीय क्रांति का आधार स्तंभ बनना चाहिए। उनके अनुसार शिक्षा शोषण मुक्ति का महामार्ग है। शिक्षा समाज में पीड़ित, उपेक्षित, शोषितों की दैन्यावस्था मिटाने वाला अचूक उपाय है। शिक्षा समाज के दलित लोगों को आत्म निर्भर बनने का माध्यम है। समता आधारित, मूल्य आधारित और नीतिमान समाज बनाने का संस्कार हम केवल शिक्षा के माध्यम से ही पा सकते है।

बाबा साहेब निरक्षरता के परिणाम के बारे में चिंता व्यक्त करते हुए कहते हैं कि निरक्षरता ने जनता को मानसिक रूप से गुलाम, आर्थिक दृष्टि से दरिद्र, सांस्कृतिक दृष्टि से लूला–लंगड़ा और सामाजिक दृष्टि से पिछड़ा बना दिया। इस वजह से समाज विदेशी आक्रामकों के विरुद्ध संघर्ष करने की ताकत खो बैठा है। बाबा साहेब ने शिक्षित बनो, संगठित हो और संघर्ष करो का मूलमंत्र समाज को दिया। इस मूलमंत्र में प्रथम स्थान शिक्षा को है। बाबा साहेब का मत था कि शिक्षा और समाज का एक अटूट रिश्ता होता है क्योंकि शिक्षा ही समाज के सांस्कृतिक उन्नयन का आधार होती है। समताधिष्ठित समाज निर्मित करने के लिए शिक्षा जैसा कोई दूसरा साधन नहीं है। समता के लिए सबको शिक्षा मिलना जरूरी है। बाबा साहेब कहते हैं कि सामाजिक समानता और स्वतंत्रता की रक्षा के लिए आवश्यक होने वाली शक्ति शिक्षा है। वे कहते हैं कि व्यक्ति की स्वतंत्रता को अबाधित रखने और उसकी रक्षा के लिए काम आने वाली ताकत शिक्षा से ही प्राप्त हो सकती है।

यह सही है कि डॉ. अम्बेडकर ने अपने शिक्षा विषयक विचार क्रमबद्ध रूप से ग्रंथित नहीं किए। उनकी संपादित पत्रिकाएँ, उनके द्वारा स्थापित सामाजिक और संस्थाओं के ध्येय एवं नीतियों से, शासकीय समितियों, आयोगों के सामने दिए गए साक्ष्य, प्रस्तुत किए गए पत्र–प्रपत्र के माध्यम से शैक्षिक चिंतन सामने आता है। अब समय आ गया है कि बाबा साहेब के शैक्षिक चिंतन के विचार–सागर का गहन मंथन कर उनके विचार रत्नों से इस राष्ट्र को समृद्ध किया जाए। बाबा साहेब के विचार सदैव प्रासंगिक हैं और रहेंगे। राष्ट्र निर्माण में उनके विचारों के अनुसरण को एक आंदोलन का रूप दिए जाने की आवश्यकता है। उनके शैक्षिक चिंतन के आलोक में नई शिक्षा नीति 2020 का क्रियान्वयन कर हम शिक्षा व्यवस्था का कायाकल्प करते हुए भारत का भाग्योदय कर सकते हैं।

प्रधानाचार्य
श्री धनराज बदामियारा बालिका उच्च माध्यमिक
विद्यालय सादड़ी, पाली (राज.)
मो: 9829285914

रामनवमी विशेष

जन जन के मन में बसे हैं राम

❒ ओमप्रकाश सारस्वत

हमारे लोकजीवन में राम नाम सर्वाधिक परिचित एवं सर्वाधिक उच्चारित होने वाला शब्द है। 'राम-राम' बोलना अभिवादन अभिव्यक्ति का संकेत है। 'राम-राम', 'हे राम', 'अरे राम' आदि। अभिवादन एवं मनोभाव को अत्यंत संक्षेप में कहकर समझाने के शब्द युग्म हैं। इन शब्दों का उच्चारण करते समय सामान्यतः हमारे मानस पटल पर दशरथ पुत्र मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम की छवि उभर आती है। इसे थोड़ा उदार एवं व्यापक दृष्टिकोण से समझने की आवश्यकता है। राम-राम बोलना नमस्ते, नमस्कार आदि बोलने की तरह का ही एक अभिवादन प्रतीक है। यह आवश्यक नहीं कि सभी लोग दशरथ पुत्र भगवान राम के जीवन चरित्र से परिचित हो, लेकिन अभिवादन के लिए वे भी राम-राम बोलते हैं। जैसे नमस्ते, नमस्कार, गुड मॉर्निंग बोलते समय किसी व्यक्ति के जीवन चरित्र की छवि हमारे भीतर नहीं बनती, वैसे ही 'राम-राम' बोलना अथवा सुनना उनके लिए यह एक आदर्श प्यारा सा अभिवादन ही रहता है।

राम से पहले था राम-रामः- एक पौराणिक उपाख्यान के अनुसार जब लक्ष्मण के प्राण बचाने के लिए हनुमान संजीवनी बूटी लेकर युद्ध स्थल के लिए आकाश मार्ग से जा रहे थे तो भरत ने कोई आकाशीय असुर समझकर तीर चला दिया। हनुमान नीचे आ गए। वास्तविक घटना का पता लगने पर भरत उन्हें वापिस आकाश में पहुँचाते हैं। ऐसे अद्‌भुत तीर होते थे उनके पास। हनुमान से राम के हाल जानकर सुनने वाले भावातिरेक हो गए। वे हनुमान के साथ राम के लिए राम-राम भिजवाते हैं। एक बहुत सुन्दर पद आता है-

म्हारे राम जी से राम-राम,
कहियो, कहियो रे हनुमानजी।।

जरा विचार कीजिए। राम जी को 'राम-राम' भिजवा रहे हैं इसका अर्थ है कि दशरथ पुत्र राम से पहले भी राम-राम अभिवादन तो था। तभी तो दशरथ पुत्र श्री राम को अयोध्या के लोग राम-राम भिजवा रहे हैं। 'राम-राम' जीवन मूल्यों का बोध करवाता है। हमारे ग्राम्य जीवन में अक्सर लोग अपने जानकारों को राम-राम भिजवाते सुने जाते हैं। भाई साब, फलां को हमारा राम-राम दे देना। इतनी श्रद्धा एवं सम्मान है इस प्रकार भिजवाए गए राम-राम में कि वह

व्यक्ति सम्बन्धित को जाकर जब तक 'राम-राम', राम-राम नहीं दे देता, तब तक चैन से नहीं बैठता। सुनने या कि पाने वाला गजब उत्साह एवं आनन्द से 'राम-राम' स्वीकार कर दो बार बोलता- 'राम-राम', 'राम-राम।' बहरहाल रामनवमी के प्रसंग में तो दशरथनन्दन भगवान राम के उत्तम एवं आदर्श चरित्र की ही विवेचना की जाती है। राम-नाम सनातन काल से ईश्वर का परिचायक रहा है।

जब-जब होता नाश धर्म काः- 'प्रकृति सर्वोपरी है- 'Nature is the Supreme' यह एक सिद्धांत है। प्रकृति के बनाए नियमों एवं व्यवस्थाओं की जब अनदेखी होती है, तब यह अपना प्रभाव दिखाती है। प्रकृति के नियमानुसार जब पृथ्वी पर अधर्म बढ़ जाता है, बुरी और दानवी शक्तियाँ अत्याचार करने लगती हैं, तब पृथ्वी पर ईश्वर का अवतार होता है। गीता में स्वयं योगेश्वर भगवान श्री कृष्ण कहते हैं-

यदा-यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।
परिनाणायं साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे-युगे।।

(गीता 4/7-8)

(हे भारत! जब-जब धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती है, तब-तब ही मैं अपने रूप को रचता हूँ अर्थात प्रकट करता हूँ। क्योंकि साधु-पुरुषों का उद्धार करने के लिए और दूषित कर्म करने वालों का नाश करने के लिए तथा धर्म की पुनःस्थापना करने के लिए मैं युग-युग में प्रकट होता हूँ।)

त्रेतायुग में दशानन रावण एवं अन्यान्य राक्षसों से ग्रस्त मानवता को इन आसुरी ताकतों से राम ने मुक्ति दिलाई। राम की मातृ-पितृ भक्ति, गुरुजन के प्रति अपार आदर, अनुशासन, धैर्य, विनम्रता सब सराहनीय हैं। वे गुणों के भण्डार हैं। ईश्वर होकर भी साधारण से साधारण व्यक्ति जैसा व्यवहार करते हैं। मर्यादाओं की पालना करने में राम का कोई सानी नहीं है। इसीलिए उन्हें केवल पुरुष ही नहीं अपितु पुरुषोत्तम (पुरुषों में उत्तम) कहा जाता है। सदैव मर्यादाओं में रहने के कारण वे मर्यादा पुरुषोत्तम राम कहलाते हैं।

कुशल प्रबंधक आदर्श मित्र हैं रामः- माता कैकई द्वारा राजा दशरथ से वर में राम को वनवास देना माँगने पर पिता के दुःख से ऊपर वचन पालन (रघुकुल रीति सदा चली आई/ प्राण जाए पर वचन न जाई।) का अनुरोध पिता से कर स्थितप्रज्ञ अडिग पुरुष की तरह वन में चले जाने की बात सब जगह कही जाती है मगर राम का प्रबंधन एवं मित्रों के साथ प्रगाढ़ता सभी के लिए आदर्श है। केवट, सुग्रीव, निषादराज, विभीषण, हनुमान सभी मित्रों के साथ मित्रता निभाई राम ने। मित्रों को उचित स्थान देना तथा उनकी प्राण रक्षा के लिए स्वयं संकट स्वीकार कर लेना हमें राम सिखाते हैं। प्रबंधक को चाहिए कि वह सबको साथ लेकर चले तथा प्रत्येक को उसकी योग्यता एवं क्षमता के अनुसार कार्य सौंपे। इतना ही नहीं, सफलता मिलने पर उन्हें इसका श्रेय दे। राम की सेना में छोटे से छोटे वानर से लेकर बाली-हनुमान सबके लिए रोल निर्धारित थे। सबको लगता था कि वह राम का सबसे प्रिय है। जीत होने पर वे जीत का श्रेय अपने इन्हीं अनुचरों को देते हैं। लंका में विभीषण का राज तिलक करने के लिए लक्ष्मण को भेजते हैं। उन्हें पता है कि राजतिलक के समय राम की जय बोली जाएगी। अतः वे

लक्ष्मण को भेजकर उस आनंदोत्सव का साक्षी बनने का गौरव प्रदान करते हैं। स्वयं प्रशंसा से दूर रहते हैं।

भाव भक्ति के भूखे हैं राम:– राम अतुलित बल के धाम हैं। परम प्रतापी हैं पल में सब संकटों का नाश करने देने वाले हैं। इन सबसे ऊपर वे अपने भक्तों के दास हैं वे सच्चे भाव व भक्ति के भूखे हैं। शबरी के झूठे बेर आनन्दपूर्वक खाने वाले राम जाति, धर्म व सम्प्रदाय से ऊपर हैं। लंका से अयोध्या लौटकर आने तथा वहाँ राजतिलक के समय मल्लाह को याद कर उसे बुलाकर उचित मान देना, राम की निर्धन अभावग्रस्त व पिछड़ों के प्रति सच्चे प्रेम का परिचायक है। राम का धैर्य अद्‌भुत है। वे अहंकार मुक्त हैं। लंका में जाने के लिए एक बाण से समुद्र का पानी सोख लेने की योग्यता रखने वाले राम समाधिस्थ होकर समुद्र से रास्ता देने की प्रार्थना करते हैं। लक्ष्मण सहित अन्य सेनापतियों व सैनिकों को यह ठीक नहीं लगता लेकिन राम को तो आदर्श बताना है। अतः वे स्वयं को सामान्य से सामान्य दीन–हीन व्यक्ति करार देकर रास्ता देने के लिए समुद्र की पूजा अर्चना–प्रार्थना करते हैं। राम वचन के पक्के हैं। वे धर्म में मूर्त रूप हैं। वे पर हितैषी, लोक मंगल की भावना के साक्षात स्वभाव हैं।

रोमांचकारी है राम का चरित्र: स्थितप्रज्ञ राम का चरित्र बड़ा उज्ज्वल व रोमांचकारी सुबह राजतिलक होने की बात से वे हर्ष अतिरेक नहीं होते हैं तो वनवास की आज्ञा सुनकर सहजता से उसे स्वीकार कर लेते हैं। स्वयं तरंगिणी (7/21) में राम के चरित्र पर रोशनी डालते हुए भानुदत्त ने लिखा है, 'जिसने पुराने वस्त्र की भाँति राज्य का त्याग कर दिया, एक बूँद के समान समुद्र का मंथन कर दिया, बाण की नोंक से बूढ़े कबूतर के समान रावण का वध कर दिया और अलौकिक ऐश्वर्य से युक्त लंका को एक अंगूठी की तरह विभीषण को भेंट कर दिया, ऐसे राम के चरित्र को जानकर किसे रोमांच नहीं होगा? राम के चरित्र से अद्‌भुत उपयोगी शिक्षाएँ मिलती हैं।

गुणों के आगार हैं भगवान राम:– राम के गुणों का गागर में सागर की मानिंद अत्यंत संक्षेप में बखान करते हुए एक श्लोक आता है–

दानं करे पदातलेन तीर्थं बाहौ जयश्रीर्वचने च सत्यम्।

लक्ष्मी प्रसीदे प्रतिधे च मृत्युरेतानि रामस्य निसर्गजानि।।

लक्ष्मण सूरि (पौलस्त्य वध)

अर्थात हाथ में दान, पैरों में तीर्थ यात्रा, भुजाओं में विजयश्री, वचन में सत्यता, प्रसाद में लक्ष्मी, संघर्ष यानी मुँह में शत्रु की मृत्यु ये श्रीराम के स्वाभाविक गुण हैं। राम में इन्हीं उत्तम गुणों से प्रेरित होकर साकेत में मैथिलीशरण गुप्त ने लिखा है–

राम, तुम्हारा वृत्त स्वयं ही काव्य है,
कोई कवि बन जाए, सहज सम्भाव्य है।।

ज्ञान की महत्ता सर्वोपरि:– राम बड़े गुणग्राही हैं। ज्ञान जहाँ भी है, उसे विनम्रतापूर्वक शिष्य भाव से ग्रहण कर लेने की सीख राम के चरित्र से मिलती है। मृत्यु शैया पर पड़े रावण से ज्ञान प्राप्त करने के लिए राम अनुज लक्ष्मण को भेजते हैं। वे जानते हैं कि रावण परम ज्ञानी है। इसका ज्ञान इसकी मृत्यु के साथ खाक न हो जाए बल्कि यहाँ बना रहे, इसी उद्देश्य से लक्ष्मण को भेजते हैं लक्ष्मण जब रावण के सिरहाने जाकर खड़े होते हैं और रावण उन्हें अनदेखा करते हैं तो अपमानित सा महसूस कर वे अग्रज राम के पास आकर बताते हैं। इस पर राम ने बड़ी पते की बात कही, लक्ष्मण! तुम उनके पैरों की तरफ खड़े होकर प्रणाम करते हुए अपना मंतव्य बताओ। ज्ञान शिष्य बनकर सीखा जा सकता है। लक्ष्मण ने ऐसा ही किया और अपने उद्देश्य प्राप्ति में सफल रहा।

विश्व में कोई 265 प्रकार की टीकाएँ रामचरित्र पर उपलब्ध हैं। इनमें एक रामायण महर्षि कुम्बन की रामायण है। इसमें एक प्रसंग है कि लंका विजय के लिए श्रीरामेश्वरम में शिव लिंग की स्थापना के लिए आचार्य के रूप में राम ने रावण को बुलाया। इसमें रावण की उच्चता भी प्रकट होती है। वह पूजन सामग्री लेकर आता है। राम की अर्द्धांगिनी सीता को भी भिजवाया है। पूजन के पश्चात राम और सीता आचार्य रावण को प्रणाम करते हैं तो रावण उन्हें विजयी भव तथा सीता को अखण्ड सौभाग्यवती होने का वरदान देते हैं। राम का ज्ञान के प्रति लगाव एवं सम्मान शिक्षकों के लिए बहुत प्रेरणादायी है।

हनुमान के लिए अग्रणीय स्थान:– हनुमान राम के प्रमुख सेवक एवं संकट मोचक हैं। राम के बिना हनुमान और हनुमान के बिना राम की कल्पना नहीं की जा सकती। लंका जाकर सीता का पता लगाने से लेकर वापिस अयोध्या आने तक आई अनेक विपदाओं से मुक्ति दिलाने वाले हनुमान ही थे। शिक्षकों की तुलना हनुमान से करते हुए शिक्षा विभाग के निदेशक रहे शिक्षाविद् डॉ. ललित के. पंवार ने एक जगह लिखा है, 'भगवान राम के महत्त्वपूर्ण काज जिस तरह हनुमान जी के बगैर पूरे नहीं होते, उसी तरह शासन एवं समाज का कोई भी महत्त्वपूर्ण काज गुरुजन की आशीष और सक्रिय सहयोग के बगैर पूरा होना असंभव है। डॉ. ललित के. पंवार के मन में शिक्षकों के प्रति उत्तम भाव एवं आपस के किस्से आज भी लोगों की जबान पर रहते हैं। गुरुजन को इन उत्तम विचारों के अनुरूप स्वयं को सिद्ध कर दिखाना है। चुनाव, जनगणना से लेकर ऐसा शायद ही कोई कार्य होगा जिसे पूरा कर दिखाने में प्रशासन शिक्षकों का सहयोग नहीं लेता।

रामनवमी का पौराणिक महत्त्व:– रामनवमी की भारतीय जनमानस में बहुत मान्यता है। इसी दिन मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का जन्म हुआ था। इस दिन भगवान राम, सीता एवं शक्ति स्वरूपा दुर्गा माता की पूजा होती है। ऐसी मान्यता है कि श्रीराम ने लंका विजय प्राप्त करने के लिए जगदम्बे माँ दुर्गा की पूजा की थी। यह भी मान्यता है कि गोस्वामी तुलसीदासजी ने श्री रामनवमी के दिन से श्री रामचरितमानस ग्रंथ को लिखना शुरू किया था। रामनवमी का दिन परम पावन शुभ माना जाता है। अबूझ शुभ मुहूर्त्त होने के कारण नई दुकानों, प्रतिष्ठानों और गृह प्रवेश जैसे मांगलिक कार्य किए जाते हैं। नौ का अंक पूर्णांक और नवमी तिथि शुभ तिथि होने के कारण इस दिन का अपना अलग ही महत्त्व है।

राम का चरित्र और शिक्षक:– राम के विमल चरित्र एवं व्यवहार से शिक्षकों को बहुविध शिक्षाएँ मिलती हैं। राम अपने कर्त्तव्य के प्रति पूर्ण जागरूक हैं। वे विनम्र हैं आज्ञा पालन और अनुशासन उनके व्यक्तित्व में चार चाँद लगाता है। राष्ट्र, समाज और परिवार के प्रति कर्त्तव्यों को वह भली भाँति समझते हैं। माता–पिता, भाई–बंधु, पति–पत्नी, सखा–सेवक सबके साथ उचित सम्बन्धों का ज्वलंत उदाहरण राम का जीवन कर्म है। राम का कथा वृत्तान्त प्रबंध शास्त्र के लिए नूतन सिद्धांतों के द्वार खोलने जैसा है। एक एग्जूकेटिव (CEO)

कैसा हो, इसे राम लिखते हैं। अल्लामा इकबाल का एक शेर है जिसमें राम को सम्पूर्ण देश का मुख्य एग्जूकेटिव कहकर मान दिया गया है। इकबाल ने लिखा हैः-

है राम के वजूद पे हिन्दोस्तां को नाज।
अहले-ए- नज़र समझते हैं इस को
इमाम-ए-हिन्द।।

शिक्षा एक ऐसा महत्त्वपूर्ण सामाजिक निवेश है। जिसका प्रभाव धीरे-धीरे दिखाई देता है। शिक्षा के दूत शिक्षक हैं। उन्हें राम की तरह स्वाध्यायी, अनुशासित, विनम्र एवं विषम परिस्थितियों में सहज बना रहकर उनका मुकाबला करने की सीख लेनी चाहिए। विभागीय अधिकारियों, संस्थाप्रधान, साथी शिक्षकों, अभिभावकों, दानदाता भामाशाहों और छात्र-छात्राओं को इनसे बहुत अपेक्षाएँ होती हैं। शिक्षक को समर्पण एवं प्रतिबद्धतापूर्वक अपने सभी उत्तरदायित्वों का निर्वहन करना चाहिए। शिक्षकों में अपने व्यवसाय के प्रति प्रेम एवं आदर भाव होना चाहिए।

राम के संदर्भ में राम राज्य की चर्चा भी होती रहती है। रामराज्य राजा की प्रजा भक्ति एवं प्रजा के प्रति मंगल भाव से आ सकता है। राम राज्य में सब कुशल मंगल उत्तम ही होता है। राम राज्य की कल्पना करते हुए महर्षि वाल्मीकि (रामायण, उत्तरकाण्ड, 99/13-14) ने लिखा है, 'श्रीराम के शासन करते समय मेघ समय पर वर्षा करते थे। सदा सुकाल रहता था। सम्पूर्ण दिशाएँ प्रसन्न थी। नगर एवं जनपद हष्ट-पुष्ट मनुष्यों से भरे रहते थे। किसी की अकाल मृत्यु नहीं होती थी। प्राणियों को कोई रोग नहीं सताता था और कहीं कोई उपद्रव खड़ा नहीं होता था। राम का मंगल चरित्र सम्पूर्ण मानवता के हित में एक परम हितकारी दृष्टान्त है। श्रीरामचरित मानस सरल व लोक समझावन भाषा में रामचरित का बखान करती है। राम के समग्र जीवन दर्शन से यह ध्वनित होता है कि सामान्य इंसान के रूप में जन्म लेकर भी अपने उत्तम कर्मों के बल पर इंसान भगवान बन सकता है। इति शुभम!

संयुक्त निदेशक (सेवानिवृत्त)
ए-विनायक लोक, बाबा रामदेव जी रोड, गंगाशहर,
बीकानेर (राज.)-334401
मो: 9414060038

परीक्षा : सफलता के नए द्वार

❒ नव प्रभात दुबे

वर्ष भर कोरोना महामारी से जूझते हुए हमने अपनी जीवन नैया को संभाले रखा है। अब पुनः परीक्षाओं का दौर प्रारम्भ हो चुका है। जेईई मेन्स जैसी कठिनतम परीक्षाएँ प्रारम्भ हो चुकी हैं। बोर्ड परीक्षाओं का दौर अब प्रारम्भ होने वाला है। अल्प समय विद्यालयों का खुलना, ऑनलाइन पढ़ाई करना, कोरोना महामारी से संक्रमण का डर, ऐसे माहौल में विद्यार्थी का तनाव में आना स्वाभाविक है। लेकिन परीक्षा है-तो तनाव कैसा? मनुष्य जीवन पग-पग पर चुनौतियों से भरा है, कहा जाता है कि चुनौतियाँ सफलता के नए द्वार खोलती हैं।

मानव जीवन सुख-दुःख, हार-जीत, मिलन-विरह, जीवन-मृत्यु, सफलता-विफलता के रंगों से सुसज्जित है। किसी एक के अभाव में दूसरा पहलू अपना अस्तित्व खो देता है।

सुमित्रानंदन पंत ने भी लिखा है-

सुख-दुःख के इस मधुर मिलन से
यह जीवन हो परिपूरन।
फिर घन में ओझल हो शशि
फिर शशि से ओझल हो घन।

चार्ल्स डार्विन ने Survival of the Fittest के सिद्धांत का प्रतिपादन किया है। प्रकृति श्रेष्ठतम का वरण करती है। संघर्ष में जो विजयी होता है उसे ही जीने का अधिकार होता है। संघर्ष ही जीवन है। प्रतिकूल समय में संघर्ष करने के लिए किसी शायर ने क्या खूब कहा है-

मेहनत से मिल गया जो सफीने के बीच था
दरिया-ए-इत्र मेरे पसीने के बीच था

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान ने इस वर्ष अपने पाठ्यक्रम में कटौती की है तथा प्रश्न-पत्र के प्रारूप में भी बदलाव किया है। जिसका फायदा निश्चित रूप से विद्यार्थी को मिलेगा। सर्दी का दौर भी अब खत्म हो चुका है। सूर्यास्त भी देर से होता है। सूर्योदय जल्दी होता है। विद्यार्थी को अब समय भी अधिक मिलेगा।

विद्यार्थी को परीक्षा में निम्न बातों का ध्यान रखना होगा-

1. मन के हारे हार है, मन के जीते जीत। के सिद्धांत पर अमल कर आत्मविश्वास को मजबूत करना होगा।
2. अध्ययन की एक निश्चिय कार्य योजना बनाकर उस पर अमल करना होगा।
3. ऊँचा लक्ष्य निर्धारित कर परिणाम की चिंता किए बिना लगातार अध्ययन करना होगा।
4. अधिक पानी पीना, अधिक नहीं खाना, पर्याप्त नींद लेना अर्थात देर रात तक नहीं जागना।
5. पूरे समय अध्ययन ही न कर थोड़े समय घर के अन्य कार्य को भी दें।
6. प्रवेश-पत्र प्राप्त कर उसकी एक प्रतिलिपी भी बनाकर संभाल कर रखें।
7. समय विभाग चक्र की प्रति को अपने कक्ष की दीवार पर चिपका लें।
8. इस बार निबंधात्मक प्रश्नों में दो आंतरिक विकल्प आएँगे। इन प्रश्नों में उलझन की स्थिति रहेगी तो ऐसी स्थिति में सोच समझ कर उत्तर पुस्तिका के पीछे के पृष्ठों में बिन्दुवार हल लिखकर अंदाजा लगाएँगे कि किस विकल्प में बेहतर कर सकते हैं, सही प्रश्न का चयन करें।
9. किसी भी प्रश्न को नहीं छोड़े। प्रश्न को ध्यान से दो बार पढ़े और उससे सम्बन्धित जो भी आपको आता हो लिखे।
10. परीक्षा केन्द्र पर आधा घंटा पूर्व पहुँचें।
11. उत्तर पुस्तिका में प्रश्नों का सही क्रम लिखे।

निराशा के अंधकार में उजाले की किरण लेकर आती श्री सोहन लाल द्विवेदी की ये पंक्तियाँ-

लहरों से डरकर नौका पार नही होती
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती
नन्हीं चींटी जब दाना लेकर चलती है
चढ़ती दीवारों पर, सौ बार फिसलती है
मन का विश्वास रगों में साहस भरता है
चढ़कर गिरना, गिरकर चढ़ना न अखरता है
आखिर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती

इसीलिए परिणाम की चिंता किए बिना विद्यार्थियों को अपना श्रेष्ठ प्रदर्शन करना है। अग्रिम शुभकामनाओं सहित सभी विद्यार्थियों को समर्पित!

व्याख्याता (इतिहास)
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बड़ौदिया,
बूँदी (राज.)
मो: 9414745053

पर्यावरण और स्वास्थ्य

संतुलित आहार का आधार - पोषण वाटिका

❐ कमलेश शर्मा

पोषण वाटिका या रसोईघर बाग या फिर गृह वाटिका उस वाटिका को कहा जाता है, जो घर के अगल-बगल में घर के आँगन में ऐसी खुली जगह पर होती है, जहाँ पारिवारिक श्रम से परिवार के इस्तेमाल हेतु विभिन्न मौसमों में मौसमी फल तथा विभिन्न सब्जियाँ उगाई जाती हैं। अपने हाथों लगाए गए पेड़-पौधों को बढ़ता और फलता-फूलता देख मन-मस्तिष्क प्रफुल्लित हो उठता है। अपने घर में उगाई गई सब्जियाँ आपके कठिन परिश्रम का ही फल हैं जो सभी हानिकारक रसायनों से मुक्त, शुद्ध और स्वादिष्ट होती हैं। भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय पोषण अभियान के अंतर्गत महिलाओं और बच्चों के पोषण स्तर में सुधार हेतु सितम्बर माह को राष्ट्रीय पोषण माह के रूप में मनाने का आह्वान किया गया था। इसका मुख्य उद्देश्य जन आंदोलन और जनभागीदारी से कुपोषण को मिटाना है। इस वर्ष पोषण माह 2020 दो मुख्य उद्देश्यों पर आधारित था- पहला उद्देश्य-अति कुपोषित बच्चों को चिह्नित कर उनकी मॉनिटरिंग करना तथा दूसरा उद्देश्य-किचन गार्डन को बढ़ावा देने के लिए पौधरोपण अभियान संचालित करना। इसके अंतर्गत देश के आँगनबाड़ी कार्यकर्ताओं को पोषण थाली, पोषण वाटिका की महत्ता एवं स्थापना हेतु जागरूक करने के उद्देश्य से 17 सितम्बर को पोषण दिवस का आयोजन किया गया।

स्वस्थ मस्तिष्क में ही स्वस्थ विचारों का निवास होता है। बच्चों को बेहतर संतुलित आहार मिलेगा तो मन-मस्तिष्क में पढ़ने की ललक भी पैदा होगी। इसी को ध्यान में रखते हुए केन्द्र एवं राज्य सरकार के प्रयासों से विद्यालयों में पोषण वाटिका विकसित की जा रही है जिससे प्रतिदिन मिड-डे-मील के भोजन के साथ बच्चों को ताजा एवं पोषक सब्जियाँ परोसी जा सके।

पोषण वाटिका का उद्देश्य : पोषण वाटिका का उद्देश्य रासायनिक खादों एवं कीटनाशक मुक्त ताजी सब्जियाँ उगा कर घर की फल एवं सब्जियों की दैनिक जरूरतों को पूरा करना है। आजकल बाजार में बिकने वाली चमकदार फल सब्जियों को रासायनिक उर्वरक प्रयोग कर के उगाया जाता है। रसायनों का इस्तेमाल खरपतवार, कीड़े व बीमारियों को रोकने के लिए किया जाता है। इन रासायनिक दवाओं का कुछ अंश फल, सब्जी में बाद तक बना रहता है, जिसके कारण उन्हें इस्तेमाल करने वालों में बीमारियाँ से लड़ने की ताकत कम होती जा रही है। इसके अलावा फलों व सब्जियों के स्वाद में अंतर आ जाता है, इसलिए हमें अपने घर के आँगन या आसपास की खाली जगह में छोटी-छोटी क्यारियाँ बनाकर जैविक खादों का इस्तेमाल करके रसायन रहित फल-सब्जियों को उगाना चाहिए। कुछ लोगों को बागवानी करने का शौक भी होता है जिन्हें प्रकृति को करीब से अनुभव करने में आनंद की अनुभूति होती है। कुछ लोग ऐसे भी है जो ऐसी सब्जियाँ जो बाजार में उपलब्ध नहीं हैं जैसे ब्रोकली, छप्पन कद्दू, लेटुस, रेड कैबेज आदि उन्हें अपनी बगियाँ में उगाना चाहते हैं।

पोषण वाटिका का स्वरूप : पोषण वाटिका का स्वरूप व्यक्ति विशेष के जीवन स्तर, रुचि, आवश्यकता एवं स्थान की उपलब्धता पर निर्भर करता है। पोषण वाटिका में पोषक सब्जियों को प्राथमिकता दी जाती है। इन्हें प्रायः मकान के पिछवाड़े अथवा बगल की खाली जमीन पर उगाया जाता है लेकिन जगह के अभाव में इसे किसी भी ऐसे स्थान पर उगाया जा सकता है जहाँ सूर्य की रोशनी पर्याप्त पहुँचती है एवं जहाँ पानी पर्याप्त मात्रा में मिल सके, जैसे नलकूप या कुएँ का पानी, स्नान का पानी, रसोईघर में इस्तेमाल किया गया पानी पोषण वाटिका तक पहुँच सके। पोषण वाटिका का चुनाव करते समय यह अवश्य ध्यान देना चाहिए कि पास में कोई बड़ा मकान या बड़ा वृक्ष न हो ताकि पोषण वाटिका को पूरी धूप मिलती रहे। इस प्रकार की विशिष्ट बागवानी का मुख्य उद्देश्य वर्ष पर्यन्त भिन्न-भिन्न प्रकार की ताजी एवं पौष्टिक सब्जियाँ उगाना है, इसलिए फसल चक्र और उनका नियोजन इसमें बहुत जरूरी हो जाता है।

पोषण वाटिका का आकार : पोषण वाटिका का आकार अलग-अलग परिस्थितियाँ जैसे कि जगह की उपलब्धता, परिवार में सदस्यों की संख्या, रुचि और समय की उपलब्धता पर निर्भर करता है। लगातार फसल चक्र, सघन बागवानी आदि फसल खेती को अपनाते हुए एक औसत परिवार, जिसमें कुल 5 सदस्य हों, ऐसे परिवार के लिए औसतन 250 वर्ग मीटर की जमीन काफी है। इसी से अधिकतम पैदावार लेकर पूरे साल अपने परिवार के लिए फल-सब्जियों की प्राप्ति की जा सकती है।

पोषण वाटिका की बनावट : आदर्श पोषण वाटिका के लिए राजस्थान, उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा और दिल्ली के आसपास के क्षेत्रों में उपलब्ध 250 वर्ग मीटर क्षेत्र में बहुवर्षीय पौधों को वाटिका के उस तरफ लगाना चाहिए, जिससे उन पौधों की अन्य दूसरें पौधों पर छाया न पड़ सके। साथ ही इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि ये पौधे एकवर्षीय सब्जियों के फसल चक्र और उनके पोषक तत्वों की मात्रा में बाधा न डाल सकें। पूरे क्षेत्र को 8-10 वर्ग मीटर की 15 क्यारियों में विभाजित कर लें और इन बातों का ध्यान रखें-

- वाटिका के चारों तरफ बाड़ या फेसिंग का प्रयोग करना चाहिए, जिसमें तीन तरफ गर्मी व वर्षा के समय कद्दूवर्गीय पौधों को चढ़ाना चाहिए तथा बची हुई चौथी तरफ सेम लगानी चाहिए।
- फसल चक्र व सघन फसल पद्धति को अपनाना चाहिए।
- 2 क्यारियों के बीच की मेड़ों पर जड़ों वाली सब्जियों को उगाना चाहिए।
- रास्ते के एक तरफ टमाटर तथा दूसरी तरफ चौलाई या दूसरी पत्ती वाली सब्जी उगानी चाहिए।

पोषण वाटिका के मुख्य तीन लाभ हैं:-

1. स्वास्थ्य : पोषण वाटिका से परिवार, पड़ौसियों एवं रिश्तेदारों को तरोताजा हवा, प्रोटीन, खनिज एवं विटामिनों से युक्त फल, फूल व सब्जियाँ प्राप्त होती हैं। साथ ही परिवार के प्रत्येक सदस्य द्वारा बगिया में कार्य करने से शारीरिक व्यायाम भी होता है, जिससे परिवार के सदस्य स्वस्थ एवं प्रसन्न रहते हैं।

2. समृद्धि : प्रत्येक छोटे परिवार में औसतन 100 रुपए की सब्जी प्रति दिन बाजार से खरीदी जाती है। इस प्रकार प्रति माह हम 3,000 रुपए की बचत कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त यदि फलदार पौधे जैसे निम्बू, पपीता, आम, अमरूद आदि भी बगिया में लगे हों तो फलों हेतु खर्च होने वाले बजट की बचत की जा सकती है।

3. बुद्धिमत्ता : स्वयं की मेहनत एवं पसीने से उपजी हरी-भरी तरो-ताजा सब्जियों को देखकर सभी का तन-मन प्रफुल्लित होगा। इसके अतिरिक्त सब्जियाँ खरीदने के लिए बाजार में जाने का बहुमूल्य समय भी बच जाता है। वास्तव में स्वयं की देखरेख एवं मेहनत से पैदा की गई सब्जियों का स्वाद और आनंद कुछ और ही होता है। इस प्रकार पोषण वाटिका स्थापित करना परिवार के स्वास्थ्य एवं समृद्धि के लिए बुद्धिमत्तापूर्ण कदम साबित होगा। विविध सब्जियों में विद्यमान पोषक तत्वों का विवरण निम्नानुसार होता है-

1. **कार्बोहाइड्रेट** : आलू, शकरकंद, अरबी, चुकन्दर आदि।
2. **प्रोटीन** : मटर, सेम, फेंचबीन, लोबिया, ग्वार, चौलाई आदि।
3. **विटामिन-ए** : गाजर, पालक, शलजम, चौलाई, शकरकंद, कद्दू, पत्ता गोभी, मेथी, टमाटर, धनियाँ आदि।
4. **विटामिन बी** : मटर, सेम, लहसुन, अरबी आदि।
5. **विटामिन सी** : टमाटर, शलजम, हरी मिर्च, फूलगोभी, पत्तागोभी, करेला, मूली की पत्तियाँ, चौलाई आदि।
6. **कैल्शियम** : चुकन्दर, चौलाई, मेथी, धनिया, कद्दू, प्याज, टमाटर आदि।
7. **पोटेशियम** : शकरकंद, आलू, करेला, मूली सेम आदि।
8. **फास्फोरस** : लहसुन, मटर, करेला आदि।
9. **लोहा** : करेला, चौलाई, मेथी, पुदीना, पालक, मटर आदि।

सब्जियों का चयन : सब्जियों का चयन करते समय हमें वर्ग के अनुसार फसल चक्र अपनाना चाहिए। एक ही वर्ग की फसलों को लगातार नहीं लगाना चाहिए। फसल चक्र अपनाने से बीमारियों का प्रकोप कम होता है। सब्जियों की किस्मों का चुनाव करते समय हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि वे उन्नत, स्वस्थ एवं प्रतिरोधी हों। किस्में अगर देशी हों तो हमें अगले मौसम में बीज खरीदने की जरूरत नहीं पड़ेगी। सब्जियों को मौसम के अनुसार उसकी बुआई या रोपाई करनी चाहिए। मौसम के अनुसार सब्जियों को निम्न प्रकार से बाँटा जा सकता है :

1. खरीफ : लौकी, तोरई, कद्दू, टिंडा, खीरा, करेला, भिंडी, टमाटर, बैंगन, मिर्च, पालक धनियाँ आदि।

2. रबी : गोभी, ब्रोकली, पत्तागोभी, टमाटर, बैंगन, मिर्च, पालक, मूली, मैथी, सोया, चौलाई, धनिया, सेम, मटर, राजमा, चुकंदर, गाजर, लहसुन, शलजम, प्याज आदि।

3. जायद : लौकी, तोरई, कद्दू, खीरा ककड़ी, करेला, टिंडा, भिंडी, टमाटर, बैंगन, मिर्च, पालक, धनिया, चौलाई आदि। वहीं सब्जियों के साथ फलदार पौधे आम, अमरूद, सहजन, किन्नू, संतरा, पपीता, करौंदा, अनार, नींबू, आंवला, चीकू, ड्रेगन फ्रूट आदि लगाए जा सकते हैं।

पोषण वाटिका लगाने के लिए भूमि की तैयारी : जिस स्थान पर पोषण वाटिका लगानी हो वहाँ की मिट्टी में जल एवं वायु का प्रवाह अच्छा होना चाहिए। इसलिए गृह वाटिका लगाने से पहले भूमि को तैयार कर लेना महत्त्वपूर्ण है। मिट्टी जितनी भुरभुरी, कार्बनिक खाद एवं जीवांश तत्वों से भरपूर होगी, पैदावार भी उतनी ही अच्छी मिलेगी। घर में थोड़े स्थान में सब्जियाँ उगाने के लिए फावड़ा या कस्सी का उपयोग कर मिट्टी को अच्छी तरह से भुरभुरा कर क्यारियाँ बना लेनी चाहिए तथा गोबर की खाद को क्यारियों में डाल कर मिश्रित कर लेना चाहिए। गमले तैयार करते समय भी कस्सी या खुरपी से मिट्टी अच्छी तरह भुरभुरी कर गोबर की खाद मिलाकर गमले तैयार कर लेने चाहिए। जिन व्यक्तियों के पास घर पर खुला स्थान नहीं है वो अपनी छत पर सब्जियाँ उगाने के लिए आजकल बाजार में अलग-अलग आकार के प्लास्टिक बेग, गमले, ट्रे आदि उपलब्ध हैं जो कि वजन में काफी हल्के होते हैं, काम में ले सकते हैं। सीमेंट एवं प्लास्टिक के गमले, कबाड़ में अनुपयोगी वस्तुए जैसे बाल्टी, प्लास्टिक के कट्टे, ट्रे, मटकियाँ, बोतल आदि का भी उपयोग कर सकते हैं। इनमें बराबर मात्रा में मिट्टी एवं कम्पोस्ट का मिश्रण भरकर सब्जियों का रोपण एवं बिजाई कर सकते हैं।

खाद एवं उर्वरक : खाद एवं उर्वरक का अच्छी पैदावार प्राप्त करने में अत्यधिक महत्त्व है। इसके लिए आवश्यक है कि मिट्टी में कार्बनिक खाद का प्रयोग हो। खाद मिट्टी की दशा सुधारती है व पौधों को आवश्यक पोषक तत्वों की पूर्ति भी करती है। इसके लिए गृह वाटिका के कोने में कम्पोस्ट खाद का निर्माण भी किया जा सकता है।

गृह वाटिका का प्रबंधन : सामान्यतः सब्जियों की बुआई दो तरीकों से की जा सकती है- पौधशाला तैयार करके (टमाटर, बैंगन, मिर्च, प्याज, गोभी वर्गीय सब्जियाँ, सलाद) एवं सीधे बुआई (खीरा वर्गीय सब्जियाँ, मूली, मटर, भिंडी, सेम, पालक इत्यादि)। जब भी पोषण वाटिका में खरपतवार दिखे तो उसे हाथ से निकाल देना चाहिए।

कीट एवं रोग प्रबंधन : पोषण वाटिका से अस्वस्थ पौधों को तुरन्त निकालकर नष्ट कर दें। फसल चक्र अपनाना लाभदायक होता है। बुआई के लिए प्रतिरोधी किस्मों का उपयोग करें। स्वस्थ पौधशाला तैयार करें। गार्डन को साफ रखें, खरपतवार निकालते रहें तथा अति आवश्यक होने पर पौध संरक्षण रसायनों के स्थान पर जैविक कीटनाशकों जैसे जीवामृत का ही उपयोग करें।

सब्जियों की तुड़ाई : तुड़ाई की अवस्था फसल के स्वभाव पर निर्भर करती है। उदाहरण के लिए लौकी, करेला, टिंडा, भिंडी, तोरई आदि को कच्ची अवस्था में एवं तरबूज, खरबूजा, टमाटर आदि को पकने पर तोड़ा जाता है।

अतः पोषण वाटिका का विकास करके खाद्य आवश्यकताओं की पूर्ति, स्वास्थ्य और पर्यावरण सुरक्षा जैसी तीनों महत्त्वपूर्ण उद्देश्यों को एक साथ पूरा किया जाना संभव है। पोषण वाटिका के विकास से जुड़े मानकों का सही-सही अनुपालन कर हम अपने घर में एक आदर्श पोषण वाटिका का निर्माण कर सकते हैं जिसके उचित रखरखाव द्वारा हम मौसम के अनुसार फल-सब्जियों को उगा सकते हैं और पर्यावरण का संरक्षण भी कर सकते हैं।

प्रधानाचार्या
राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय,
किशनगढ़, अजमेर (राज.)
मो: 941496002

पर्यावरण-संरक्षण

अनूठी ग्रीन स्कूल

❒ भूरमल सोनी

ग्रीन स्कूल नाम से ही हरियाली और पर्यावरण से सीधा जुड़ाव हो जाता है। विश्व भर में बढ़ते ग्लोबल वार्मिंग, ओजोन परत में बढ़ते छेद के आकार से वैज्ञानिक चिंतित हैं। धरती पर बढ़ते प्रदूषण से जीवन को खतरा महसूस होने लगा है। पर्यावरण को बचाना और प्रदूषण को समाप्त करना विश्व की प्रथम आवश्यकता है। भौतिक संसाधनों, वाहनों का अधिकाधिक उपयोग, कल-कारखानों की बढ़ती संख्या, प्लास्टिक, पॉलीथिन के कारण पृथ्वी पर प्रदूषण बढ़ता जा रहा है। पर्यावरण संरक्षण के लिए भारत सरकार एवं राज्य सरकारें कटिबद्ध हैं। वृक्षारोपण, जल बचत व प्रदूषण रोकथाम के लिए सघन प्रचार-प्रसार किया जाकर जनजागृति हो ऐसा प्रयास हम सबको मिलकर करना होगा।

स्कूल पाठ्यक्रम में कक्षा एक से ही पर्यावरण विषय लागू किया जा चुका है। ईको फ्रेंडली क्लब, वन महोत्सव, पर्यावरण सप्ताह पखवाड़े जैसे विभिन्न कार्यक्रम आयोजित कर विद्यार्थियों को जल, जमीन, वृक्षारोपण, पर्यावरण, वर्षा जल संचयन एवं प्रदूषण से पृथ्वी को मुक्ति दिलाने के लिए जानकारियाँ दी जा रही हैं ताकि विद्यार्थी पर्यावरण संरक्षण व प्रदूषण रोकथाम के लिए अपनी भागीदारी सुनिश्चित कर सकें। अंधाधुंध कटते वृक्ष, वन्य जीवों का शिकार पर्यावरण के लिए खतरा साबित हो रहे हैं। ऐसे में 'ग्रीन स्कूल' की कल्पना ने प्रदूषण को चुनौती देने का साकार रूप दिया है। उत्तराखंड के विरेन्द्र रावत ने अब तक सौ से अधिक ग्रीन स्कूलों का निर्माण किया।

ग्रीन स्कूल की संरचना भारतीय दर्शन के अनुसार पंचभूत के मूल तत्वों-आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी का समावेश कर इन स्कूलों की संरचना की गई है। स्कूल में प्रवेश करते ही प्राकृतिक सुंदरता का अहसास होने लगता है। प्राथमिक स्तर से पर्यावरण विषय पढ़ाने से विद्यार्थियों में इस विषय के प्रति जागरूकता होने लगती है।

स्कूल ईमारत का निर्माण पंचभूतों को ध्यान में रखकर किया गया है। प्रत्येक कमरे में सूर्य की रोशनी के साथ वर्षा जल संचय के विशेष प्रबंध किए गए हैं। पेड़-पौधें की देखभाल-स्कूल में नाना प्रकार के पेड़-पौधे, वनस्पति, बाग-बगीचे, जीव-जन्तु आदि है जिनकी देखभाल का जिम्मा विद्यार्थियों का है। जल, अग्नि, आकाश, वायु, पृथ्वी पंचभूतों के नाम से विद्यार्थियों के ग्रुप बनाकर उन्हें इन की समस्त देखभाल का कार्य भलीभाँति सौंपा गया है। सप्ताह में एक दिन सभी ग्रुप के विद्यार्थियों को गमले, बाग-बगीचों, वृक्षों की देखभाल करनी पड़ती है। स्कूल की अनूठी पहल शहर में रहने वाला कोई भी व्यक्ति अगर कुछ दिनों के लिए घर छोड़कर बाहर जाता है तो वह अपने घर के बाग-बगीचे, गमलों की देखभाल के लिए स्कूल में निःशुल्क आवेदन कर सकता है। स्कूल प्रबंधन उनकी देखभाल के लिए विद्यार्थियों के अलग-अलग ग्रुप को यह कार्य सौंपता है। गमलों को स्कूल में जमा भी किया जाता है वापस आने पर ले जा सकते हैं।

मकान मालिक के लिए यह व्यवस्था निःशुल्क है परन्तु उपहार स्वरूप कोई वस्तु या नकदी स्वेच्छा से दे तो कोई मनाही नहीं है। **प्रकृति से रूबरू**-स्कूल में अलग-अलग किस्म के पेड़-पौधे, पशु-पक्षी, जीव-जंतुओं से विद्यार्थियों का साक्षात करवाया जाता है। इसके लिए खास प्रबंध किए गए हैं। **प्राकृतिक जानकारियों**-हिरण, साँप, बिच्छू, लोमड़ी, तोता, मैना, कबूतर, मोर, बतख, तीतर, चील, कौआ आदि नभचर, जलचर तथा धरती पर पाए जाने वाले जीव-जंतुओं के अलावा विभिन्न वनस्पतियों, कोटर, जड़, तना की बनावट उनके गुण-अवगुणों से विद्यार्थियों का परिचय शिक्षकों द्वारा करवाया जाता है।

फल-फूल, मिट्टी, बीज, अंकुर, पत्ते, खाद्य, पानी, धूप, छाँव के साथ बनावट सभी को अवगत कराया जाता है। साथ ही ऑक्सीजन, कार्बन-डाइ-ऑक्साइड व अन्य प्रभावों को भी समझाया जाता है। शिक्षक-विद्यार्थी को कोई रोग नहीं-यहाँ पढ़ने वाले व पढ़ाने वाले शिक्षक बीमारी से कोसों दूर हैं। बेहद प्राकृतिक वातावरण में शिक्षक ही नहीं छात्रों को भी कभी चिकित्सा अवकाश लेने की जरूरत महसूस नहीं हुई। सौ प्रतिशत वर्षा जल का संचय कर उसी को पेड़-पौधों की सिंचाई के लिए उपयोग किया जाता है। इसके लिए विशेष प्रबंध किए गए हैं। वेस्ट से खाद बनाने और पेपर रिसाईक्लिंग तक पूरा काम पढ़ाई के साथ ही छात्रों को सिखाया जाता है। पर्यावरण मित्र ग्रीन स्कूल में सीबीएसई बोर्ड की मान्यता है विद्यार्थी सिलेबस अनुसार शिक्षण के साथ पर्यावरण मित्र बनाकर कमाई करना सीखते हैं। 'ग्रीन स्कूल' की नींव रखने वाले श्री विरेन्द्र रावत 'ग्रीन स्कूल एलायंस बेस्ट यू.एस.एस. संस्था के कॉर्डिनेटर हैं तथा यूनेस्को के प्रमाणित प्रशिक्षक भी हैं।

राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद ने हरित पाठशाला कार्यक्रम योजना स्कूलों में लागू की है। प्रदेश भर के सरकारी स्कूलों के विद्यार्थी अब पर्यावरण संरक्षण के लिए काम करेंगे। योजनानुसार प्रत्येक माह में पर्यावरण संरक्षण, पौधारोपण, जागरूकता आदि कार्यक्रम निर्धारित किए हैं।

01 जुलाई से 10 जुलाई तक पौधारोपण कराना, किसी एक शिक्षक को प्रभारी नियुक्त करना। अगस्त वे शिक्षक अभिभावक संगोष्ठी में पौधारोपण कार्यक्रम की जानकारी तथा पौधे के नाम की पट्टिका, सितंबर विश्व ओजोन दिवस मनाना, भामाशाह व जनसहयोग से पौधों की देखभाल। अक्टूबर- मृत पौधों के स्थान पर नए पौधे लगाने की जिम्मेदारी तय करना। नवंबर- विश्व पर्यावरण दिवस संरक्षण पर कार्य का आयोजन। दिसम्बर- पौधारोपण की सार संभाल। जनवरी- 26 जनवरी पर पौधारोपण करने वाले को सम्मानित करना। फरवरी- पौधारोपण समीक्षा। मार्च- पूरे वर्ष की जानकारी पोर्टल पर दर्ज करना। अप्रैल- 22 अप्रैल पृथ्वी दिवस पर कार्यक्रम आयोजित किया जाना। सुरक्षा ट्री-गार्ड, चार दीवारी निर्माण आदि कार्य। मई-15 मई तक विद्यालय वाटिका क्लब व पर्यावरण संरक्षण क्लब का गठन। जून- गड्डे खोदकर तैयार करवाना। पुनः जुलाई में बरसात होने पर वृक्षारोपण करवाना।

कला शिक्षक
राम मंदिर के सामने, विश्वकर्मा गेट के बाहर,
बीकानेर (राज.)-334004
मो: 9252176253

अनुकरणीय

माँ सरस्वती के मन्दिर का बनवाया भव्य मुख्य द्वार

❒ बलराम मटोरिया

हनुमानगढ़ जिले का भोमपुरा गाँव जिला मुख्यालय से 58 कि.मी. दूरी पर स्थित है। 2011 की जनगणना के अनुसार कुल 6008 जनसंख्या है। गाँव के माध्यमिक विद्यालय को राज्य सरकार द्वारा दिनांक 07.06.2013 को उच्च माध्यमिक विद्यालय में क्रमोन्नत किया गया। मैंने दिनांक 06.05.2015 को राउमावि. भोमपुरा, हनुमानगढ़ में प्रधानाचार्य के पद पर कार्यग्रहण किया था। जब मैं विद्यालय में कार्यग्रहण करने के लिए उपस्थित हुआ और मैंने विद्यालय की इमारत पर नजर घुमाई तो मुझे आश्चर्य हुआ कि यह उच्च माध्यमिक विद्यालय है? इसके चारों तरफ दीवार के स्थान पर कंटीली झाड़ियाँ थी, कमरों के स्थान पर प्राथमिक कक्षाओं के अनुसार छोटे-छोटे 10 कमरे; वो भी सरकार (विभाग) द्वारा जर्जर घोषित किए हुए। कक्षा-कक्ष में ही कार्यालय स्थापित था। उसमें मैंने प्रवेश किया तो टूटा-फूटा फर्नीचर, उपस्थिति पंजिका देखने पर पता चला कि उच्च माध्यमिक विद्यालय में मात्र 4 ही अध्यापक कार्यरत हैं। उन्होंने मेरा स्वागत किया और रामा-श्यामा हुई, मुझे पीने के लिए जल दिया गया जो मई माह में गर्मी के कारण उष्ण था। मैंने कार्यग्रहण किया और कुर्सी पर बैठकर सोचने लगा कि यह विद्यालय मेरे जीवन के 6 विद्यालयों में सबसे जीर्ण-शीर्ण अवस्था में है।

उस दिन मैंने किसी भी स्टाफ सदस्य से ज्यादा विचार विमर्श नहीं किया केवल यही सोचता रहा कि इसका उद्धार कैसे किया जाए? मात्र 10 दिन विद्यालय लगा उसके बाद ग्रीष्मावकाश शुरू हो गया। ग्रीष्मावकाश से पूर्व मेरे विद्यालय के साथी श्री देवीराम मीणा ने व्याख्याता हिन्दी के पद पर कार्यग्रहण किया जिससे मुझे कुछ सम्बल मिला। ग्रीष्मावकाश के दौरान मैंने RMSA कार्यालय हनुमानगढ़ से बार-बार सम्पर्क किया कि इस विद्यालय में उच्च कक्षाओं के लिए कक्षा-कक्षों, पुस्तकालय एवं विज्ञान कक्ष की महती आवश्यकता है, इस विद्यालय को RMSA की योजना में लेकर तुरन्त

कमरों का निर्माण करवाया जाए ताकि विद्यार्थियों को उचित शिक्षण करवाया जा सके। जिला शिक्षा अधिकारी हनुमानगढ़ कार्यालय के अधिकारियों ने मेरी बात का पूर्ण समर्थन करते हुए सत्र 2015-16 में 4 कक्षा-कक्ष, एक पुस्तकालय एवं विज्ञान कक्ष का निर्माण करने के लिए अधिकारियों के सहयोग से निविदा जारी कर दी और जल्दी ही मेरे उच्च माध्यमिक विद्यालय में उक्त कक्षा-कक्षों का निर्माण हो गया। जिससे मुझे सम्बल मिला और आगे बढ़ने की प्रेरणा मिली। कमरों के निर्माण के बाद विद्यार्थियों के लिए ठण्डे पानी की व्यवस्था हेतु मैंने ग्रामीणों से सम्पर्क किया तो विद्यालय को दो वाटर कूलर (लड़कियों व लड़कों के लिए अलग-अलग) दानदाताओं ने लगा दिए। बार-बार उच्चाधिकारियों से सम्पर्क करने पर धीरे-धीरे स्टाफ की पूर्ति भी हो गई। विद्यार्थियों के कार्यों पर पेनी नजर रखने हेतु CCTV कैमरे की आवश्यकता महसूस हुई जिसे विद्यालय विकास समिति एवं ग्रामीणों के सहयोग से विद्यालय में CCTV कैमरे लगा दिए गए। इस प्रकार विद्यालय प्रगति के पथ पर बढ़ने लगा।

मेरे मन की इच्छा पूर्ण होती नजर आने लगी। विद्यालय का स्टाफ एवं विद्यार्थियों का मुझे पूर्ण सहयोग मिलने लगा। जिस कारण से विद्यार्थी NMMS, लेपटोप, विविध छात्रवृत्तियों, खेलकूद में राज्य स्तर पर विद्यार्थियों का चयन होने लगा। बोर्ड परीक्षा परिणाम उच्चतम एवं शत-प्रतिशत रहने लगा। मन की इच्छा और बढ़ने लगी अब विद्यालय की एक मुख्य समस्या जो मुझे हर दिन याद दिलाती थी वह माँ सरस्वती के मन्दिर के मुख्य द्वार का अभाव...

मुख्य द्वार के अभाव में विद्यालय में पौधारोपण भी नहीं करवाया जा सकता था। मुख्य द्वार के निर्माण हेतु स्टाफ सदस्यों की बैठक रखी गई जिसमें इस बात पर सहमति बनी कि हम सभी गाँव में चन्दा एकत्रित करने हेतु जाएँगे। इसी कड़ी में दिनांक 26.06.2019 को हम गाँव में चन्दा एकत्र करने हेतु घूम रहे थे। घूमते-घूमते हम एक सज्जन के घर चले गए, उस सज्जन ने हमसे आने का कारण पूछा और हमें चाय व नाश्ता करवाया; उसके बाद उन्होंने कहा कि गेट मैं अकेला ही बना दूँ तो कैसा रहेगा। यह शब्द सुनते ही हम बहुत खुश हुए एवं हमने तुरन्त हाँ कर दी।

उन सज्जन भामाशाह का नाम है चौधरी श्री सतवीर जी गोदारा, भोमपुरा हनुमानगढ़। श्री सतवीर जी गोदारा ने कहा कि मैं अपनी स्वर्गीया माता श्रीमती गोरा देवी एवं स्वर्गीय

पिता श्री छोगाराम गोदारा भोमपुरा की याद में एक भव्य आलीशान विद्यालय का द्वार बनाकर आपको समर्पित करूँगा।

चिड़ियाँ चोंच भर ले गई, नदी को घट्यो न नीर,
दान दिए धन ना घटे, कह गए संत कबीर।।

उक्त दोहे को चरितार्थ करते हुए चौधरी सतवीर गोदारा ने अपनी नेक कमाई में से 11 लाख (अखरे ग्यारह लाख रुपये मात्र) की लागत से यह मुख्य द्वार बनाया जो जिले में तो क्या मेरी नजर में तो पूरे राजस्थान में ही शायद ऐसा मुख्य द्वार सरकारी स्कूल को होगा जो एक व्यक्ति द्वारा बनाया गया हुआ हो ?

विद्यालय के मुख्य द्वार के पूर्ण होने पर चौधरी विनोद कुमार माननीय विधायक हनुमानगढ़, श्रीमती कविता मेघवाल जिला प्रमुख, इन्द्रा दयाराम जाखड़ प्रधान द्वारा दिनांक 01.02.2021 को लोकार्पण किया गया, लोकार्पण के समय बलराम देहडू डायरेक्टर पं.स., जगदीश देहडू पूर्व सरपंच, जयदेव भिंडासरा पूर्व प्रधान, प्रवीणा मेघवाल जिला परिषद्, बलराम गोदारा, आदराम गोदारा, संदीप गोदारा, संदीप मूण्ड अन्य जन प्रतिनिधि, क्षेत्र से पधारे ग्रामीणों के जनसैलाब की उपस्थिति सबको मोहित कर रही थी।

माननीय विधायक द्वारा भामाशाह श्री सतवीर गोदारा द्वारा निर्मित किए गए माँ सरस्वती के मुख्य द्वार की भूरी-भूरी प्रशंसा की, इस कार्य को मूर्त रूप देने के लिए प्रेरक मेरे द्वारा विद्यालय में किए जा रहे सहयोग के लिए बधाई दी एवं विद्यालय स्टाफ की सराहना की। गोदारा परिवार द्वारा अतिथियों को शॉल ओढ़ाकर एवं माला पहनाकर स्वागत किया गया। सभी के लिए गोदारा परिवार ने घर पर भोजन करवाकर सबका मन मोह लिया। सभी ने सतवीर गोदारा के पुनीत कार्य की प्रशंसा करते हुए उज्ज्वल भविष्य की मनोकामना की।

कार्यक्रम का संचालन श्री देवीराम मीणा व्याख्याता द्वारा किया गया। माँ सरस्वती के मन्दिर में बने भव्य मुख्य द्वार के लोकार्पण के बाद चौधरी विनोद कुमार माननीय विधायक ने विद्यालय में उपस्थित जन समूह को संबोधित कर सरकार की विविध योजनाओं की जानकारी ग्रामीणों को दी। ग्रामीणों को अपने बच्चे सरकारी स्कूल में पढ़ाने हेतु प्रेरित किया। समारोह की भव्यता, व्यवस्था के लिए मुझ सहित विद्यालय स्टाफ को बधाई दी। मेरे द्वारा भामाशाह श्री सतवीर गोदारा को माला पहनाकर व शॉल ओढ़ाकर व स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मानित किया और गोदारा परिवार के उज्ज्वल भविष्य की कामना की और हृदय से धन्यवाद दिया। जो सपना मन में हो उसे मेहनत से पूरा किया जा सकता है। मेरे मन का सपना चौधरी सतवीर गोदार ने पूरा किया। मैं उन्हें नमन करता हूँ। उन्हें साधूवाद देता हूँ।

अन्त में मेरे द्वारा सब अतिथियों का आभार व्यक्त किया गया। मेरे अनूठे और भरसक प्रयास ने मेरे विद्यालय को एक भव्यता, शैक्षिक वातावरण, शैक्षिक उन्नति प्रदान की है। सब कुछ संभव हो सकता है यदि नेक नियति, अथक परिश्रम और आत्मविश्वास से कार्य शुरू किया जाए। निश्चित ही किसी भी कार्य को करने के लिए शुद्ध आत्मा से प्रयास किया जाता है तो ईश्वरीय शक्तियाँ पूर्ण सहयोग के लिए हाथ बढ़ाती हैं। आप सभी से विनम्र अनुरोध है कि एक बार प्रयास करके देखें आपको भी अपने लक्ष्य में अवश्य सफलता प्राप्त होगी।

प्रधानाचार्य
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय भोमपुरा,
हनुमानगढ़ (राज.)-335524
मो: 9414874490

गुरु-शिष्य और शाला

❒ उषा शर्मा

प्रवेश द्वार इक शाल का
दो नन्हें पग आ रूकते है
कन्धे पर झोला छोटा सा
आँखों में अनदेखा सपना
माथे पर लेख लकीरों का
कुछ बुझा कुछ अनबूझा सा।
ठुक-ठुक ठुक-ठुक कल आने वाला
कुछ बनता और संवरता सा
कभी पास और कभी
कुछ धुंधला और कुछ उजला सा।
चहक उठा पाखी मन का
अपने जैसो को जब देखा
मन में उड़ान की अभिलाषा
बचपन का कौतूहल जागा।
प्रवेश द्वार इक शाला का
साक्षी अन्य अद्भुत पल का
स्वनित को आतुर मनुष्य एक
प्रतीक्षा भव की प्रतिपल विशेष

ज्ञान द्वीप मंडित तप्त भाल
परमार्थ को तत्पर हिय विशाल
आकंठ ज्ञानार्पण की जिजीविषा
अनंत ज्ञान का सृजनहार
अद्भुत और अनूठा शिल्पकार
मानवता मूल्यों का निर्माता है
पुण्य अनंत किए जिसने
वह शिक्षक बन जग में आता है।
शिक्षक बन कर्मक्षेत्र शाला
जहाँ ज्ञान की प्रखर अग्नि में
अज्ञानता का तमस जलकर के

गुणमंडित व्यक्तित्व निखारा जाता है
नन्हा मानव जीवन अद्भुत
शिष्य रूप में आता है
कर्त्तव्यनिष्ठ गुरु जिसको
लक्ष्य मान अपनाता है।
करता नित परिश्रम अनवरत
अज्ञानता का अंधकार
जड़ता की मूढ़ परत
क्षण प्रति क्षण क्षीण-क्षीण करके
प्रज्ञा की ज्योति प्रज्वलित कर
हाथों को कर्म शक्ति देकर

मन में बल सत का भरकर
गुरु ने कर्त्तव्य अपना पूर्ण किया
और शिष्य को निस्वार्थ कहा
जा, जग में प्रकाश फैला ऐसा
धन्य हो जाए सम्पूर्ण धरा।
गुरु-दक्षिणा देने को
शिष्य विश्वास से बोल उठा
बालक हूँ मैं छोटा सा
इक दिन नभ पर छा जाऊँगा
अपनी बाँहों की शक्ति से
पथ बदलूँगा धाराओं का
मानवता के आँसू पोछूंगा
शान्ति का सन्देश फैलाउंगा,
परिश्रम से जग का तम हरकर
मैं गुरु का कर्ज चुकाउंगा।
गुरु को संतोष असीम हुआ
सार्थक हुआ गुरु मेरा बनना
और शिष्य का पग शाला में धरना।

प्रधानाध्यापिका राजकीय बालिका माध्यमिक विद्यालय फतेहगढ़, हनुमानगढ़ (राज.)
मो: 9462577238

एक परिचय

राजकीय गुरुनानक भवन संस्थान, जयपुर

❒ रेखा कुमारी

माध्यमिक शिक्षा विभाग, राजस्थान की ओर से संचालित इस संस्था की स्थापना 9 ज्येष्ठ शक संवत 1992 शनिवार तदनुसार दिनांक 30 मई 1970 को भारत के राष्ट्रपति महामहिम श्री वराह गिरि वैंकट गिरि द्वारा की गई। स्थापना से यह संस्थान विधिवत रूप से संचालित है। यह राजस्थान का इकलौता राजकीय संस्थान है जो पेंटिंग, पेपरमेशी, मेहंदी, ब्यूटी कोर्सेज, उपचारात्मक शिक्षण, योगा व खेलकूद सहित विभिन्न कलाओं में प्रशिक्षणार्थियों को नाममात्र शुल्क में पारंगत बनाता है। प्रतिवर्ष लगभग 1200 प्रतिभागी विभिन्न अभिवृत्तियों व खेलकूद में प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं।

संस्थान में एक विशाल हॉल व शैक्षिक सुविधाओं से युक्त शैक्षिक वातावरण तथा रचनात्मक व सृजनात्मक प्रवृत्तियों का माहौल है जो शिक्षा प्रेमियों, महिलाओं, युवतियों, अभिभावकों व छात्र-छात्राओं को सहज ही अपनी ओर आकर्षित करता है।

संस्थान में छात्र-छात्राओं की अभिरुचियों के सुरुचिपूर्ण ढंग से विकास हेतु जो व्यवस्था की गई है उसके कारण यहाँ प्रवेश लेने वाले छात्र-छात्राओं में आयु, लिंग अथवा कक्षा के आधार पर कोई भेद नहीं करता। यहाँ प्रवेश लेने वाले विद्यार्थी प्राथमिक शिक्षा से लेकर विश्वविद्यालय स्तर तक की कक्षाओं का अध्ययन कर रहे हैं। संस्थान के प्रवेश के समय यह आवश्यक नहीं कि वे अध्ययनरत हों, आवश्यकता है केवल अपनी अभिरुचि के अनुरूप विषय क्षेत्र चुनने की व सुविधानुसार संस्थान के शिक्षक के साथ जुड़कर सीखने की। शुल्क के रूप में नाम मात्र ग्यारह रुपये लिए जाते हैं जिनमें दस रुपये विकास शुल्क के खाते में जमा होते हैं व एक रुपया राजकोष में जमा होता है।

संस्थान में लीक से हटकर काम होता है यहाँ बंधी-बँधाई पाठ्यचर्या के स्थान पर विद्यार्थियों की अभिरुचियों और अधुनातन प्रवृत्तियों पर बल दिया जाता है। महिलाओं के सर्वांगीण विकास के लिए व महिलाओं को मानसिक, सामाजिक, आर्थिक स्तर पर सशक्त व आत्मनिर्भर बनाने के उद्देश्य से सिलाई, कढ़ाई, ब्यूटी कोर्स, दाबू प्रिन्ट, पेपरमेशी, कुकिंग गतिविधियाँ संचालित होती हैं। इसके अतिरिक्त संस्थान में विभिन्न प्रतियोगिताएँ भी आयोजित की जाती हैं एवं विजेताओं को प्रमाण-पत्र पुरस्कार स्वरूप दिया जाता है। संस्थान से प्रशिक्षण पाकर अनेक महिलाओं द्वारा स्वयं के सिलाई केन्द्र, ब्यूटी पार्लर संचालित किए जा रहे हैं जिसके कुछ उदाहरण निम्नानुसार है-

1. श्रीमती माया देवी : सिलाई (बुटिक) केन्द्र
2. सुश्री रूपाली : सिलाई (बुटिक) केन्द्र
3. श्रीमती नूतन : सिलाई (बुटिक) केन्द्र
4. सुश्री मुस्कान : ब्यूटी पार्लर

संस्थान में निम्न प्रवृत्तियाँ संचालित है-

1. उपचारात्मक शिक्षणः प्रारम्भिक स्तर से माध्यमिक स्तर तक के स्कूली विद्यार्थियों के अलावा समाज के वंचित वर्ग को भी जो विद्यालय नहीं गए उनको भी अक्षर ज्ञान कराया जाता है। माध्यमिक स्तर तक हिन्दी, अंग्रेजी, गणित, विज्ञान, सा. विज्ञान व उच्च माध्यमिक स्तर तक उपचारात्मक शिक्षण कराया जाता है। स्टेट ओपन के तहत 10+2 की तैयारी कर रहे विद्यार्थियों को भी अध्ययन कराया जाता है व उनको कैरियर संबंधी जानकारी दी जाती है।

2. स्वाध्याय की प्रवृत्ति का विकासः- स्वाध्याय का शाब्दिक अर्थ-'स्वयं अध्ययन करना।' यह एक वृहद संकल्पना है जिसके अनेक अर्थ होते हैं। जीवन निर्माण और सुधार संबंधी पुस्तकों को पढ़ना, श्रवण, मनन, चिंतन आदि करना स्वाध्याय कहलाता है। आत्मचिंतन का नाम भी स्वाध्याय है। अपने बारे में जानना, अपने दोषों को देखना भी स्वाध्याय है। स्वाध्याय से व्यक्ति के जीवन में आत्म-अनुशासन, आत्मविश्वास, व्यवहार, सोच स्वभाव में बहुत परिवर्तन आता है जो स्थानीय संस्थान में मिलता है स्वाध्याय द्वारा ज्ञान वास्तव में ज्ञान होता है।

3. पुस्तकालय एवं वाचनालय सेवा- वर्ष भर पुस्तकालय में आने वाले छात्र-छात्राओं को उनकी अभिरुचि के अनुरूप पाठ्य सामग्री प्रदान करना, छात्र-छात्राओं को कहानी, साहित्य तथा रोचक पाठ्य सामग्री पढ़ने हेतु प्रेरित करना है। छात्र-छात्राओं को अलग-अलग विषयों की किताब पढ़ने का शौक रहता है। किताबों को पढ़कर अपना ज्ञानवर्धन कर सकते हैंः-

- अलग-अलग विषयों पर किताबें पढ़ने से प्रतिभागियों, बच्चों, बड़ों में हर क्षेत्र का ज्ञान बढ़ता है।
- कॉमिक्स, किस्से, कहानी, उपन्यास, नाटक आदि पढ़ने से व्यक्ति में सृजनशीलता, काल्पनिकता का विकास होता है।
- पढ़ाई व प्रतियोगिता से संबंधित पुस्तकें पढ़ने से व्यक्ति शिक्षित होकर सफल जीवन में आगे बढ़ता है।
- साहित्यिक किताब समाज एवं सामाजिक जानकारी देती है।

4. नृत्य संगीत एवं वाद्ययंत्र वादनः- स्थानीय संस्थान में नृत्य कक्षा भी संचालित होती है जिसमें छोटे बच्चों से लेकर महिलाएँ नृत्य सीखती हैं जिससे उनमें भरपूर आत्मविश्वास आता है। इसके अलावा नृत्य करने से बेहतर हृदय स्वास्थ्य, मजबूत माँसपेशियाँ, बेहतर संतुलन और समन्वय, मजबूत हड्डियाँ, तनाव का कम होना, ज्यादा ऊर्जा जैसे कई शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य लाभ मिलते हैं। संस्थान में छात्र-छात्राओं की रुचि के अनुरूप नृत्य सिखाया जाता है। नृत्य के साथ-साथ संस्थान में वाद्ययंत्र भी सिखाए जाते हैं जैसे-ढोलक, हारमोनियम, तबला आदि।

5. पाक कला-भारतीय तथा विदेशी व्यंजनः- पाकशाला की स्थापना का उद्देश्य भारतीय व्यंजनों को संरक्षित, प्रचार व प्रसारित करने हेतु किया गया है।

6. आर्ट एण्ड क्राफ्टः- छात्र-छात्राओं व महिलाओं को अपने अध्ययन एवं कार्य के उपरान्त बचे हुए अतिरिक्त समय का रचनात्मक कार्यों में सदुपयोग करने हेतु व क्रियात्मक कार्यों के माध्यम से आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर करना। आर्ट एण्ड क्राफ्ट में गृहसज्जा के लिए पेपर आर्ट, वेस्ट प्लास्टिक, गत्ते, थर्माकोल, बोतल के ढक्कन, कपड़े की कतरन, पुराने दीपक, फॉम आदि से कलात्मक वस्तुओं के

निर्माण का प्रशिक्षण दिया जाता है। संस्थान में आर्ट एण्ड क्रॉफ्ट के माध्यम से महिलाओं ने कैरी बेग बनाने सीखे जो उनकी आय के साधन बने व गृहसज्जा की वस्तुओं का निर्माण कर उन्हें विक्रय कर अपनी आय में बढ़ोतरी की।

7. बाल चित्रकला– बाल सुलभ मन की अभिव्यक्तियों को उजागर कराने के लिए 5 से 15 वर्ष तक की बालक–बालिकाओं के मन की अभिव्यक्ति को सुन्दर ढंग से चित्रित करने व उसमें सौंदर्य तत्वों को जोड़कर अपने भावों को रंग रेखाओं के माध्यम से चित्रों के रूप में चित्रित करने के लिए प्रेरित करना संस्थान का उद्देश्य है।

8. पोट पेंटिंग्स– मिट्टी के पोट, सुराही विभिन्न आकारों के बोर्ड पर ज्यामितियाँ आकारों में सुन्दर फूल–पत्तियाँ अलंकृत करके नए आकृतियों को पेपरमेशी व रंग–रेखाओं से सुसज्जित करना सिखलाया जाता है ताकि अपनी बनी हुई आकृतियों से अपने घर को सुन्दर कर सकें।

9. पेपरमेशी– पेपरमेशी पारम्परिक और आधुनिकतम समय में उपयोग और उनकी उपयोगिता को ध्यान में रखकर छात्राओं और महिलाओं को पेपरमेशी के बारे में जानकारी देना ताकि पेपरमेशी बनाने तथा उसके बने हुए कलात्मक वस्तुओं से गृहसज्जा व अपनी आय को बढ़ावा दे सके। पेपरमेशी से निम्न वस्तुओं का निर्माण कर सकते हैं– श्री गणेश की मूर्ति बनाना, मुखौटे बनाना, वॉल हैंगिंग (लकड़ी के वेस्ट टुकड़ों पर या गत्तों पर फूल–पत्तियाँ बनाकर), काँच वर्क, फ्लावर पॉट, पेन पोट, कछुआ, खरगोश, दर्पण, झरोखे, ज्वैलरी, ड्राइफ्रूट बॉक्स, पुरानी बोतल पर सिरेमिक आर्ट इत्यादि।

10. ब्यूटी पार्लर कोर्सः– इस अभिरुचि में प्रशिक्षणार्थियों को निम्न प्रशिक्षण दिया जाता है– मेनिक्योर, पेडिक्योर, वैक्सिंग, ब्लीचिंग, क्लींजिंग, फेशियल हेयर केयर, स्किन केयर, नेल आर्ट, साड़ी बाँधना, मेकअप।

11. टाई एण्ड डाई– टाई एण्ड डाई एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक कपड़े को विशेष प्रतिरोध रंगाई विधि का उपयोग करके रंगा जाता है। इस विधि में कपड़े या जिस सामग्री को रंगा जाता है उसे विशिष्ट पैटर्न से बाँधा जाता है। इसे बाँधने के लिए रबर बैण्ड, तार, धागा आदि का प्रयोग किया जाता है। लगभग 10 तरह से टाई एण्ड डाई कपड़ों पर बनवाई जाती है।

12. बंधेज– कपड़ों को छोटा–छोटा बाँध कर आकृति बनाकर रंगा जाता है। बाँधने के लिए धागे का प्रयोग किया जाता है।

13. दाबू आर्ट– इसमें फोम शीट पर फूल–पत्तियों की आकृति काट कर व उस पर रंग लगाकर कपड़े आदि पर छापा जाता है।

14. कम्प्यूटर प्रशिक्षण– छात्र–छात्राओं को कम्प्यूटर में बेसिक प्रशिक्षण दिया जाता है।

15. सिलाई– सिलाई प्रशिक्षण अन्तर्गत सिलाई मशीन के बारे में, मशीन में होने वाली खराबियों को किस प्रकार घर में ही समाधान किया जाए यह ज्ञान भी दिया जाता है। ताकि वे अनावश्यक खर्चों से बच सके। इसके अतिरिक्त बेसिक सिलाई जिसमें विभिन्न प्रकार के टांके जैसे–कच्चा टांका, तुरपाई, बखिया, पैबन्ध लगाना, हुक लगाना, काज बनाना, बटन टांकना, फैन्सी बटन लगाना, स्टिच बटन लगाना, रफू करना आदि। बच्चों एवं महिलाओं के वस्त्र की पहले अखबार पर ड्राफ्टिंग कराई जाती है। उसके बाद नाप के हिसाब से कपड़े पर निशान लगाए जाते हैं। उचित प्रकार से कपड़े पर नाप लेना व मार्जिन छोड़ना बताया जाता है। इसके अन्तर्गत फ्रॉक, छोटे कुर्ते, पेटीकोट, ब्लाउज, सलवार, कमीज इत्यादि सिखाए जाते हैं जिससे महिलाएँ घर में अपने व अपने बच्चों के कपड़े स्वयं सिल सकती है और अपनी आर्थिक स्थिति को मजबूत बना सकती हैं।

16. शाला क्रीड़ा संगम के तहत खेलकूद– टेबल–टेनिस, बैडमिंटन, क्रिकेट के साथ–साथ युवतियों व महिलाओं के लिए आत्मरक्षा प्रशिक्षण शुरू किया गया है। क्रीडांगण में हर समय जीवंतता बनी रहती है। संस्थान का मुख्य उद्देश्य गरीब तबके के बच्चों व महिलाओं को हर क्षेत्र में आत्मनिर्भर कर आगे बढ़ाने का है जिसमें संस्थान का ध्येय सफल हो, इसी कड़ी में संस्थान में महिलाओं व युवतियों, बच्चों को योगा, प्राणायाम कराया जाता है जिससे व अपने व अपने परिवार के स्वास्थ्य के प्रति सजग रहें।

पर्यावरण संरक्षण की ओर अग्रसर संस्थान–

आओ एक नया निर्माण करे,
पेड़ों से धरती का शृंगार करें।।

संस्थान प्रवृत्तियों के साथ–साथ हरित राजस्थान–हरित संस्थान के तहत विगत वर्षों से पौधारोपण का कार्य सुचारू रूप से करता है। पौधारोपण कार्य में विभिन्न समाजसेवी, एन.जी.ओ., बहुराष्ट्रीय कंपनी इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन द्वारा सहयोग दिया जाता रहा है।

विगत वर्ष से स्थानीय संस्थान में एक नवाचार आरंभ किया गया जिसमें संस्थान में पधारे विभागीय अधिकारियों को पौधा भेंट किया जाता है और साथ ही संस्थान में कार्मिकों के जन्मदिन या वैवाहिक वर्षगांठ पर भेंट स्वरूप पौधा दिया जाता है। कोरोना काल में भी माह अगस्त–20 में मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी, जयपुर श्री रतन सिंह यादव जी द्वारा पौधारोपण कार्यक्रम हेतु विशेष अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया। माह फरवरी में समस्त स्टाफ साथियों द्वारा वृक्षारोपण कार्य हेतु भामाशाह के रूप में सहयोग किया गया जिसमें 15 गमले व पौधे भेंट किए गए। विधानसभा कैम्प अधिकारियों एवं मैनेजर स्थानीय संस्थान एवं समस्त स्टाफ द्वारा पौधारोपण किया गया। इसके अतिरिक्त शिक्षा विभाग के द्वारा समय–समय पर विचार गोष्ठियाँ व काउंसलिंग का कार्यक्रम संस्थान में रखा जाता है। कोरोना काल में महात्मा गाँधी अंग्रेजी माध्यम स्कूल के स्टाफ के साक्षात्कार, प्रयोगशाला सहायक भर्ती परीक्षा दस्तावेज सत्यापन कार्य, कनिष्ठ लिपिक भर्ती परीक्षा दस्तावेज सत्यापन कार्य, निदेशालय बीकानेर विधानसभा कैम्प के सुचारू संचालन में में भी संस्थान की अहम भूमिका रही है।

इस संस्थान का मुख्य उद्देश्य समाज के वंचित वर्ग और महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाना, आजीविका के साधन जुटाकर आत्मनिर्भर बनाना, छात्र–छात्राओं में नैतिक मूल्यों का विकास, स्वास्थ्य के प्रति सजगता का विकास करना है। गुरुनानक भवन संस्थान, जयपुर शिक्षा जगत का एक उज्ज्वल स्तंभ कहा जा सकता है जो सक्रिय रूप से यहाँ के युवा वर्ग की प्रतिभा को निखारने का कार्य निर्विकार भाव से कर रहा है।

प्रबन्धक
राजकीय गुरुनानक भवन संस्थान, आदर्श नगर, जयपुर
मो: 9461461846

महिला-सुरक्षा

आत्मरक्षा

❒ मंजू छीपा

आज के समय में जहाँ हमें हर समय में जीवन को खोने का खतरा बना हुआ है, ऐसे में खास कर बच्चियाँ तथा महिलाओं को स्वयं की रक्षा करने की तथा आत्मरक्षा प्रशिक्षण की ट्रेनिंग देने की विशेष आवश्यकता है। हरेक नागरिक को आत्मरक्षा के तरीकों के बारे में जानकारी तथा विकट परिस्थितियों से निपटने की शिक्षा देने की व्यवस्था की महत्ती आवश्यकता है। जिससे वो अपने को व जानमाल को नुकसान होने से बचा सकें।

आत्मरक्षा के अधिकार के तहत व्यक्ति अपने प्राणों के बचाव के लिए किसी भी हद तक जा सकता है। यहाँ तक कि उसे जीवन के खतरे को पैदा करने वाले को समाप्त करने का भी हक है। आत्मरक्षा के अधिकार की ओट में किसी घर आदि में जाकर मारपीट हमला या लूट को वैधानिक नहीं माना गया है। इसका अस्तित्व परिस्थितियों से है। जहाँ व्यक्ति के जीवन पर अकस्मात खतरा उत्पन्न हो जाए तथा जहाँ से बचने या मदद माँगने की समस्त राह समाप्त हो जाती है, वहाँ वार करके अपनी क्षमता का प्रयोग कर जीवन की रक्षा करनी होती है और अपने जीवन को बचाया जा सकता है।

प्रत्येक व्यक्ति को चाहिए कि वो स्वयं की रक्षा के तरीकों को जानकर स्वयं को इतना योग्य बनाएँ की विकट हालातों में वह अपने जीवन का बचाव कर पाएँ। संविधान प्रदत्त स्वयं रक्षा के अधिकार का गलत प्रयोग न करते हुए इसे जीवन के खतरे का पूर्व आभास हो तो प्रशासन से सुरक्षा कवच का उपयोग करें।

हमारे जीवन की रक्षा का दायित्व हमारे हाथों में है। अतः प्रत्येक भाई-बहिन सबल बने तथा आत्मरक्षा की शिक्षा पाएँ जिससे निडर व बैखोफ होकर जीवन को जीया जा सके। जब आप आत्मरक्षा के बारे में सोचते हैं तो आप शायद ही कभी सोचते हैं कि क्या कोई महिला खुद का बचाव कर सकती है? मुझे पता है, कुछ ऐसा था जिसके बारे में मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि मेरे पास तो मेरे पति हैं। जो मेरी रक्षा करेंगे। लेकिन नहीं हमें सबल बनना चाहिए। यदि हम कामकाजी महिलाएँ हैं। रोज बाहर जाना पड़ता है तो हम कब तक कहाँ तक हमारे पति पर निर्भर रहेंगे और हमें अपना बचाव अपनी सुरक्षा स्वयं को करनी चाहिए। हमारा आत्मविश्वास हमको मजबूत बनाना होगा। हमें हर क्षेत्र में आगे बढ़ना होगा। हर कार्य में हमें दक्षता हासिल करनी होगी।

पुरुषों को हर क्षेत्र हर दृष्टि में आगे माना जाता है। जबकि आज के युग में महिलाएँ पीछे नहीं हैं। केवल उनमें आत्मविश्वास की कमी है। यदि हम महिलाओं में आत्मविश्वास को बढ़ावा देंगे या महिलाओं को हर क्षेत्र में आगे आने का मौका देंगे तो महिलाएँ किसी भी कार्य में पीछे नहीं हैं।

आत्मरक्षा महिलाओं को अपने और अपने परिवार की रक्षा करने में मदद करती है। मेरी राय में महिलाओं के लिए आत्मरक्षा सीखने का यह सबसे महत्त्वपूर्ण कारण है। क्योंकि यह जीवन एवं मृत्यु के बीच का अन्तर है। जबकि पुरुष वर्ग को मजबूत माना गया है। लेकिन यह अनुशासन महिलाओं को उनके विरोधी की कमजोरी का उपयोग करने में मदद करता है। जैसे कि उनकी ऊँचाई और वजन आत्मरक्षा की स्थिति में महत्त्वपूर्ण है। अधिकांश हमलावर मार्शल आर्ट में सफल नहीं होते हैं। यह महिलाओं को एक आत्मरक्षा की स्थिति में बढ़त प्रदान करता है।

उदाहरण के लिए बुजुत्सु की स्टैण्ड अप कला, एक हमलावर प्रतिद्वंद्वी से बचाने-बचने और दूर होने का साधन प्रदान करती है। लक्ष्य रखना और लड़ना जारी रखना नहीं बल्कि मदद पाने के लिए हमलावर से दूर जाना बचाव और हमला करना है। तो आत्मरक्षा से महिलाओं में आत्मविश्वास बढ़ता है। आत्मरक्षा महिलाओं को अनुशासन सिखाती है जो कि उनके जीवन में अन्य सभी क्षेत्रों में काम आती है।

KRP के रूप में ब्लॉक स्तर पर हर वर्ष 100 शिक्षकों को ट्रेंड करती हूँ। इसके अलावा हमारे विद्यालय की कक्षा चार की बालिकाओं को आत्मरक्षा प्रशिक्षण की सभी स्किल्स प्रेक्टिकली बहुत अच्छी तरह से प्रदर्शन करके बताती हूँ। कहने का तात्पर्य यह है कि जब मेरी स्कूल की कक्षा चार की छात्राएँ आत्मरक्षा के सारे गुर सीख कर प्रदर्शन कर सकती हैं तो बालिकाएँ, महिलाएँ भी कर सकती हैं। हमको हमारे आत्मविश्वास को बढ़ाना होगा।

ग्रामीण क्षेत्रों में बालिकाएँ एक गाँव से दूसरे गाँव में पैदल, साइकिल पर पढ़ने जाती हैं। कभी कोई हादसा उनके साथ न हो जाए और कभी खुद को मुकाबला करना पड़े तो पीछे ना हटने और डटकर मुकाबला करने की क्षमता हमें बच्चियों में विकसित करनी होगी। स्वयं की रक्षा स्वयं को करनी होगी और बालिकाओं को इतना मजबूत बनाना होगा कि उनको किसी की मदद की आवश्यकता नहीं हो और ना कभी अपने आप को अकेला महसूस करें। इसलिए मेरा एक मुख्य उद्देश्य यही बना हुआ है कि मैं हर जगह हर गाँव हर शहर में मार्शल आर्ट की गतिविधियाँ सिखाऊ और बालिकाओं को सशक्त और सजग मजबूत बनाऊँ।

विद्यालय के अलावा भी बालिकाओं को पब्लिक पार्क गार्डन में भी विद्यालय समय के पश्चात या पूर्व समय निकाल कर बालिकाओं को आत्मरक्षा की ट्रेनिंग देती हूँ वो भी निशुल्क। क्योंकि बेटी बचेगी तभी बेटी बढ़ेगी। भावात्मक रूप से इस प्रक्रिया का कोई अंत नहीं है। जितना हम सिखेंगे उतना ही हम आगे बढ़ेंगे। आत्मरक्षा ने मुझे शान्त रहना सिखाया। अपनी परिस्थितियों का डटकर मुकाबला करना सिखाया। आत्मरक्षा से हम हमारे जीवन को खुलकर जी सकते हैं। भावात्मक रूप से आत्मरक्षा ने मुझे नियंत्रणता, निपुणता और लचीलापन एवं जागरूकता प्रदान की। हमको हम पर होने वाले हमले का आभास होना अति आवश्यक है। हमें हर जगह सजग रहना चाहिए। आजकल के इस दौर में जहाँ महिलाएँ किसी से कम नहीं हैं। वहीं उन्हें अपनी रक्षा करना भी आना चाहिए। खुद को समय के अनुसार बचाना आना चाहिए। महिलाओं को स्वयं को मजबूत सजग बनाना होगा।

मेरे समाज में जहाँ भी जाती हूँ एक घण्टा या एक दिन आत्मरक्षा की जानकारी बालिकाओं और महिलाओं को जरूर देती हूँ। जितना मुझे आता है उससे मैं ज्यादा देने की कोशिश करती हूँ।

शारीरिक शिक्षक
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय भरक, सहाड़ा,
भीलवाड़ा (राज.)- 311001
मो. 7976463951

आदेश-परिपत्र : अप्रैल, 2021

1. पेंशन प्रकरणों के शीघ्र निस्तारण के सम्बन्ध में दिशा-निर्देश।
2. सभी श्रेणी के कार्मिकों को हितकारी निधि की विभिन्न योजनाओं के अन्तर्गत वर्ष 2020-21 में सहायता राशि का वितरण के क्रम में।

1. पेंशन प्रकरणों के शीघ्र निस्तारण के सम्बन्ध में दिशा-निर्देश।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांकः शिविरा/मा/पेंशन-अ/34925/P-2/2012/दिनांक : 26-02.2021 ● निर्देश ● विषयः पेंशन प्रकरणों के शीघ्र निस्तारण के सम्बन्ध में दिशा-निर्देश।

प्रारम्भिक एवं माध्यमिक शिक्षा विभाग के बकाया पेंशन प्रकरणों की समीक्षा के दौरान ध्यान में आया कि कार्मिकों के पेंशन प्रकरण लम्बे समय से बकाया चल रहे हैं। पेंशन प्रकरण बकाया रहने को गंभीरता से लेते हुए राज्य स्तरीय पेंशन प्रकरण निस्तारण अभियान चलाया जा रहा है। पेंशन प्रकरणों के शीघ्र निस्तारण हेतु निम्न कार्यवाही किया जाना सुनिश्चित करेंः-

सेवानिवृत्त होने वाले कार्मिक स्तर पर की जाने वाली कार्यवाही-

1. राजस्थान सिविल सेवा (पेंशन) नियम 1996 के परिशिष्ट-11 के अनुसार कार्मिक सेवानिवृत्ति तिथि से 24 माह पूर्व सेवापुस्तिका व अवकाश खाता की जाँच कर लें कि जन्मतिथि, सेवा प्रमाणीकरण, पदोन्नति, स्थायीकरण, पदावन्नति, निलम्बन अवधि, असाधारण अवकाश, विदेश सेवा का पेंशन अंशदान, उपार्जित अवकाश आदि का इन्द्राज सही रूप से कर प्रमाणित कराना।
2. कार्मिक का सेवानिवृत्ति/मृत्यु गेच्युटी का नोमीनेशन सही रूप से प्रमाणित कर सेवा पुस्तिका में इन्द्राज करते हुए संलग्न कराना।
3. राजकीय आवास, दीर्घकालीन ऋण का संबंधित विभाग से अदेय प्रमाण पत्र।
4. परिवार के सदस्यों की सूची निर्धारित प्रपत्र-3 में स्वयं के हस्ताक्षर कार्यालयाध्यक्ष द्वारा प्रति हस्ताक्षर कर सेवापुस्तिका में चिपकाना है।
5. सेवानिवृत्ति तिथि से 8 माह पूर्व फार्म 5 (कुलक) तीन प्रतियाँ पूर्ण कर कार्यालयाध्यक्ष को प्रस्तुत कर प्राप्ति रसीद लेंगे। आवेदन समय पर न करने पर पेंशन स्वीकृति में विलम्ब के लिए कार्मिक स्वयं जिम्मेदार होंगे।
6. सेवानिवृत्ति तिथि को कार्यालयाध्यक्ष से अदेय प्रमाण पत्र, एल.पी.सी., जीए-55 प्राप्त करें।
7. राजस्थान सेवा नियम के नियम 160 राज्य सरकार के निर्णय 2 व 3 के अनुसार डूप्लीकेट सेवापुस्तिका प्राप्त करें।

पेंशन प्रकरण निस्तारण हेतु कार्यालयाध्यक्ष/नियुक्ति अधिकारी स्तर पर की जाने वाली कार्यवाही-

1. राजस्थान सिविल सेवा (पेंशन) नियम 1996 के परिशिष्ट-8 के अनुसार सेवानिवृत्ति से 24 माह पूर्व कार्मिक की सेवापुस्तिका में जन्मतिथि, सेवा प्रमाणीकरण, नियुक्ति, पदोन्नति, पदावन्नति, अवकाश खाता, असाधारण अवकाश, निलम्बन अवधि, विदेश सेवा आदि का इन्द्राज प्रमाणीकरण की जाँच कर लें जहाँ अपूर्ण है पूर्ण कराने की कार्यवाही करें।
2. सेवानिवृत्ति तिथि से आठ माह पूर्व कार्मिक से पेंशन स्वीकृति हेतु आवेदन पेंशन कुलक तीन प्रतियों में प्राप्त कर तथ्यों को सेवापुस्तिका के आधार पर प्रमाणित करें।
3. सेवानिवृत्ति तिथि से छह माह पूर्व पेंशन कुलक, सेवापुस्तिका बकाया वसूली हेतु कार्मिक का सहमति घोषणा पत्र, कम्यूटेशन आवेदन पत्र, दीर्घकालीन ऋण व राजकीय आवास यदि है तो अदेय प्रमाण पत्र सहित पेंशन विभाग को भिजवाना सुनिश्चित करेंगे। पेंशन विभाग में पेंशन प्रकरण छह माह पूर्व न भिजवाने पर पेंशन स्वीकृति में विलम्ब के लिए कार्यालयाध्यक्ष व्यक्तिगत रूप से जिम्मेदार होंगे।
4. पेंशन विभाग को प्रकरण भिजवाने से पूर्व अवकाश खाते की प्रमाणित प्रति कार्यालय में रखेंगे।
5. सेवानिवृत्ति तिथि को कार्मिक को अंतिम वेतन प्रमाण पत्र, जीए-55, अदेय प्रमाण पत्र (यदि कोई ड्यूज न हो तो) यदि ड्यूज है तो कार्मिक को उपलब्ध करावें।
6. पेंशन स्वीकृति हेतु प्रकरण पेंशन विभाग को भिजवाने के बाद पेंशन को प्रभावित करने वाली घटना की सूचना तत्काल पेंशन विभाग में देंगे।
7. राजस्थान सेवा नियम के नियम 160 के राज्य सरकार के निर्णय 2 व 3 के अनुसार कार्मिक को डूप्लीकेट सेवापुस्तिका उपलब्ध कराए।
8. कार्मिक के देय परिलब्धियों की जाँच का प्रमाण पत्र लेखाकर्मी से सेवानिवृत्ति तिथि से छह माह पूर्व प्राप्त करें। जहाँ कार्यालयाध्यक्ष के अधीन लेखाकर्मी कार्यरत नहीं है वहाँ मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी/जिला शिक्षा अधिकारी/मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी /संयुक्त निदेशक कार्यालय के वरिष्ठतम लेखाकर्मी से परिलब्धियों को प्रमाण पत्र प्राप्त करें। लेखाकर्मी सेवानिवृत्त होने वाले कार्मिक की सेवापुस्तिका परिलब्धियों की जाँच का प्रमाण-पत्र हेतु तीन कार्यदिवस से अधिक पेंडिंग नहीं रखेंगे।
9. नियुक्ति अधिकारी सेवानिवृत्ति तिथि से एक वर्ष पूर्व सेवानिवृत्ति आदेश जारी करेंगे। इसके लिए अधीनस्थ कार्यालय/कार्मिक से आवेदन आवश्यक नहीं है।
10. सेवानिवृत्त कार्मिक के सेवाभिलेख /पे मेनेजर, आधार कार्ड, पैन कार्ड, एस.एस.ओ. आईडी में नाम, स्पेलिंग एवं जन्मतिथि समान हो यह सुनिश्चित किया जाए।
11. राजस्थान सिविल सेवा नियम (पेंशन) 1996 के नियम 92 के

अनुसार सेवानिवृत्ति के समय कार्मिक से वसूली योग्य राशि का नैसर्गिक न्याय के सिद्धांत के अनुसार कार्मिक को सुनवाई का अवसर देने के बाद वसूली सम्बन्धी आदेश जारी करे।

12. राजस्थान सिविल सेवा नियम (पेंशन) 1996 के नियम 90 के अनुसार विभागीय जाँच/न्यायिक कार्यवाही बकाया है तो तत्काल प्रोविजनल पेंशन स्वीकृत करावें। इस नियम के अन्तर्गत प्रोविजनल पेंशन स्वीकृति हेतु नियुक्ति अधिकारी सक्षम है। किसी सेवा सम्बन्धी अभिलेख में पूर्ति या अन्य कारणों से जहाँ विभागीय/न्यायिक कार्यवाही बकाया नहीं है राजस्थान सिविल सेवा नियम (पेंशन) 1996 के नियम 86 के अनुसार प्रोविजनल पेंशन स्वीकृति हेतु कार्यालयाध्यक्ष सक्षम है।
13. राज्य सरकार के आदेश क्रमांकः एफ.1(9)एफडी/नियम/2015 दिनांक 13.3.2020 के अनुसार सेवानिवृत्त कार्मिक के विरुद्ध विभागीय जाँच विचाराधीन है तो सेवानिवृत्ति तिथि को उपलब्ध उपार्जित अवकाश का राजस्थान सेवा नियम 91बी के अन्तर्गत देय परिलाभ का भुगतान विभागीय जाँच समाप्त होने से पूर्व देय नहीं है।
14. पेंशन प्रकरणों के निस्तारण की मोनिटरिंग के लिए सेवानिवृत्ति आदेश की सूची के आधार पर ब्लॉक, जिला, जिला, मण्डल एवं विभागाध्यक्ष के स्तर पर की जाएगी। ब्लॉक स्तर पर मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी, जिला स्तर पर मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी, मण्डल स्तर पर संयुक्त निदेशक एवं विभागाध्यक्ष स्तर पर वित्तीय सलाहकार नोडल अधिकारी होंगे।
15. किसी कार्मिक की सेवापुस्तिका खो जाए और कार्मिक के पास डूप्लीकेट सेवापुस्तिका उपलब्ध नहीं है तो कार्मिक से आवश्यक दस्तावेज प्राप्त कर डुप्लीकेट सेवापुस्तिका कार्यालयाध्यक्ष नियुक्ति अधिकारी से अनुमति लेकर बनाएँगे।
16. दो माह से अधिक समय से बकाया पेंशन प्रकरण जिनके प्रोविजनल पेंशन स्वीकृत हो चुकी है या नहीं हुई है, के निस्तारण हेतु कार्मिक जहाँ से सेवानिवृत्त हुआ है वहाँ के कार्यालयाध्यक्ष को प्रभारी अधिकारी मनोनीत करने का आदेश मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी स्तर पर जारी किए जाकर सात दिवस में प्रकरण में विलम्ब के कारण व वर्तमान स्थिति की प्राप्त कर आगामी मासिक प्रतिवेदन में अंकित करेंगे। जो प्रकरण निस्तारण योग्य है उन्हें निस्तारण की कार्यवाही सुनिश्चित करेंगे।

उपर्युक्त निर्देशों की पालना सुनिश्चित करें।

● **निदेशक,** प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

2. सभी श्रेणी के कार्मिकों को हितकारी निधि की विभिन्न योजनाओं के अन्तर्गत वर्ष 2020-21 में सहायता राशि का वितरण के क्रम में।

● कार्यालय, निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर
●अनौपचारिक टिप्पणी

हितकारी निधि, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान बीकानेर द्वारा विभाग के सभी श्रेणी के कार्मिकों को हितकारी निधि की विभिन्न योजनाओं के अन्तर्गत वर्ष 2020-21 में नियमानुसार सहायता राशि का वितरण किया गया है। शिविरा के आगामी अंक में प्रकाशित करने का श्रम करें।

(अप्रेल 2020 से मार्च 2021)

क्र. सं.	योजना का नाम	प्रकरणों की संख्या	राशि
1.	मृतक कर्मचारियों के आश्रितों को दी गई सहायता	331	4,80,69,900/-
2.	बालिका विवाह उपहार योजना	835	91,85,000/-
3.	अजमेर बोर्ड की सैकण्डरी/ वरिष्ठ उपाध्याय में 70% या अधिक अंक प्राप्त करने पर सहायता	395	43,45,000/-
4.	कार्मिकों के पुत्र/पुत्री के व्यवसायिक शिक्षा में अध्ययन के क्रम में सहायता	288	28,80,000/-
5.	शिक्षा विभाग के कार्मिकों की बालिकाओं के उच्च शिक्षा में अध्ययनरत होने पर ऋण	05	2,50,000/-

● **(पितराम सिंह), उप निदेशक** (प्रशासन) एवं सचिव हितकारी निधि माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

आवश्यक सूचना

- **'शिविरा' मासिक पत्रिका में रचना भेजने वाले अपनी रचना के साथ व्यक्तिगत परिचय यथा- नाम, पता, मोबाइल नंबर, बैंक का नाम, शाखा, खाता संख्या, आईएफएससी. नंबर एवं बैंक डायरी के प्रथम पृष्ठ की स्पष्ट छायाप्रति अवश्य संलग्न करके भिजवाएँ।**
- **कुछ रचनाकार एकाधिक रचनाएँ एक साथ भेजने पर एक रचना के साथ ही उक्त सूचनाएँ संलग्न कर दायित्वपूर्ति समझ लेते हैं। अतः अपनी प्रत्येक रचना के साथ अलग से पृष्ठ लगाकर प्रपत्रानुसार अपना विवरण अवश्य भेजें। इसके अभाव में रचना के छपने एवं उसके मानदेय भुगतान में असुविधा होती है।**

-वरिष्ठ संपादक

राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उदयपुर
(प्रभाग–4, शैक्षिक प्रौद्योगिकी प्रभाग राजस्थान अजमेर)

शिक्षावाणी मासिक प्रसारण कार्यक्रम (दिनांक 01.04.2021 से 19.04.2021 तक)

प्रसारण समय–प्रातः 11.00 से 11.55 तक

			प्रारंभ से 15 मिनट		16 मिनट से 35 मिनट तक							36 मिनट से 55 मिनट तक						
क्र.स	दिनांक	वार	मीना की कहानियां	डाइट/ यूनिसेफ	कक्षा	विषय पाठ्यपुस्तक	पाठ क्रमांक	पाठ का नाम	डाइट/ यूनिसेफ	आलेखनकर्ता का नाम श्री/श्रीमती/ सुश्री	समीक्षक का नाम श्री/श्रीमती /सुश्री	कक्षा	विषय पाठ्यपुस्तक	पाठ क्रमांक	पाठ का नाम	डाइट/ यूनिसेफ	आलेखनकर्ता का नाम श्री/श्रीमती /सुश्री	समीक्षक का नाम श्री/श्रीमती /सुश्री
1	1.04.2021	गुरूवार	जासूस धर्मचन्द	यूनिसेफ	7	विज्ञान	12	पादपों में जनन	उदयपुर	अनिता त्यागी	डॉ. भारती शर्मा	10	संस्कृत	–	संधि –विसर्ग संधि	उदयपुर	लक्ष्मी खटीक	सत्य प्रिय
2	3.04.2021	शनिवार	दोस्ती में	यूनिसेफ	8	विज्ञान	13	ध्वनि	बीकानेर	दीपक मेहरा	अनुराधा सामी	9	संस्कृत	11	पर्यावरणम्	बीकानेर	गायत्री सुथार	सुशीला चौधरी
3	05.04.2021	सोमवार	गहरी दोस्ती	यूनिसेफ	7	सामाजिक विज्ञान–सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन	4	लड़के और लड़कियों के रूप में बड़ा होना	जयपुर	वन्दना यादव	महेश बाबू शर्मा	10	हिन्दी क्षितिज (गद्य)	15	मोहन राकेश आखिरी चट्टान	जयपुर	मुकेश कुमार बबेरवाल	विजयश्री कंवर
4	06.04.2021	मंगलवार	चतुर तारा	यूनिसेफ	7	हिन्दी वसंत भाग द्वितीय	10	अपूर्व अनुभव	जोधपुर	वीणा कच्छवाह	सुश्री शमीम	10	सामाजिक विज्ञान	19	सड़क सुरक्षा शिक्षा	जोधपुर	मंजु माकड़	मजाहिर सुल्तान जई
5	07.04.2021	बुधवार	म्यांऊ बिल्ली	यूनिसेफ	8	हिन्दी	17	बाज और सांप	उदयपुर	नरेश पंवार	नीता यादव	12	जीव विज्ञान	24	मानव का रक्त परिसंचरण तंत्र	उदयपुर	उमंग शर्मा	सुमन पालीवाल
6	08.04.2021	गुरूवार	सबसे तेज	यूनिसेफ	6	सामजिक अध्ययन–हमारे अतीत	6	नए प्रश्न नए विचार	बीकानेर	सुनीता स्वामी	रितु चौधरी	12	हिन्दी अनिवार्य	2	भ्रमर गीत	बीकानेर	इला पारीक	लक्ष्मी नारायण स्वामी
7	09.04.2021	शुक्रवार	एक खास हुनर	यूनिसेफ	8	रूचिरा तृतीय भागः	8	संसार सागरस्य नायकाः	जयपुर	डॉ नौरतन शर्मा	डॉ राजेन्द्र कुमार सैनी	12	राजनीति विज्ञान खण्ड–ब	1	राजनीतिक समाजीकरण	जयपुर	संतोष यादव	संतोष मीणा
8	10.04.2021	शनिवार	खेल या घर	यूनिसेफ	5	विज्ञान	4	मिलकर करे सफाई	जोधपुर	डॉ. तपस्विनी व्यास	मजाहिर सुल्तान जई	12	भौतिक विज्ञान	13	प्रकाश वैद्युत प्रभाव एवं द्रव्य तरंग	जोधपुर	प्रिन्स व्यास	डॉ. श्याम सुन्दर सोलंकी
9	12.04.2021	सोमवार	पेड़ को बचाओ	यूनिसेफ	8	सामाजिक विज्ञान	1	संसाधन	उदयपुर	पुर्णिमा सोगानी	श्वेता याज्ञनिक	10	सामाजिक विज्ञान	7	राज्य सरकार	उदयपुर	अनिता भाणावत	नीता पटेल
10	1504.2021	गुरूवार	आदत से मजबूर	यूनिसेफ	6	संस्कृत	8	सूक्तिः स्तबकः	बीकानेर	संदीप शर्मा	सीमा शर्मा	12	हिन्दी सा0	17	पाजेब	बीकानेर	रेणु वर्मा	लक्ष्मी नारायण स्वामी
11	16.04.2021	शुक्रवार	लाल रेल नीली रेल	यूनिसेफ	6	विज्ञान	11	प्रकाश छायाएं एवं परावर्तन	जयपुर	तृप्ति शुक्ला	निधि अजय पच्चीसीया	9	हिन्दी क्षितिज	12	माखन लाल चतुर्वेदी कैदी और कोकिला	जयपुर	श्रद्धा महर्षि	महेश कुमार शर्मा
12	17.04.2021	शनिवार	शिक्षक दिवस	यूनिसेफ	7	संस्कृत (रूचिरा)	13	अमृतं संस्कृतम्	जोधपुर	महेश कुमार दवे	मजाहिर सुल्तान जई	10	विज्ञान	19	जैव विविधता एवं इसका संरक्षण	जोधपुर	रीना चौहान	मजाहिर सुल्तान जई
13	19.04.2021	सोमवार	बांसुरी दिवस	यूनिसेफ	6	सामाजिक अध्ययन हमारे अतीत	9	व्यापारी,राजा और तीर्थ यात्री	बीकानेर	संदीप कुमार	रितु चौधरी	12	इतिहास	5	उपनिवेशवादी आक्रमण	बीकानेर	रितु चौधरी	ओम प्रकाश विश्नोई

(इन्द्रा सोनगरा)
प्रभारी अधिकारी, शै. प्रो. प्रभाग–राज. अजमेर

जीवन - संस्कार

विद्यालयी शिक्षा में नैतिक शिक्षा की आवश्यकता

❒ पीराराम शर्मा

आज समाज में शिक्षा का व्यापक प्रचार-प्रसार हो रहा है। मनुष्य इस संसार का सर्वश्रेष्ठ प्राणी है। स्वामी विवेकानन्द के अनुसार हमें उस शिक्षा की आवश्यकता है जिसके द्वारा चरित्र का निर्माण होता है। मस्तिष्क की शक्ति व बुद्धि का विकास होता है और मनुष्य अपने पैरों पर खड़ा हो सकता है।

यदि हम अपने मन से यह प्रश्न करें कि वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में स्वामी विवेकानन्द जी के सन्देश को कितना अपना सके, कितना अभी करना शेष है। आज साक्षरों की भीड़ दिखाई देती है लेकिन शिक्षितों के दर्शन नहीं होते हैं। एनीबीसेन्ट के शब्दों में वर्तमान शिक्षा का स्वरूप आभासित होता दिखाई देता है। हमारे विद्यार्थी परीक्षा भवन में अपना सारा ज्ञान तीन घंटे में उड़ेल देते हैं और फिर खाली दिमाग लिए घूमते रहते हैं।

आज हम विज्ञान आधारित संसार में निवास करते हैं वर्तमान समय में हमारे परिवार समाज में भी उसी गति से परिवर्तन हो रहा है जिससे आज की शिक्षा केवल किताबी ज्ञान प्रदान कर रही है। हमारे अपने धार्मिक विचार नैतिक आदर्श आध्यात्मिक मूल्य व सामाजिक मूल्यों से दूर होते जा रहे हैं। जिसके कारण आज अनेकानेक समस्याएँ खड़ी हो गई जिससे अखण्ड व्यक्तित्व का निर्माण नहीं हो रहा है।

येषाम् न विद्या न तपो न दानम्,
न ज्ञानम् न शीलम न गुणो न धर्मम्।
ते मृत्युलोके भूवि भारभूताः मनुष्य रूपेण मृगाश्चरन्ति।।

अर्थात जिसके पास न विद्यारूपी धन है, न तप रूपी शक्ति है, न उदारता है, न ज्ञान है, न चरित्र की पवित्रता है, न गुणों भरा आचरण है और न ही धार्मिक प्रवृत्ति है, वे इस धरती पर भार स्वरूप हैं, ऐसे लोग मनुष्य के वेष में मृग हैं।

प्रत्येक मानव निरीह प्राणी के रूप में जन्म लेता है, मनुष्य रूप में उसकी पहचान तभी होती है, जब मानवीय व नैतिक मूल्य उसे अलंकृत करते हैं। मूल्य धारण करते ही मानव श्रेष्ठ बनता है। वर्तमान समय में मानवीय मूल्यों में निरन्तर गिरावट आ रही है। जीवन पद्धति में मनुष्य के स्वभाव में विचित्र बदलाव दृष्टिगोचर हो रहा है।

युवाओं एवं बच्चों में नम्रता का अभाव, असहिष्णुता में वृद्धि, पारस्परिक सामंजस्य और सौहार्द्र का अभाव स्पष्ट देखा जा सकता है। सहिष्णुता के अभाव में बात-बात में टकराव; कलह और अलगाव की स्थिति उत्पन्न हो गई है। पारिवारिक और सामाजिक जीवन कष्टदायक और दुःखमय हो गया है, कोई नहीं सोचता कि जीवन में कठोरता को छोड़कर सहिष्णुता एवं नम्रता से उसे मधुर, सुखमय और शांतिपूर्ण बनाया जा सकता है।

झूठे अहं, अक्खड़पन, उद्दण्डता व असहिष्णुता के बढ़ने से अशांति का साम्राज्य हो गया है। प्रत्येक मनुष्य सुख का उपभोग करना चाहता है, इस कारण वह मूल्यों एवं आदर्शों से कोसों दूर चला गया है। समाज में असहिष्णुता बढ़ती जा रही है, लोगों के अहं टकराते रहते हैं। व्यक्ति किसी के सामने झुकने को तैयार नहीं, सहनशीलता का गुण मनुष्य के चरित्र में बहुत कम दिखाई देता है। नम्रता को कमजोरी का चिह्न माना जाता है, नम्र और सीधे-सादे व्यक्ति को लोग कमजोर, पिछड़ा व पुरातनपंथी समझ कर उपहास करते हैं। इसके विपरीत उद्दण्ड और कठोर स्वभाव वाले व्यक्ति को प्रभावशील रौबदार कहकर उसकी प्रशंसा करते हैं। घर, परिवार और समाज में उनके रौब का आतंक कम रहता है। इस आंतक में लोग उचित और अनुचित का अन्तर नहीं कर पाते। कई ऐसे कार्य हो जाते हैं जो बाद में पश्चाताप के कारण बनते हैं।

जीवन में दीर्घकालिक श्रद्धा, आदर व शांति पाने के लिए सभी को सहिष्णु एवं विनम्र बनना होगा। सहिष्णुता जीवन का आभूषण है। सहिष्णुता मानवीय अंतरात्मा का वह सम्बल है जिससे मानव क्लेश, कष्ट आदि को धैर्यपूर्वक सह लेता है अर्थात मानव का वह गुण जिससे प्रतिकार का सामर्थ्य रखते हुए भी हिंसा का आश्रय नहीं लेता है।

भारत में जीवन मूल्यों को महत्त्व देने के लिए विचारना होगा कि इनका अवमूल्यन क्यों हो रहा है? इनके प्रति, प्रतिबद्धता क्षीण क्यों हो रही है? चेतना को उद्‌बुद्ध करने वाले कतिपय मूल्य एवं महत्त्वपूर्ण तत्व क्यों खो रहे हैं? पुरखों द्वारा पोषित, युगों पुराने जीवन मूल्यों को भुला दिया है। आज के भौतिकतावादी युग में स्वार्थ लिप्सा में आकंठ डूबे हुए मनुष्य में क्षमा, दया, परोपकार, उदारता आदि नैसर्गिक गुणों का सर्वथा अभाव पाया जाता है।

विश्व व्यापीकरण के इस युग में कोई भी देश, विदेशी प्रभाव से अछूता नहीं रह सकता। सांस्कृतिक प्रदूषण के कारण भारत पर भी भौतिक सुखों की दौड़ का नशा छाने लगा है। समाज में अकेलापन, नीरसता, लक्ष्यहीनता, भाग-दौड़ और तनाव का वातावरण व्याप्त हो गया है। गिरते मानवीय मूल्यों ने लोगों के आचरण व विचारों को प्रदूषित किया है। मनुष्य में संयम, नैतिकता और उत्तरदायित्व की भावना लुप्त हो गई है।

आज नैतिक शिक्षा की आवश्यकता समाज द्वारा अनुभव की जा रही है। यदि हम बालक को सफल व्यक्ति उत्तम नागरिक बनाना चाहते हैं तो चरित्र निर्माण आवश्यक है। इसके लिए नैतिक शिक्षा की आवश्यकता है।

आज हमारे सामाजिक वातावरण में अनेक दोष आ गए हैं, नैतिक शिक्षा द्वारा उनका उन्मूलन कर एक सभ्य समाज का निर्माण किया जा सकता है। नैतिक शिक्षा के माध्यम से बालकों में अनन्त गुणों का विकास होता है, जैसे उत्तरदायित्व की भावना, उत्तम आदर्शों की प्राप्ति, जीवन दर्शन का निर्माण आदि।

Values are never taught but caught

हममें से प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी रूप में नैतिक नियमों, नैतिकता के उसूलों और मूल्यों के बारे में बात करते हैं। चाहे वे स्वर्ग की ऊँचाइयां हो या समुद्र की गहराई। ऐसी कोई जगह नहीं जहाँ नैतिक नियम व मूल्य न हो।

वर्तमान समय में आधुनिक समाज का एक बड़ा भाग नैतिक अराजकता में जी रहा है। आज मूल्यों का ह्रास, निजी एवं सार्वजनिक जीवन के हर क्षेत्र में हो रहा है।

आधुनिक काल में नैतिक मूल्यों को अनवरत रूप से अनदेखा किया जा रहा है। नैतिक मूल्यों के अभाव में सभ्यता की घड़ी उल्टी चल पड़ेगी और एक समय ऐसा आएगा जब सभ्यता ही नष्ट हो जाएगी। मूल्य की आवश्यकता का नारा हर क्षेत्र में उठ रहा है। प्रत्येक व्यक्ति हिंसा, बढ़ती सामाजिक परेशानियों और सामाजिक समरसता में कमी से प्रभावित है।

इन सभी समस्याओं से लड़ने की आवश्यकता तथा मानव मूल्यों से सम्बन्धित विचारों एवं दृष्टिकोण में परिवर्तन लाना आवश्यक है। नैतिक मूल्यों की गिरावट समाज में बढ़ते अपराध और घटती मर्यादाओं को एक मशहूर शायर ने इस प्रकार व्यक्त किया है।

सभी कुछ हो रहा है, इस तरक्की के जमाने में,
मगर ये क्या गजब है, आदमी इंसा नहीं होता।।

इन सबका एक ही उपचार है वह नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों की बचपन में ही शिक्षा हो। मूल्य आधारित जीवन के अनुभव की अंग बननी चाहिए। मूल्य आधारित शिक्षा को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाने की कोशिश करने होगी। हमें नैतिक व आध्यात्मिक मूल्यों की शिक्षा पर जोर देना होगा। यह जरूरी है कि बाल्यावस्था में मूल्यों को विकसित किया जावे। मानसिक और शारीरिक दोनों प्रकार की आदतें बाल्यावस्था में ही विकसित होने पर जीवन पर स्थायी प्रभाव डालती है।

पुरानी कहावत के अनुसार

- If you want to plant for a year plant Corn.
- If you want to plant for 30 year plant tree.
- But If you want to plant for 100 year plant men.

उजले कल के लिए हमें, हमारे आज को रोशन करना पड़ेगा। एक ऐसी पीढ़ी के लिए नैतिकता, अच्छे मूल्य, ईमानदारी, सौहार्द्र एवं एकता को समर्पित हो।

हमें एक बालक और फिर एक युवा का ध्यान रखना होगा। तब मध्य आयु वर्ग अपने आप अपना ध्यान रखेगा क्योंकि आज का छात्र ही कल के जीवन में विभिन्न क्षेत्रों का सूत्रधार होगा। कल का हमारा राष्ट्र वही होगा जो विद्यालयों, महाविद्यालयों और विश्व विद्यालयों में आज के आज युवा इसे बनाएँगे। हमारा भविष्य अपनी सुन्दरता, स्वामित्व महत्ता के लिए उस नींव पर टिका है जो आज हमारे युवा को शिक्षा और प्रशिक्षण के रूप में हम दे रहे हैं।

हमें सभी शिक्षण संस्थानों, गाँव के प्राथमिक स्कूल से लेकर विश्व विद्यालय तक ऐसी शिक्षा देनी होगी जो एक ऐसी पीढ़ी तैयार करे जो इस देश के लिए एक मिशाल बन सके। पाठ्यक्रम में नैतिक और धार्मिक मूल्यों की शिक्षा को सम्मिलित कर दिया जाए तो शिक्षा का उद्देश्य प्राप्त किया जा सकता है। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए केवल मूल्यों की शिक्षा पाठ्यक्रम निर्धारित कर देना ही उपयुक्त नहीं है बल्कि यह शिक्षा संस्थान के हर कार्यक्रम में होनी चाहिए।

यह शिक्षकों का कर्त्तव्य है कि वे छात्रों को मूल्यों के बारे में बताएँ। उनके महत्त्व को समझाएँ और रोजमर्रा की जिन्दगी में उनका पालन करें। दुर्भाग्यवश हमारे शिक्षा तंत्र में विषयों के ज्ञान पर अधिक बल दिया जाता है और आत्मिक एवं चरित्र के विकास पर बहुत कम ध्यान दिया जाता है। आज प्रत्येक कक्षा के स्तर पर नैतिक शिक्षा को प्रदान किया जाना आवश्यक है, इसके लिए निम्न उपाय किए जाने चाहिए-

1. छात्रों को महान विचारकों, दार्शनिकों, महापुरुषों की जीवनी एवं शिक्षाओं से अवगत करवाया जाना चाहिए।
2. विद्यालय में प्रतिदिन प्रार्थना सभा में मौन प्रार्थना, धार्मिक गीत, प्रेरक प्रसंग, किसी धार्मिक ग्रंथ आदि के बारे में बताना चाहिए।
3. छात्रों के समक्ष मुख्य ध्येयों से सम्बन्धित कला, स्थापत्य कला को दृश्य-श्रव्य सामग्री के रूप में प्रस्तुत करना चाहिए।
4. छात्रों को समाज सेवा की भावना से जोड़ा जाना चाहिए जिससे बालक अपने उत्तरदायित्व को समझ सकेगा।
5. छात्रों को सत्यता, ईमानदारी, दया, सेवा, सम्मान, सहानुभूति आदि गुणों की शिक्षा प्रदान करनी चाहिए।
6. छात्र-अध्यापकों के मध्य नैतिक मूल्य, धार्मिक ग्रंथों आदि पर विचार विनिमय होना चाहिए।
7. छात्रों को भारतीय संविधान के आधारभूत सिद्धांतों की शिक्षा देनी चाहिए, व्यक्ति के समान, समानता, सामाजिक न्याय, लोक कल्याणकारी राज्य की स्थापना आदि का ज्ञान प्रदान करना चाहिए।
8. छात्रों में नैतिक, सामाजिक, आध्यात्मिक मूल्यों का विकास करने के लिए विभिन्न देशों की संस्कृतियों से परिचय करवाना चाहिए।
9. शिक्षक व अभिभावक गण को बालक के साथ आत्मीय सम्बन्ध स्थापित करने चाहिए।
10. मनोवैज्ञानिक विधि से संस्कार, परिष्कार व अभिवृद्धि में सहयोग करना चाहिए।
11. गलत आदत, व्यवहार, अनीतिपूर्ण कार्य को निरुत्साहित करना चाहिए।
12. भौतिकतावाद के दुष्प्रभाव स्पष्ट करने चाहिए।
13. दादा-दादी, नाना-नानी तथा परिवार के मुखिया, बच्चों को घरों में संस्कार पूर्ण शिक्षा दे तथा शिक्षक विद्यालयों में इन संस्कारों को पुष्पित-पल्लिवित करें। मूल्यों की स्थापना आचरण से प्रभावी होते हैं। शिक्षक और माता-पिता का सदाचरण ही विद्यार्थी को संस्कारित करता है।

आज हम 21 वीं सदी में प्रवेश कर चुके हैं ऐसे समय में सृजन शिल्पियों का योगदान है कि छात्रों को पुरुषार्थी बनाकर राष्ट्र की मुख्य धारा से जोड़ें। आज आवश्यकता है कि हम विज्ञान व आध्यात्म का समन्वय करें। सेवा, साधना, ईमानदारी से अपने वर्तमान की बाँधे, उसका परिष्कार करें, इस भाव को साकार करने का प्रयास करें, जो भारत को विश्व मंच पर सशक्त राष्ट्र के रूप में स्थापित कर दे। यह पुनीत कार्य नैतिक शिक्षा के बिना पूर्णता को प्राप्त नहीं कर सकेगा।

किसी कवि ने कहा है-

हर सवाल का जवाब है दो शब्दों के संदेश में।
मानवीय मूल्यों की आवश्यकता है आज के परिवेश में।

वरिष्ठ सहायक
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय सनावड़ा, बाड़मेर (राज.)
मो: 9413183842

स्वःविश्वास

आत्मविश्वास जो हमारे भीतर ही है

❒ राजकुमार बुनकर 'इन्द्रेश'

आंतरिक शक्ति के बल पर व्यक्ति किसी कार्य में विजय या जीत प्राप्त करता है उसे ही आत्मविश्वास कहते हैं। यही आत्मविश्वास की शक्ति मानव को दुःख में सुख का आभास दिलाती है, विपत्ति के दिनों में मानव के मन में आशा का दीप जलाकर रखती है। अतः मनुष्य का पथ-प्रदर्शक आत्मविश्वास ही होता है, जिसकी ज्योति को कभी भी मंद नहीं पड़ने देना चाहिए। आत्मविश्वास वह आध्यात्मिक शक्ति है, जिससे आप आत्मरक्षा में समर्थ होते हैं। अतः सभी माता-पिता इस कर्त्तव्य का निर्वाह करें कि वे अपने बच्चों में आत्मविश्वास को कमजोर न होने दें, बच्चों से ऐसी बात न करें जिससे उनका आत्मविश्वास कमजोर होता हो। क्योंकि इससे बच्चों में हीन भावना पनपती है और वे अपने आप को कमजोर समझने लगते हैं। मानव में आज जहाँ भी निराशा नजर आती है उसका मुख्य कारण हीनभावना ही है। आत्मविश्वासी व्यक्ति स्वयं के प्रति बहुत ही दृढ़ विश्वासी होता है, वह अपनी योग्यता को पहचान कर देखा देखी से परे रहता है और अपने आत्मसम्मान को बनाए रखता है। आत्मविश्वासी लोग स्वयं के प्रति दृढ़ विश्वासी होते हैं, वे अपनी योग्यता का मूल्य जानकर भेड़ चाल से दूर रहते हैं और अपने आत्मसम्मान की रक्षा करते हैं आत्मविश्वास बढ़ाने के लिए सबसे पहले अपने मन में विश्वास जगाना होगा। आत्मविश्वासी व्यक्ति कभी भी जल्दबाजी से काम नहीं करता है, वह समय को पहचानता है और धैर्य से काम लेता है। किसी भी व्यक्ति का महान या साधारण होना उसके आत्मविश्वास पर निर्भर करता है और विश्वास एक आध्यात्मिक शक्ति होती है।

मनुष्य के जीवन में उसकी पराजय का मूल कारण आत्मविश्वास का अभाव होता है। अन्य लोग उस पर तभी विश्वास करेंगे जब वह आत्मविश्वासी होगा। आत्मविश्वास का अभाव ही मन में भय या संशय को जाग्रत करता है। आत्मसम्मान से ही आत्मविश्वास जगता है। आत्म सम्मान से ही व्यक्ति अपनी योग्यता का मूल्य समझते हैं और उसी के अनुसार दूसरों से व्यवहार करते हैं, आत्मविश्वासी व्यक्ति कभी भी अहंकारी नहीं होता है।

आत्मविश्वास अपने आप नहीं बढ़ता, उसके लिए व्यक्ति को अपने मन में विश्वास जगाना पड़ता है, उसे दृढ़ करना होता है। अपने मन में यह ठानना पड़ता है कि इस संसार में महान कार्य अधिकांशतः किसी एक व्यक्ति ने ही किए हैं। स्वामी विवेकानन्द ने भी लिखा है कि 'आत्मविश्वास के समान कोई मित्र नहीं होता है, आत्मविश्वास ही जीवन में उन्नति का प्रथम पायदान है।'

कोई भी व्यक्ति आत्मविश्वास के अभाव में किसी को भी प्रभावित नहीं कर सकता। आत्मविश्वास की कमी ही मनुष्य की असफलताओं की जड़ होती है। हम यह जानते हैं कि कार्य स्थल पर मेहनत और हुनर सबसे ज्यादा काम आता है, लेकिन बिना आत्मविश्वास के न तो काम संतुष्टि मिलती है और न ही किया गया काम सफल हो पाता है। इसलिए आत्मविश्वासी होना सबसे ज्यादा जरूरी है। किसी भी व्यक्ति को आत्मविश्वासी बनने के लिए जरूरी है कि-

1. अपनी परम्परागत कार्य शैली से बाहर निकलें:- हर व्यक्ति की अपनी एक परम्परागत कार्य शैली होती है जिसमें वह आराम से अपना काम करता रहता है। ऐसे व्यक्ति को अगर कोई नया काम सौंप दिया जाए तो वह घबरा जाते हैं और उसे करने से मना कर देते हैं। इसलिए हमेशा चुनौतियों को स्वीकार करना सीखें और आगे बढ़े, जैसे ही आप कुछ नया करना शुरू करेंगे आपके अंदर आत्मविश्वास स्वतः ही आने लगेगा।

2. उचित समय पर फैसले करें:- भाग-दौड़ भरी जिंदगी में अब सोचने समझने के लिए बहुत कम मौके मिलते हैं। इसलिए जल्द से जल्द सही फैसले लेने की क्षमता विकसित करनी चाहिए। जब आप गंभीर फैसले लेने लगेंगे तो स्वतः ही आप में आत्मविश्वास आना भी शुरू हो जाएगा।

3. आत्मविश्वासी लोगों के सम्पर्क में रहें:- अगर आपने ऐसे लोगों को अपना दोस्त बनाया हुआ है जिनमें आत्मविश्वास की कमी है तो ऐसे दोस्तों से दूर रहना ज्यादा बेहतर है। ऐसे लोगों से मिलना शुरू करें जो आपको अपने कामों से प्रभावित करने वाले हों, जो आत्मविश्वास से सराबोर हों। उनकी कार्यशैली से आप में भी आत्मविश्वास जगेगा।

4. सोच हमेशा सकारात्मक बनाए रखें:- कुछ लोग ऐसे होते हैं जो हमेशा अपनी क्षमता से ज्यादा काम कर लेते हैं, वहीं कुछ लोग क्षमता के अनुसार भी नहीं कर पाते, अगर आपको कुछ नए प्रोजेक्ट ऑफिस में करने को मिले हैं तो यह न सोचे कि आप से नहीं होगा, नकारात्मक विचार हमेशा आपको आगे बढ़ने से रोकता है, सकारात्मक सोच बनाकर कार्य प्रारम्भ कर दें। खुद में विश्वास करके चुनौती भरे कामों को भी किया जा सकता है, एक बार सफलता मिलने पर कैसे आप में स्वतः ही आत्मविश्वास जग जाएगा।

5. खुद के बारे में सोचे:- हर दिन अपने लिए ऐसा समय निकालें जिसमें आप खुद के बारे में सोचते हो। जैसे कि आप क्या पाना चाहते हैं? भविष्य के क्या प्लान हैं? अगर आपको नए मौके मिलेंगे तो उसके लिए तैयार हैं या नहीं, ये कुछ ऐसी बाते हैं जो आपके आत्मविश्वास को बढ़ाने में मदद करेगी, जब आप सोचेंगे तो पाएँगे कि आप खुद के बारे में कितना कम जानते हैं, आप में तब तक आत्मविश्वास नहीं आ सकता जब आप खुद के बारे में सब कुछ न जान लें।

आत्मसम्मान, आत्मविश्वास व आत्मनिर्भरता ये तीनों गुण एक दूसरे के पूरक हैं, आत्मसम्मान से आत्मविश्वास बढ़ता है और आत्मविश्वास से आत्मनिर्भरता आती है। मनुष्य को यह नहीं सोचना चाहिए कि वह औरों की राय में क्या है उसे इस बात की परवाह नहीं करनी चाहिए कि मैं स्वयं अपनी राय में क्या हूँ। प्लेटो ने लिखा है कि जो व्यक्ति आत्मनिर्भर है, वह सुखी जीवन व्यतीत करने के लिए समस्त व्यवस्था कर लेता है।' आत्मविश्वास को जाग्रत करने का एक सफल तरीका यह है कि आप सफल लोगों के कार्यों को सकारात्मक रूप से देखो, उनकी उपलब्धियों पर, उनकी सफलताओं पर गौर करो। उससे प्रेरणा लो, उत्प्रेरित होओ। अपने अंतर्मन को टटोलो,

अपनी कमियों को खोजो। आपका सोया हुआ आत्मविश्वास स्वतः ही जाग जाएगा। आप अनवरत सफलताएँ पाने लगेंगे। उस समय सचेत रहे कि आप में अहंकार न समा जाए। क्योंकि विनय को यदि विवेक का साथ मिल जाए तो वह अहंकार को भस्म कर देता है और नए प्रकाश से दमकता है।

आपका आत्मविश्वास ऐसा होना चाहिए जो आपको निम्न स्तर से ऊपर उठाए और दूसरों के तिरस्कार से मुक्त कराए। अतः आप सदैव आत्मसम्मान की चाहत रखें। जिससे आपके मन में आत्मविश्वास जाग्रत हो व आप आत्मनिर्भर बन सकें। अंत में सैमुअल जॉनसन का कथन स्मरण रखना चाहिए कि 'किसी महान उत्तरदायित्व के लिए आत्मविश्वास की प्रथम आवश्यकता है।' अतः आत्मविश्वास मनुष्य के भीतर ही होता है उसे जाग्रत करने की आवश्यकता है।

प्रधानाचार्य
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बिजौरी, बड़ी
कुशलगढ़, बाँसवाड़ा (राज.)
मो: 9001311561

पुस्तकें

पुस्तकें होती हैं अमर
इसमें सजे होते हैं
मोती जैसे अक्षर
पुस्तकें कभी नष्ट नहीं होतीं
कभी आकर्षण नहीं खोतीं
एक दीवाल से दूसरी दीवाल तक
ठुँसी हुई, जमी हुई
गलियारे में रसोई में
दरवाजे-खिड़कियों में आलमारी में
घर के हर कोने में भरी पड़ी हैं
सैकड़ों, हजारों पुस्तकें
जैसे अंतरिक्ष में एक-एक नक्षत्र
व्यवस्थित हो पुस्तकें देती हैं संस्कार
सिखाती हैं शिष्टाचार
लोग मरते हैं, जन्म लेते हैं
आते हैं, जाते हैं
परन्तु पुस्तकें जन्म लेने के बाद
कभी नहीं मरतीं
वे काल से नहीं डरतीं

गौरीशंकर वैश्य विनम्र
117 आदिलनगर, विकासनगर, लखनऊ-226022
मो: 09956087585

परिवार और संस्कार

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में संयुक्त परिवार की भूमिका

❐ शशिकांत द्विवेदी 'आमेटा'

सामाजिक जीवन अनसुलझे तनावों, संघर्षों और हिंसा से खोखला हो गया। समाज में असहिष्णुता बढ़ रही है, सहनशीलता गायब हो गई है। भारतीय हमेशा उच्चतम मूल्यों को महत्त्व देते रहे हैं तो विचारना होगा कि इनका अवमूल्यन क्यों हो रहा है? इसकी प्रतिबद्धता क्षीण क्यों हो रही है? विदेशी सभ्यता व संस्कृति के आवरण में हमारी प्राचीन परम्पराएँ दिन-प्रतिदिन धूमिल होती जा रही हैं। आज शाश्वत प्रेम की परिभाषा बदल गई है, पारिवारिक सम्बन्धों के अर्थ में बदलाव आ गया है। समाज में अकेलापन, नीरसता, लक्ष्यहीनता, तनाव का वातावरण व्याप्त हो गया है। यह कैसी विडम्बना है कि मनीषियों के भारत में लोगों का जमीर, अन्तःकरण व आत्मा सुसुप्त व असह्य अवस्था में निद्रालीन है। चिन्तनीय है- आज परिवार और समाज की दुर्दशा के लिए जिम्मेदार कौन है? इस अवस्था में मानव को पहचानने का श्रेय परिवार तथा समुदाय को जाता है।

समाज के स्वरूप में कुछ न कुछ परिवर्तन आता रहता है। समाज का जो वर्तमान स्वरूप है, उसमें जिस प्रकार की अराजकता है, उसने एक गंभीर प्रश्न चिन्तकों के समक्ष खड़ा किया है। वर्तमान समाज व परिवार में लोगों के स्वभाव, उनकी प्रकृति में एक विचित्र बदलाव दृष्टिगोचर हो रहा है। विशेषकर युवाओं और बच्चों में नम्रता का अभाव, असहिष्णुता में वृद्धि, पारस्परिक सामंजस्य और सौहार्द्र की कमी साफ दिखाई पड़ती है जिससे बात-बात में टकराव, कलह और अलगाव की स्थिति उत्पन्न हो रही है। युवावर्ग आज भटकाव की दहलीज पर खड़ा है, जहाँ से भावी मार्ग धुँधला सा प्रतीत होने लगा है। दरअसल परिवर्तन तो आना चाहिए। आम लोगों के जीवन में जरूरत है उनकी सोच में परिवर्तन लाने की।

पारिवारिक और सामाजिक जीवन कष्टदायक एवं दुःखमय हो रहा है। परिवार में क्लेश, मानसिक प्रताड़नाएँ, हिंसात्मक प्रवृत्ति दुर्भाग्यवश कुछ अपवादों को छोड़कर आज सारा समाज विपरीत दिशा में जीवनयापन कर रहा है। सदियों से हम **'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया'** की कामना के साथ विश्वशान्ति और मानव कल्याण की कामना करते आए हैं। प्राणिमात्र के प्रति इसी कल्याणकारी शुभ भावना ने भारत को विश्व शिखर तक पहुँचा कर इसे अलग पहचान दी है। आज राष्ट्र ऐसे मोड़ पर खड़ा है, जहाँ भौतिक सुविधाओं का तो अम्बार लगा है, परन्तु हमारे मन को अशान्ति ने जकड़ रखा है।

भारत की मूल संस्कृति का संदेश है- **'वसुधैव कुटुम्बकम्'** हमारी संस्कृति हमें वसुधैव कुटुम्बकम् का पाठ पढ़ाते हुए भी इस देश से प्रेम करने की प्रेरणा देती है।

प्रायः देखा गया है कि आजकल बच्चों में अच्छे संस्कारों का अभाव हो गया है। अक्सर माता-पिता को यह कहते सुना गया है कि बच्चे हमारा कहना नहीं मानते। शिष्टाचार का उनमें अभाव हो गया है। इसका कारण है एकल परिवार एवं सीमित परिवार का चलन तथा पश्चिमी सभ्यता एवं संस्कृति का बढ़ता प्रभाव। इस कारण उन्हें ठीक प्रकार से मार्गदर्शन व घर में उचित वातावरण नहीं मिल पाता है। हमारे शास्त्रों में माता-पिता को देव तुल्य माना गया है। मातृ देवो भव, पितृ देवो भव के आदर भाव से यहाँ की संस्कृति का पोषण हुआ है। इन विचारों से भारतीय समाज और परिवार यहाँ की सामाजिक एवं पारिवारिक व्यवस्था सदियों से संचालित होती आई है। भारतीय संस्कृति की सामाजिक एवं पारिवारिक व्यवस्था विश्व की अन्य संस्कृतियों एवं समाजों से भिन्न है। प्राचीनकाल से चली आ रही भारतीय समाज की संयुक्त परिवार प्रणाली विदेशियों के लिए कौतूहल और आश्चर्य का विषय है। हमारी परिवार प्रणाली देखकर विदेशी दाँतों तले

अंगुली चबाते हैं।

भारतवासी संयुक्त परिवार में रहकर न केवल सुरक्षित, गौरवान्वित होते हैं, बल्कि विदेशी समाजों को भी इस प्रणाली पर सोचने-समझने के लिए प्रेरित एवं विवश करते हैं। संयुक्त परिवार व्यवस्था प्राचीन भारत की अनुपम प्रथा थी। इसके अन्तर्गत परिवार के सभी सदस्य एक साथ मिल-जुलकर रहते थे। एक-दूसरे के सुख-दुःख में काम आते थे। छोटों को बड़ों का साया और मार्गदर्शन मिलता तथा बड़ों को छोटों का सहारा प्राप्त हो जाता। 60-70 सदस्यों में एक-दो बेरोजगार, दिव्यांग (विकलांग) सदस्यों, विधवा, अविवाहिता कन्या, परित्यक्ता स्त्री आदि का भरण-पोषण भी सरलता से हो जाता। भारतीय समाज में संयुक्त परिवार एक बहुत लाभकारी संस्था मानी गई है। संयुक्त परिवार में व्यक्ति की स्वार्थवृत्ति और स्वेच्छाचारिता पर अंकुश रहता है। संयुक्त परिवार में मुखिया का नियंत्रण होने से सभी सदस्य अनुशासित रहते हैं। परिवार की समस्त आवश्यकताओं की पूर्ति सामूहिक रूप से हो जाती है।

संयुक्त परिवार एक समाजवादी संगठन है- **'सभी के लिए प्रत्येक और प्रत्येक के लिए सभी।'** मेक्समूलर ने 'संयुक्त परिवार को भारत की आदि परम्परा माना है जो भारतीयों को सदियों से एक सामाजिक विरासत के रूप में प्राप्त है।' भारतीय संस्कृति में 'परिवार' संस्था पर बहुत गहन चिन्तन हुआ है। प्राचीन भारतीय वैदिक उपनिषदों एवं धर्मशास्त्रों व पुराणों में विशद वर्णन हुआ है। मुस्लिम समाज में भी संयुक्त परिवार को मान्यता दी गई है। कुरानशरीफ में संयुक्त परिवार को श्रेष्ठ माना गया है।

20वीं सदी के प्रारम्भ तक भारतीय समाज में संयुक्त परिवार का प्राधान्य रहा है। मानवीय गुणों का स्तर सीधे परिवार एवं समाज के स्तर से जुड़ा हुआ है। वैदिक काल से यह व्यवस्था रही है कि पुत्र विवाहोपरान्त अपनी पत्नी एवं संतानों सहित पिता के साथ एक ही घर में रहते। कहा गया है- 'भ्रातृणां जीवनोः पित्रोः सहवासी विधीयसे।' एक साथ रहने का तात्पर्य पिता, उसके पुत्र, पुत्र वधूएँ, भाई-भाभियों, भतीजे-भतीजियाँ आदि अनेक परिवारजन एक ही घर में रहते, उनको भोजन एक ही चूल्हे पर बनने, यज्ञ, श्राद्ध-कर्म एक साथ किए जाने से है। इस प्रकार के परिवार को संयुक्त परिवार की संज्ञा दी जाती है। परिवार के सभी सदस्य भोजन, उत्सव, व्रत, त्यौहार, आमोद-प्रमोद एवं सुख-दुःख में समान रूप से भागीदारी कर अपने दायित्वों का सफलतापूर्वक निर्वहन करते हैं। इस परिवार व्यवस्था में माता-पिता, दादा-दादी ने अपनी भावी पीढ़ी को चरित्रवान्, संस्कारवान, ऊर्जावान और गतिमान बनाने में जो महत्त्वपूर्ण योगदान दिया उसे हम कभी नजरअंदाज नहीं कर सकते। विज्ञान और प्रोद्योगिकी के इस युग में मानवीय संवेदनाओं को जड़ कर दिया है। इसी कारण परिवार के मुखिया, माता-पिता, दादा-दादी, नाना-नानी अर्थात् हमारे आदरणीय वृद्धजन एवं पारिवारिक सदस्यों द्वारा उपेक्षा, तिरस्कार एवं प्रताड़ना के पात्र बना दिए गए हैं। संवेदनशील भारतीयों को इसमें लज्जा का अनुभव करना चाहिए।

वर्तमान युग में संयुक्त परिवार तीव्र गति से विघटित हो रहे हैं। एकल परिवार वृद्धि को प्राप्त हो रहे हैं। संयुक्त परिवार विघटित होने के पीछे व्यक्तिगत सुख, स्वच्छन्दता, मुक्तता, पाश्चात्य जीवन शैली आदि हैं। परिवार में समरसता, आज की आवश्यकता है। माता-पिता, दादा-दादी तो हमारे परिवार के वटवृक्ष की भाँति होते हैं। परिवार के सदस्यों में माँ-बाप प्रमुख हैं। माता-पिता के स्वास्थ्य, खान-पान, रहन-सहन तथा आचार-विचार का उसकी संतान पर बहुत प्रभाव पड़ता है।

परिवार शिशु की प्रथम पाठशाला है। श्रद्धा, सम्मान, यज्ञ, त्याग, अनुशासन, तप, प्रेम, सत्य, व्रत, नियमादि महान गुण मिलकर परिवार की भावना को परिपुष्ट करते हुए इसका संरक्षण करते हैं। जीवन मूल्यों के अभाव में अच्छे संस्कार नहीं पनप पाते हैं। नैतिक मूल्यों के पतन से राष्ट्र को भी हानि होती है।

औद्योगीकरण, शहरीकरण, पाश्चात्यीकरण का प्रभाव बहुत बढ़ गया है। संयुक्त परिवार प्रणाली अस्तित्वहीन होती जा रही है। एकल परिवार का प्रभाव सबसे अधिक संतान पर पड़ता है। स्त्री-पुरुष परिवार के मूल आधार हैं। परिवार की खुशियाँ या परिवार को स्वर्ग उस घर की नारी ही बना सकती है। आज सारा समाज विपरीत दशा में जीवन यापन कर रहा है। परिवार में स्त्री व पुरुष (पति-पत्नी) दोनों मिलकर नदी के तटों की तरह, जिनके मध्य जीवन की धारा प्रवाहमान रहती है। दोनों के अभेद की सहमति विवाह संस्कार है। षोडश संस्कारों में से विवाह संस्कार के सम्पन्न होने पर पति-पत्नी गृहस्थ बनते हैं। उनका गृहस्थ जीवन ही परिवार का मूल आधार है। संस्कार होना ही मनुष्य की श्रेष्ठता का मुख्य आधार है। शिष्ट व्यक्ति ही राष्ट्र की शोभा है। बंगाल के एक विख्यात महापुरुष को बचपन में ही अच्छे संस्कार मिले थे। वे थे ईश्वरचन्द्र विद्यासागर। वे सेवाभावी, दयालु एवं विद्या प्रेमी थे। उनके द्वार पर आए हुए अतिथि को कभी निराश नहीं लौटाते थे। यह सर्वश्रेष्ठ संस्कारों का ही परिणाम है।

प्रतिबद्धता की जगह सहकार की स्थापना करनी चाहिए। यह कार्य विभिन्न शिक्षण संस्थानों में अध्ययनरत शिक्षार्थियों को प्रारम्भ से यह बोध कराया जाना चाहिए कि एकाकी परिवार हमारे लिए अधिक हितकारी नहीं है। हमें अपने शिक्षाक्रम, पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तकों में भी यथोचित संशोधन, परिवर्तन-परिवर्द्धन करना होगा।

अतः आज के तनाव भरे वातावरण में यह आवश्यक हो गया है कि हम एकल परिवार की संकल्पना छोड़ पुनः संयुक्त परिवार में जीवन-यापन का सुख भोगे।

औरों को हँसते देखो मनु, हँसो और सुख पाओ।
अपने सुख को विस्तृत कर लो, सबको सुखी बनाओ।।

इसी आदर्श की स्थापना के लिए प्रयास करना चाहिए। जिससे स्वस्थ परम्परा से युक्त सुसंस्कृत एवं सुसज्जित समाज का निर्माण हो सके। हम भी प्रेम और एकात्म भाव से अपने जीवन को परिवार के विस्तृत स्वरूप की ओर ले जाने हेतु प्रयत्नशील रहें।

प्राध्यापक (हिन्दी, सेवानिवृत्त)
फोरेस्ट चौकी के पास, सहारिया, बाँसवाड़ा
(राज.)-327605
मो: 9460116012

विद्यार्थी और शिक्षक

विद्यार्थी के व्यक्तित्व निर्माण में शिक्षक की भूमिका

❒ अमिता शर्मा

व्यक्ति की पहचान उसके व्यक्तित्व से होती है। उसका रहन सहन, दूसरों के साथ उसका व्यवहार, उसकी सोच, उसका कार्य करने का ढंग इत्यादि सभी व्यक्तित्व का अभिन्न अंग हैं। व्यक्तित्व के आधार पर ही उसका समाज में मूल्यांकन होता है, उसका स्थान निर्धारित होता है।

व्यक्ति का व्यक्तित्व ही तो उसकी आत्मा का प्रकाश है उसकी सुगन्ध है। जिस प्रकार वीणा का महत्त्व उसका संगीत बताता है, उसी प्रकार व्यक्ति का महत्त्व उसके व्यक्तित्व से प्रकाशित होता है।

व्यक्तित्व में, व्यक्ति के शरीर का आकर्षण विकर्षण तो समाहित है ही, इसके साथ ही व्यक्ति के समस्त कार्मिक, वाचिक, मानसिक कर्मों का तथा दूसरे लोगों पर पड़ने वाले शुभ तथा अशुभ प्रभाव भी इसमें समाया होता है। कह सकते हैं- जैसा व्यक्तित्व वैसी उपलब्धि।

जब विद्यार्थी विद्यालय में प्रवेश करता है तब वह एक सादा अलिखित कागज सा होता है। उस पर जितनी भी इमारतें रची जाती हैं वह दायित्व अभिभावक, और अध्यापक का होता है। विद्यालय में घटित प्रत्येक गतिविधि का उस पर व्यापक प्रभाव पड़ता है।

फिरदौस ने लिखा है-

टॉपर्स थे,
किताब पढ़ते थे,
स्कूल में मेरे साथ के कुछ बच्चे....
मैं लोगो को पढ़ता था,
असल जिन्दगी में वही काम आया....

विद्यालय का प्रार्थना स्थल : प्रार्थना बोलने-सुनने से मनुष्य का मन शांत होता है एक तरह का अनुशासन आता है, आंतरिक शक्तियाँ विकसित होती हैं। प्रार्थना स्थल पर प्रधानाचार्य एवं अध्यापकों द्वारा दिए गए उद्बोधनों का छात्रों पर व्यापक प्रभाव पड़ता है। वे सुनकर चिन्तन करते हैं, मनन करते हैं और सीखते हैं जिसका उनके व्यक्तित्व को व्यापक आधार मिलता है। उनकी आध्यात्मिकता का विकास होता है।

सामान्य ज्ञान, प्रश्नोत्तरी गतिविधि में जो छात्र उत्तर देने का साहस करते हैं उनका आत्मविश्वास बढ़ता है और जो प्रश्न के उत्तर देने का साहस तो करते हैं भले ही उत्तर गलत हो-वे छात्र भी साहसी और आत्मविश्वासी बनते हैं। पढ़ाई में न्यून होने के पश्चात भी जीवन में आगे बढ़ते हैं।

विवेकानन्द जी का कहना है :-

''लोग कहते हैं-इस पर विश्वास करो, उस पर विश्वास करो। मैं कहता हूँ- अपने आप पर विश्वास करो, सर्वशक्ति तुम्हारे अन्दर निहित है। शक्ति को जगाओ तुम क्या नहीं कर सकते?''

तो इन्हीं शक्तियों को पुष्पित पल्लवित करने का कार्य हम अध्यापकों का है। अध्यापक यदि साहस, आत्मविश्वास अनुशासन, ईश्वर में विश्वास, आशावादिता इत्यादि भावों का बीज रोपण कर देता है तो उसका अध्यापकत्व सार्थक है।

कक्षा-कक्ष और छात्र : अध्यापक द्वारा की गई प्रशंसा, निन्दा छात्रों पर व्यापक प्रभाव डालती है। यदि कोई अध्यापक किसी छात्र को निरन्तर डांटते रहते हैं, उसे हतोत्साहित करते हैं तो निश्चित मानिए उस छात्र का आत्मविश्वास सदा के लिए डिग जाएगा और यदि हम छात्रों को लगातार प्रोत्साहित करते हैं तो यह अपने जीवन में निःसन्देह विपरीत परिस्थितियों का सामना कर सकेगा।

अच्छे प्रदर्शन के लिए छात्रो को प्रोत्साहित करना अत्यावश्यक है। कमी होने पर अध्यापक को प्रेरक की भूमिका निभानी चाहिए, ना कि निन्दक की।

पढ़ते-पढ़ाते छात्रों में कब कौन से संस्कार का बीज वपन हो जाए कुछ कह नहीं सकते। श्रीमद्भागवत् गीता में श्री कृष्ण ने कहा है-

यद्यादाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः।
सा यत्प्रमाणं कुरुते लाकस्तदनुवर्तते।।

श्रेष्ठ जन जैसा आचरण करते हैं दूसरे लोग उनका अनुसरण करते हैं। शिक्षक का आचरण उसके छात्र-छात्राओं के लिए आदर्श होता है। उनका व्यवहार छात्र-छात्राओं को सदैव प्रभावित करता है।

शिक्षक का व्यक्तित्व और छात्र : आपने अनुभव किया होगा किसी एक या दो अध्यापक की तरफ छात्र आकर्षित होते हैं। 'मेरे प्रिय अध्यापक' पर जब परीक्षाओं में बच्चे निबन्ध लिखते हैं, तब हम देखते हैं कि बहुतेरे छात्र किसी एक अध्यापक का नाम लिखते हैं। वास्तव में शिक्षक का व्यक्तित्व प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से विद्यार्थी के व्यक्तित्व विकास तथा चरित्र निर्माण में महती भूमिका निभाता है। अध्यापक के आचरण का छात्र अनजाने ही अनुसरण करने लगते हैं। अध्यापक की विद्यालय के प्रति कैसी सोच है, अन्य स्टाफ साथियों के साथ उनका कैसा व्यवहार है, प्रधानाचार्य के प्रति वे कैसी सोच रखते हैं, उनका अनुशासन कैसा है? क्या वो समय पर आते हैं, अध्यापक स्वयं समय पर नहीं आते हैं, तो छात्र भी विलम्ब से आने को गलत नहीं समझते। अध्यापक के धूम्रपान करने का भी विद्यार्थी के कोमल पर बड़ा दुष्प्रभाव पड़ता है।

शैक्षिक तथा सहशैक्षिक गतिविधियाँ : शैक्षिक तथा सहशैक्षिक विभिन्न गतिविधियों में भाग लेने वाले छात्रों का व्यक्तित्व मुखर तथा परिपूर्ण बनता है। जिसके लिए अध्यापकों को अनवरत प्रयासरत रहना चाहिए।

आचार्य चाणक्य, समर्थ गुरु रामदास, आचार्य द्रोण, श्री कृष्ण, महर्षि वाल्मिकी, परशुराम, गुरु संदीपनी इत्यादि महान गुरुओं की परम्परा की अविरल धारा आज भी प्रवाहित है।

बड़े से बड़े, छोटे से छोटे पद पर कार्य करने वाले व्यक्ति से उसकी प्रगति, ऊँचाई पर पहुँचने का कारण पूछेंगे तो वहाँ किसी ना किसी अध्यापक का ही योगदान आपको सुनने मिलेगा।

अन्त में कहना चाहूँगी कि शिक्षक ही वो दिया है जो आजीवन अपने छात्रों में ज्ञान की लौ जलाता रहता है ताकि वे इस संसार को ही नहीं दूसरे अदृश्य लोक से भी पार पा सकें।

लॉक ने लिखा है-**पौधे संवर्धन द्वारा विकसित किए जाते हैं और मनुष्य शिक्षा द्वारा।**

प्रधानाचार्य,
महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय,
तलवाड़ा, बांसवाड़ा (राज.)-327025
मो. 8005850661

सपने सुहाने

सपनों को हमेशा जीवित रखो

❒ सीताराम गुप्ता

पंजाबी कवि पाश की चर्चित कविता सभ में तो खतरनाक की एक पंक्ति है– सभ तो खतरनाक हुंदा है साडे सुपनिआं दा मर जाणा अर्थात हमारे सपनों, इच्छाओं अथवा आकांक्षाओं का मर जाना सबसे भयानक होता है। पाश एक प्रगतिशील अथवा जनवादी कवि थे। पाश का स्वर विद्रोह का स्वर माना जा सकता है और उनकी कविताओं को प्रगतिशील कविताएँ लेकिन ये पंक्तियाँ मात्र प्रगतिशील ही नहीं उत्प्रेरक भी हैं। इनमें आत्मोत्थान का मार्ग स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। चाहे एक अच्छा व्यक्ति बनना हो अथवा समृद्ध व्यक्ति बनना हो अपेक्षित सपने अथवा सपनों के अभाव में ये संभव ही नहीं। भौतिक समृद्धि के लिए ही नहीं आध्यात्मिक अभ्युदय के लिए भी हमारे सपनों का जीवित रहना अनिवार्य है। जिस व्यक्ति के सपने मर जाते हैं वो व्यक्ति उस बंजर जमीन के समान हो जाता है जिसमें कुछ पैदा नहीं होता।

जिस प्रकार से बीज के अभाव में पेड़ की कल्पना भी नहीं की जा सकती उसी प्रकार से सपनों के अभाव में जीवन में कुछ सकारात्मक करने व आगे बढ़ने की संभावना नगण्य हो जाती है। सपना समृद्धि का बीज अथवा उद्‌गम है चाहे वो हमें दिखलाई पड़े अथवा नहीं। आशावादिता भी एक सपना है और निराशावादिता भी एक सपना ही है। कुछ व्यक्ति समस्याओं से घबराकर प्रयास करना ही छोड़ देते हैं और कुछ हमेशा जीवन का नकारात्मक पक्ष ही देखते रहते हैं। जब व्यक्ति निराश होकर बैठ जाता है और सोचने लगता है कि मैं कुछ नहीं कर सकता अथवा मुझे कुछ नहीं करना है यही उसका सपना अथवा जीवन का लक्ष्य बन जाता है। क्योंकि सपना एक बीज होता है और वो अवश्य पल्लिवित पुष्पित होता है अतः नकारात्मक सपना अथवा विचार हमें हमेशा विपन्न स्थिति में बनाए रखता है।

हम जो भी यह कर रहे होते हैं उसे

ईमानदारी से करते हुए ऊँचे सपने अवश्य देखें। हमारे यहाँ कई ऐसी कहावतें हैं जो लोगों को सपने देखने से रोकती हैं। कहा गया है कि हवाई किले मत बनाओ। कहा गया है कि ज्यादा ऊँचाई से गिरने पर ज्यादा चोट लगती है। ये भी कहा गया है कि अपनी चादर देखकर ही पैर पसारने चाहिए। ये बातें वर्तमान के लिए तो ठीक हैं लेकिन ये सपना न देखना कि मेरे पास सही चादर हो हमारी सबसे बड़ी कमजोरी है। हमें बड़ी चादर का सपना अवश्य देखना चाहिए अन्यथा हम जीवन भर उसी चादर में पैर सिकोड़े हुए पड़े रहेंगे। सही या बड़ी चादर का कामना करना कोई अपराध अथवा अनैतिकता नहीं। जीवन में सफलता के लिए समृद्धि, प्रभावशाली व्यक्तित्व व उच्चतम नैतिक मूल्यों के विकास का सपना देखना अनिवार्य है।

जीवन में परिवर्तन अपरिहार्य होता है अतः परिवर्तन को स्वीकार करना और परिवर्तन के लिए प्रयास करना दोनों बातें अनिवार्य हैं। बिना इसके हम आगे नहीं बढ़ सकते। बदलाव के लिए तत्पर न होना और यथास्थिति को बनाए रखना व्यक्ति ही नहीं सम्पूर्ण समाज के लिए हानिकारक होता है। जब हम ये सपना देखने के अभ्यस्त हो जाते हैं कि ये सब इस जीवन में तो संभव नहीं है तो ठीक ऐसा ही होने लगता है। कुछ भी नहीं बदलता। हमारी विषम परिस्थितियां न केवल विषम बनी रहती है अपितु कई बार और भी बदतर हो जाती है और जब हम इसके विपरीत जीवन में बहुत कुछ पाने का सपना देख लेते हैं तो वो भी पूरा हो जाता है। एक सपना या विचार ही है जो क्रांति कर सकता है। एक सपना ही होता है जो व्यक्ति और समाज दोनों को समृद्ध भी करता है और उन्हें विपन्न भी बनाए रख सकता है। हमें अपने लिए ही नहीं संपूर्ण समाज के लिए भी अपने सपनों को हमेशा जीवित रखना चाहिए लेकिन सपना कैसा हो यह बात उससे भी महत्त्वपूर्ण है।

सपने देखना ही नहीं, सही सपने देखना और अधिक महत्त्वपूर्ण होता है। वास्तव में दरिद्र वो नहीं जिसके पास धन–दौलत का अभाव है अपितु सबसे बड़ा दरिद्र वो है जो ऊँचे सपने नहीं देख सकता है। जिस कार्य को करने में कुछ खर्च नहीं होता वो कार्य भी हम न कर सकें तो इससे बड़ा दुर्भाग्य क्या होगा? फिर भी हम ऊँचे सपने देखने से क्यों बचते हैं? इसके लिए एक सीमा तक समाज द्वारा की गई हमारी कंडीशनिंग भी उत्तरदायी है। हमारी पारंपरिक विचारधारा अथवा कुछ लोगों द्वारा अपने निहित स्वार्थों के लिए समाज में फैलाई गई कुछ बातें हमें आगे बढ़ने अथवा समृद्धि प्राप्त करने से हमेशा रोकती रहती है। हमारे यहाँ अच्छाई का एक पैमाना ये भी निर्धारित किया गया है कि व्यक्ति को कम में ही संतुष्ट रहना चाहिए। पैसा गलत तरीके से कमाया जाता है और पैसा आने पर आदमी भ्रष्ट हो जाता है। इसीलिए अधिकांश लोग अच्छा बनने के लिए कम में संतुष्टि को ही जीवन का लक्ष्य या सपना बना लेते हैं और किसी भी प्रकार की इच्छा या कामना करना छोड़ देते हैं। वे अभावों को ही जीवन का उत्कर्ष मानने को अभिशप्त हो जाते हैं।

ये सोचना कि पैसा कमाने वाले भ्रष्ट अथवा गलत ही होते हैं अत्यंत भ्रामक है। ये सोचना भी दोषपूर्ण है कि गलत तरीके से पैसा कमाया जा सकता है। इस सोच को भी

तिलांजलि देनी होगी कि पैसा गलत तरीके से कमाया जा सकता है व ईमानदारी से समृद्धि संभव ही नहीं। पैसा व्यक्ति को भ्रष्ट नहीं बनाता। हमारी गलत सोच ही गलत तरीके से पैसा कमाने अथवा उस कमाए हुए पैसे का दुरुपयोग करने के लिए उत्तरदायी होती है। हम खूब कमाएँ का अर्थ ये नहीं कि हम किसी भी तरह से पैसा कमाएँ। हमारी आजीविका सम्यक होनी चाहिए जिसमें किसी का अहित होने की संभावना न हो। खूब कमाएँ का अर्थ ये भी नहीं कि हम खूब उड़ाएँ भी। हम अत्यधिक लालची व आत्मकेन्द्रित न बनें। हम अपरिग्रह का पालन करते हुए आवश्यकतानुसार ही वस्तुओं का उपभोग करें और समाज के उत्थान के लिए अपना योगदान सुनिश्चित करें। हम स्वयं के उत्थान के साथ-साथ औरों के उत्थान के लिए भी तत्पर रहें।

संतुष्टि का ये अर्थ कदापि नहीं कि हम कामनाविहीन होकर अभावग्रस्त जीवन व्यतीत करें और बेहतर की कामना न करें। भूखे पेट और अर्धनग्न रहना ही संतुष्टि है तो हमारा देश सचमुच आध्यात्मिकता की चरम सीमा को स्पर्श कर रहा है। अभाव को महिमामंडित करना किसी भी तरह से उचित नहीं कहा जा सकता। अभावग्रस्त जीवन अनेकानेक समस्याओं की जड़ है इसमें संदेह नहीं। अभावग्रस्त व्यक्ति कुंठित हो जाता है। समस्याओं और कुंठा से मुक्ति पाने के लिए ऊँचे सपने न देखना सचमुच खतरनाक है। संतुष्टि का ये अर्थ लिया जा सकता है कि हम वर्तमान को स्वीकार करें व दूसरों से ईर्ष्या न करें। गलत तरीके से किसी चीज को पाने का प्रयास न करें। समस्त संसार को अपनी मुट्ठियों में भींचने का आग्रह न हो। वास्तव में समृद्धि जैसी श्रेष्ठ अवस्था कोई हो ही नहीं सकती। यदि समृद्धि का सदुपयोग किया जाए। लेकिन इसके लिए मुझे हर हाल में सही रास्ते पर चलते हुए एक अच्छा व समृद्ध व्यक्ति बनना है हमारा ये सपना कभी नहीं मरना चाहिए। हम न केवल अपने सपनों को जीवित रखें अपितु अन्य सभी को भी उनके सपने जीवित रखने के लिए उन्हें प्रोत्साहित करें।

ए.डी.-106-सी, पीतमपुरा, दिल्ली-110034

मो: 9555622323

जैव विविधता- नैसर्गिक खजाना

❒ विष्णु कुमार गुप्ता

पर्यावरण शुद्धता एवं उसका संरक्षण आज की महती आवश्यकता है। यह वायु स्थल, जल एवं जैव मण्डल का समेकित प्राकृतिक स्वरूप है तथा एक दूसरे के प्रभाव से भी गुंथा हुआ है। विशेषतः जैव मण्डल में उपस्थित जीवों व पेड़-पौधों की नयनाभिराम विविधता तीनों मण्डलों की शुद्धता व संतुलन पर ही कायम है। इन तीनों ही मण्डलों में स्थायीत्व लिए हुए एवं विचारण करते हुए समय व्यतीत होने के साथ संतुलित प्राकृतिक तंत्र की अनुकूलता के साथ-साथ अनेकानेक जीव-जंतुओं और पेड़-पौधों की उत्पत्ति हुई। प्रकृति हमेशा ही अनुकूलन प्रदान नहीं करती है तदुपरान्त प्रतिकूल जलवायु परिवर्तन, मौसम परिवर्तन, अत्यधिक शीत-ग्रीष्म तथा प्राकृतिक आपदा ने उन्हें नष्ट भी किया है। वैज्ञानिक धारणा के मुताबिक बच भी गए तो वे अधिक संतुष्ट होकर अपनी प्रजाति को उभारते हैं। सम्पूर्ण जीव विनष्टता के प्रमाण भी वैज्ञानिकों ने खोज निकाले जैसे डायनासोर जैव विविधता रूपी प्रकृति प्रदत्त इस खजाने की अनमोलता निश्चय ही मानव के लिए तो वरदान है। इसे सहेजने यथा स्थिति या वृद्धि के लिए अन्ततः मनुष्य के ऊपर ही जिम्मेदारी अधिक है। केवल वह इसमें से दोहन से अधिक क्षीणता न करे तो प्रकृति स्वयं ही इसे घटाती-बढ़ाती रहती है। जैव विविधता के अधिकांश क्षेत्र अब भी अविकसित तथा विकासशील देशों में स्थित है। जहाँ उनके संरक्षण की आवश्यकता अधिक है। इसमें उन क्षेत्रों के आसपास रहने वाले लोगों का दायित्व तो है ही साथ ही पर्यटन की दृष्टि से संचालित अवैज्ञानिक गतिविधियों ने इस खजाने को अधिक हानि पहुँचाने का कार्य किया है। नियंत्रित पर्यटन इन क्षेत्रों की संरक्षा-सुरक्षा के लिए जरूरी है चाहे इसे कानून बनाकर किया जाए अथवा चेतना जाग्रत करके।

अर्थात वेद में पृथ्वी को अर्पित प्रार्थना में वर्णन मिलता है कि यहाँ विद्यमान संसाधनों का यथास्थिति में बनाए रखते हुए उनका उपयोग करें यानि यह निर्देश सीधे-सीधे मनुष्यों को ही ताक दिया है। सच्चे मायने में यह अनुपूर्ति ने मनुष्य कर रहे हैं जिनको भौतिकवादी दृष्टिकोण छू भी नहीं पाया है और वे है इन क्षेत्रों में रहने वाले आदिवासी जिनके लोकगीत में भी प्रकृति प्रदत्त इस अनमोल खजाने का वर्णन मिलता है। पर्यावरण के विरुद्ध होने वाली कोई गतिविधि किसी क्षेत्र व देश विशेष को ही नहीं अपितु समस्त मानव जाति के लिए अहितकर तथा इस जैव विविधता रूपी खजाने को लूटने के समान है। अभी पिछले वर्ष आयोजित अक्टूबर, 2012 में यू.एन.ओ. के सान्निध्य में भारत के हैदराबाद में आयोजित 'कन्वेन्सन ऑफ बॉयोलोजिकल डायवरसिटी' में विद्वानों ने उक्त विचार ठोस तरीके से रखे हैं। जैव विविधता संरक्षण हेतु संयुक्त राष्ट्र संघ का प्रयास वंदनीय है, जिसने 2011 से 2020 के मध्य चलने वाली योजना के अन्तर्गत जैव विविधता को बचाने का कार्य आरंभ किया है। इस हेतु अविकसित और विकासशील देशों को जैव विविधता को बचाने हेतु आर्थिक संसाधन उपलब्ध कराए जाएंगे।

हमारे अपने पड़ोस में एक इस प्रकार का खजाना है सरिस्का जिसे अन्तरराष्ट्रीय बाघ परियोजना के नाम से संरक्षित क्षेत्र घोषित किया गया है तब जब 2004 में यहाँ बाघ विलुप्त हो गए। इस कारण अवैध शिकार तथा बाघ शृंखला का गड़बड़ा जाना प्रमुख कारण रहा है। अप्रत्याशित जनवृद्धि ने भी इस क्षेत्र के परिस्थिति तंत्र को गड़बड़ा दिया है जिसके कारण अव्यवस्थित गाँवों का पलायन करना पड़ा है। यहाँ आंतरिक और मध्य कोर में मानव हस्तक्षेप को पूर्णतः रोकने की जरूरत है जिसका एकमात्र उपाय सभी लोगों का यहाँ से पलायन है जो जितना शीघ्र हो उतना अच्छा। यही कारण है कि इसके बाहरी क्षेत्र से लगने वाली भूमि पर भी औद्योगिकीकरण जैसे प्रक्रिया निषिद्ध है। साथ ही तीनों कोर में खनन भी पूर्णतः निषिद्ध है। बाहरी क्षेत्र में अभी यह गतिविधि पूर्णतः रोकी नहीं जा सकी है जिसकी कड़ाई से पालन होना चाहिए। खाद्य शृंखला की कड़ियों को बचाने व उनकी प्रचुरता से उपलब्धता के वैज्ञानिक प्रयास व अन्यत्र से स्थापना जैसी प्रक्रिया पर अत्यधिक ध्यान देना अभी शेष है। क्षेत्रफल की दृष्टि से यह क्षेत्र केवल 8 से 10 बाघों को सहारा हो सकता है। अतः आपसी संघर्ष इनकी समाप्ति का कारण नहीं बने इस ओर भी ध्यान रखा जाना नितान्त आवश्यक है। आगामी वर्षों में यह समस्या भी सामने आ सकती है। क्षेत्र से गुजरने वाले सार्वजनिक मार्गों से भले ही आस-पास रहने वाले लोगों का हित होता हो पर इस पर चलने वाले वाहनों की ध्वनि, प्रकाश, कार्बनिक प्रदूषण और दुर्घटना जैसे कारणों से जीव-जंतुओं पर बहुत असर पड़ता है यहाँ तक कि उनकी जनन क्षमता और वृद्धिकरण पर भी जन दबाव भी इससे आड़े नहीं आना चाहिए। जैव विविधता में कमी के कारणों को निवारण करना हम मनुष्यों का पुनीत कर्त्तव्य है। आओ सहेजे अपने सद्प्रयत्नों से इस खजाने को।

वरिष्ठ अध्यापक

डॉ. भीमराव अम्बेडकर राजकीय आवासीय विद्यालय बगड़ी, दौसा (राज.)

जयंती विशेष

लोकतंत्र के निर्माण में अम्बेडकर का योगदान

❒ राजकुमार तोलम्बिया

प्रस्तावना– डॉ. अम्बेडकर ने भारत के प्रत्येक नागरिक को धर्म, भाषा, वर्ग और वर्ण के आधार पर भिन्न-भिन्न होते हुए भी भारतीय होने का अधिकार प्रदान किया। भारत को मजबूत रखने के लिए लोकतांत्रिक शासन प्रणाली दी और लोकतंत्र की इस प्रणाली को और अधिक मजबूत करने के लिए समता का ज्ञान दिया। समता तभी साबित होगी जब मनुष्य के द्वारा मनुष्य का शोषण नहीं किया जाएगा। चाहे वह शोषण सामाजिक हो या आर्थिक। शोषण से मुक्त, कल्याणकारी समाज की स्थापना में लोकतंत्र को मूल आधार बनाया। अम्बेडकर का मानना था कि लोकतंत्र ऐसी जीवन पद्धति है, जिसमें स्वतंत्रता, समता और भ्रात भाव जीवन के आदर्शों के रूप में स्वीकार करते हैं। स्वतंत्रता समानता और भ्रातृत्व भाव के साथ-साथ स्वतंत्र, निष्पक्ष व आवधिक मतदान, सशक्त विपक्ष, कानून व शासन की दृष्टि से समानता, विधान में नैतिकता को अपना कर लोकतंत्र को मजबूत बनाया जा सकता है।

अम्बेडकर के अनुसार लोकतंत्र- लोकतंत्र का अंग्रेजी पर्याय डेमोक्रेसी है जो मूल रूप से ग्रीक भाषा के 'डेमोस' तथा 'क्रेशिया' से मिलकर बना है जिसमें डेमो शब्द का अर्थ 'लोग' एवं क्रेशिया का अर्थ 'शासन' से हैं अर्थात डेमोक्रेसी का अर्थ 'लोगों का शासन' यानी जनता के शासन से है।

जॉर्ज बर्नार्ड शॉ के अनुसार 'प्रजातंत्र एक सामाजिक व्यवस्था हैं, जिसका लक्ष्य सभी लोगों का यथासंभव अधिक से अधिक कल्याण करना हैं।' अमेरिका के राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन द्वारा लोकतंत्र को लेकर दी गई परिभाषा ''लोकतंत्र जनता का, जनता के लिए, जनता द्वारा चुना गया शासन हैं।' इसमें भीमराव अम्बेडकर का अटूट विश्वास था। अम्बेडकर ने लोकतंत्र के निम्न आधार बताए हैं–

1. स्वतंत्रता– अम्बेडकर विचार और अभिव्यक्ति, शांतिपूर्ण सम्मेलन, संघ निर्माण, भ्रमण, व्यवसाय एवं निवास की स्वतंत्रता के पक्षधर थे। आदर्श समाज के लिए अम्बेडकर ने धार्मिक स्वतंत्रता को भी आवश्यक माना। इस प्रकार स्पष्ट हैं कि डॉ. अम्बेडकर व्यक्ति, समाज और राष्ट्र की समृद्धि, संगठन और शक्ति के लिए सभी प्रकार की स्वतंत्रताओं के पक्ष में थे। लोकतंत्र में स्वतंत्रता का होना बहुत आवश्यक है।

2. समता– प्राणी मात्र के साथ समानता का व्यवहार करना चाहिए। किसी भी मनुष्य के साथ जाति, धर्म, वर्ग और वर्ग के आधार पर भेदभाव नहीं करना चाहिए। वे लोग जो बिना सुविधाओं के आगे नहीं बढ़ सकते हैं, उन्हें बिना भेदभाव के सुविधाएँ प्रदान की जानी चाहिए। उनके अनुसार कोई भी समाज अपने सदस्यों को प्रगतिशील, उत्तम एवं उत्तरदायी बनाना चाहता हैं, तो यह समता के आधार पर ही संभव हो सकता है। लोकतंत्र की सफलता के लिए समानता का व्यवहार अत्यंत आवश्यक है।

3. स्वतंत्र, निष्पक्ष एवं आवधिक मतदान– लोकतंत्र में किसी को सदैव शासन व्यवस्था में बने रहने का अधिकार नहीं होता। ऐसा अधिकार तो राजतंत्र में राजा को होता है। राजतंत्र वंश परम्परा के आधार पर चलता हैं, जबकि लोकतंत्र में निष्पक्ष स्वतंत्र एवं आवधिक मतदान सत्ता का आधार होता है। लोकतंत्र में प्रत्येक पाँच वर्ष बाद चुनाव होते हैं। यदि चुनाव नहीं होंगे तो लोकतंत्र का अस्तित्व समाप्त हो जाएगा। अतः लोकतंत्र को जीवित रखने के लिए मतदान जरूरी है।

4. अविश्वास का प्रस्ताव– सामान्यतया लोकतंत्र में पाँच वर्ष बाद चुनाव होते हैं परंतु संविधान में ऐसा भी उपाय है कि आवश्यकता पड़ने पर सत्तारुढ़ दल को पाँच वर्ष से पूर्व भी हटाया जा सकता है। यदि सत्तारूढ़ दल का काम ठीक नहीं है तो संविधान में व्यवस्था होती है कि उसको बीच में निरुद्ध किया जा सकता है। अम्बेडकर के अनुसार इससे सत्तारुढ़ दल की तानाशाही गतिविधियों पर लगाम लगाकर लोकतंत्र को मजबूती प्रदान की जा सकती है।

5. सशक्त विपक्ष– मजबूत लोकतंत्र में सशक्त विपक्ष का होना आवश्यक है। प्रतिपक्ष सरकार के प्रत्येक कार्य पर नियंत्रण करता है तथा उसको विधान विरुद्ध कार्य करने से भी रोकता है। इससे सरकार मनमानी नहीं कर पाती और लोकतंत्र के कमजोर होने का खतरा नहीं रहता है।

6. कार्यपालिका की स्वतंत्रता– अम्बेडकर के अनुसार सरकार को कार्यपालिका के कार्य में हस्तक्षेप में नहीं करना चाहिए। शासन व्यवस्था ठीक और निष्पक्ष रहे तथा राजनीति से अप्रभावित रहे इसके लिए सत्तापक्ष को कार्यपालिका के कार्यों में दखल देने से बचना चाहिए।

7. कानून तथा शासन की दृष्टि से समानता– कानून तथा शासन को पक्षपात से मुक्त होना चाहिए। कई बार शासक दल अपने सदस्यों को लाभ पहुँचाने के लिए कानून के विपरीत काम करता हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि अपने दल के सदस्यों व विपक्ष दल के सदस्यों के साथ उसका व्यवहार भेदभावपूर्ण है। सत्तापक्ष का सतत, संतुलित और निष्पक्ष रहना जरूरी हैं अन्यथा लोकतंत्र को इससे हानि पहुँचती है।

8. विधान संबंधी नैतिकता– डॉ. अम्बेडकर के अनुसार लोकतंत्र की सफलता के लिए विधान संबंधी नैतिकता का पालन करना अत्यंत आवश्यक हैं। उसके कारण ही कानूनी व्यवस्था बनी रहती है। उसके उल्लंघन करने से अराजकता फैलती है। विधान संबंधी नैतिकता यह है कि अपने प्रतिकूल प्रतीत होने वाले किसी नियम को तोड़ना नहीं चाहिए, बल्कि उसका सम्मान करना चाहिए।

9. सार्वजनिक अंतरात्मा– सार्वजनिक अंतरात्मा प्रजातंत्र की सफलता के लिए आवश्यक हैं। इसका आशय यह है कि अन्याय का विरोध सभी नागरिकों को भेदभाव त्यागकर करना चाहिए तथा पीड़ित व्यक्ति की रक्षा करनी चाहिए भले ही वह स्वयं उसे से पीड़ित हो या न हो। सामाजिक असमानता की पीड़ा को अंतरात्मा से ही दूर किया जा सकता है। अतः समाज में सार्वजनिक अंतरात्मा का भाव पैदा करना होगा।

10. अल्पमत के हितों की उपेक्षा न होना– लोकतंत्र में बहुमत को अल्पमत के हितों की रक्षा का ध्यान रखना चाहिए। अम्बेडकर के अनुसार जब बहुमत अल्पमत के हितों का ध्यान रखेगा तो वर्ग संघर्ष या विद्रोह जैसी नौबत नहीं आएगी और लोकतंत्र सुचारू रूप से कार्य करता रहेगा।

व्याख्याता
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बस्सी, चित्तौड़गढ़
(राज.)–312022
मो: 9929254777

टीएलएम

शिक्षण अधिगम सामग्री का उपयोग

❒ राजेन्द्र सिंह चौहान

शिक्षा का उद्देश्य मूलतः छात्रों का बौद्धिक, मानसिक व शारीरिक विकास करना है। शिक्षा में शिक्षण का लक्ष्य सीखना है। सिखाने के लिए सीखने का वातावरण उसे सहज, रुचिकर और बोधगम्य बनाता है। टी एल एम का अर्थ है टीचिंग लर्निंग मेटेरियल यानि शिक्षण अधिगम सामग्री शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षण अधिगम सामग्री का महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। यह शिक्षण को सरल, बोधगम, आनन्दायी तथा रुचिकर बनाती है। हम जानते है कि शिक्षण एक जटिल एवं रोचक प्रक्रिया है। शिक्षण को रुचिकर एवं आनन्दायी बनाने हेतु टी एल एम का प्रयोग आवश्यक है। यानि जो वस्तु या सामग्री कहा जाता है। शिक्षण एवं टी एल एम का सम्बन्ध तो एक सजीव एवं उसकी श्वसन क्रिया की भाँति होता है जिस प्रकार बिना श्वसन क्रिया के सजीव नहीं कहलाता ठीक उसी प्रकार बिना सहायक सामग्री के शिक्षण सार्थक शिक्षण नहीं कहलाता है।

एक वर्गीकरण के आधार पर शिक्षण सामग्री के निम्न प्रकार हो सकते है–

- दृश्य सामग्री– चित्र, मॉडल, चार्ट, प्रोजेक्ट आदि।
- श्रृत्य सामग्री– रेडियो, ऑडियो, कैसेट, टेप-रिकॉर्डर आदि।
- दृश्य-श्रत्य सामग्री– कम्प्यूटर, सीडी, टेलीविजन, फिल्में आदि।

शिक्षण सामग्री में चॉक, डस्टर एवं श्यामपट्ट सम्मिलित किया जा सकता है। जैसे शिक्षक द्वारा श्यामपट्ट पर पेड़ का चित्र बना दिया तो यह चित्र बना दिया तो यह चित्र सहायक सामग्री में गिना जाए। इसी प्रकार शिक्षण सहायक सामग्री में उन सभी वस्तुओं को सम्मिलित किया जा सकता है, जो शिक्षक के प्रस्तुतीकरण को सरल बनावे।

हम यहाँ पर यह देखेंगे कि हमारा टी एल एम कैसा हो। सस्ता, सुन्दर, टिकाऊ हो, शिक्षण अधिगम सामग्री ऐसी न हो जिसे प्रयोग करते समय बालकों को किसी प्रकार की हानि और खतरा हो। ऐसी बने जिसका रखरखाव सुविधाजनक हो। टी एल एम आकर्षक हो, उद्देश्यपूर्ति करने में सक्षम हो। बालकों की आयु एवं बौद्धिक क्षमता के अनुरूप हो। शिक्षण सामग्री ऐसी बने जिससे एक से अधिक शिक्षण बिन्दु अथवा अन्य विषयों की विषयवस्तु सिखाने में उपयोग लाई जा सके। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि शिक्षण में टी एल एम प्रभावी प्रस्तुतीकरण तथा शिक्षण को सहज, सरल एवं रोचक बनाने की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। शिक्षण सामग्रियों के माध्यम से छात्रों को किसी नियम अथवा सूत्र समझाने में आसानी होती है। ये सामग्री केवल छात्रों के लिए ही उपयोगी नहीं है वरन अध्यापकों के लिए भी उतनी ही आवश्यक होती है जितनी छात्रों के लिए। इन सामग्रियों से एक अध्यापक स्वयं तो सीखता ही है तथा शिक्षण प्रक्रियाओं को अधिक प्रभावशाली भी बनाता है। इसलिए शिक्षण अधिगम सामग्री की महत्ता और अधिक बढ़ जाती है। शिक्षण सहायक सामग्री का रखरखाव भी उचित तरीके से किया जाना चाहिए। शिक्षण सहायक सामग्री ऐसी जगह रखी होनी चाहिए। जहाँ पर सीलन और दीमक ना होने की संभावना हो। शिक्षण सहायक सामग्री जहाँ पर रखी हो वहाँ पर समय-समय पर उचित साफ-सफाई की जानी चाहिए।

एक चीनी कहावत के अनुसार कहा जाता है कि– 'जो चीजें मैं सुनता हूँ शायद उनको भूल सकता हूँ, जो चीजें मैं देखता हूँ, शायद उनको याद रख सकता हूँ किन्तु जो चीजें मैं स्वयं करता हूँ उनको कभी नहीं भूल सकता हूँ।'

टी एल एम के माध्यम से सीखा गया ज्ञान न केवल छात्रों में उत्साह जागृत करता है वरन् सीखे हुए ज्ञान को लम्बे समय तक अपने स्मृति पटल में संजोए रखने में भी सहायक होता है। दूसरी ओर शिक्षक भी अपने अध्यापन के प्रति उत्साहित रहता है। परिणामस्वरूप कक्षा का वातावरण हमेशा सकारात्मक बना रहता है।

आशा है हम सभी की भागीदारी इस लक्ष्य को प्राप्ति में सहायक होगी।

वरिष्ठ अध्यापक (अंग्रेजी)
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, गामड़ी, साबला,
डूँगरपुर (राज.)–314022
मो: 9413282201

रचनाएँ आमंत्रित

'शिक्षक दिवस' के उपलक्ष्य में प्रकाशनार्थ विविध विषयों व विधाओं पर शिक्षकवृंद व सुधी पाठकों से रचनाएँ दिनांक 31 मई, 2021 तक आमंत्रित की जाती हैं। अतः अपने शैक्षिक चिंतन-अनुभव, कहानी, संस्मरण, एकांकी, बाल साहित्य, कविता एवं राजस्थानी साहित्य (गद्य-पद्य) आदि मौलिक रचनाएँ 'वरिष्ठ संपादक, शिविरा प्रकाशन, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर' के नाम से प्रेषित करें। रचनाएँ शिविरा की e-mail पर भी प्रेषित की जा सकती हैं। रचना के अंत में मौलिकता की घोषणा एवं हस्ताक्षर भी आवश्यक हैं। साथ ही बैंक डायरी के प्रथम पृष्ठ की छायाप्रति प्रत्येक रचनानुसार अलग-अलग संलग्न करें। निर्धारित तिथि पश्चात प्राप्त रचनाओं पर विचार नहीं किया जा सकेगा।

–वरिष्ठ संपादक

पुस्तक समीक्षा

मांयली बात

कहाणीकार : **डॉ. कृष्णा आचार्य;** प्रकाशक : **कलासन प्रकाशन, मालगोदाम रोड, अलखसागर, बीकानेर 334001;** संस्करण : **2019;** पृष्ठ संख्या : **96;** मूल्य : **₹ 200।**

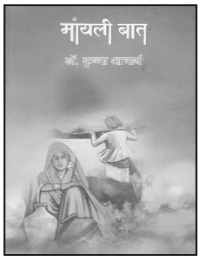

अंतस री मनगत बतावती 'मांयली बात' राजस्थानी साहित्य जगत में अध्यापिका डॉ. कृष्णा आचार्य अबै किणी परिचै री मोहताज नीं है। राजस्थानी कथाकार अर कवयित्री रै रूप में सावळ ओळखीजण-जाणीजण रै सागै वै हिन्दी में ई बरोबर लिख रैयी है। 'मायंली बात' सूं पैली राजस्थानी में बांरौ कहाणी-संग्रै 'लाल चूड़ो' घणौ चरचा में रैयौ। इणरै टाळ वै राजस्थानी में कवितावां ई रचती रैयी है। अबार लग राजस्थानी में वांरा तीन कविता-संग्रै 'काळजो कसमसावै', 'आंख्यां मांय सुपनो' अर लॉकडाउन रै दौरान रच्योड़ौ 'कोरोना/पार थारी कियां पड़ैला' पाठकां तांई पूग चुक्या है।

डॉ. कृष्णा आचार्य री कहाणियां साधारण भावभोम री हुवतां थकां ई उणां रै ओळावै पात्रां रै मन री पीड़ घणै मार्मिक ढंग सूं उकेरीजी है। बांरी कहाणियां रा पात्र वांरै आसै-पासै रा ईज है, जिणां री मनगत, अबखायां अर जीवण-जूझ नैं वै घणै सांतरै ढंग सूं पाठकां रै साम्हीं राखै, साथै ई कहाणी रै अंत में वै आदर्श राखण रै सागै सिखावणी पण देवै।

संग्रै री सिरैनांव कहाणी 'मांयली बात' री ई बात करां तो आ कहाणी अंतस री मनगत नैं उजागर करै। इणमें अेक गरीब परिवार री 'बाबै' (लोकदेवता रामदेवजी) रै पेटै घणी आस्था है। कहाणी री नायिका पारबती री हियैतणी मनस्या अर अेक सुपनौ है कै वा भी आपरै धणी सागै जोड़ै सूं ऊंटगाडै माथै रुणीचै जावै। इण सारू उणरो धणी भोळियो अर वा दो-दो, पांच-पांच रुपिया बचावण री आफळ करै अर बाबै रै मेळौ आवै जित्तै मेळै जावण रै खरचै रौ जुगाड़ कर लेवै, पण अैन टेम माथै मोहल्लै रा मौजीज लोग बाबै रा जातरुआं सारू 'मारग-सेवा' रौ चंदौ मांगण नै आय जावै अर बांनै आपरै घर री इज्जत राखण सारू साल भर सूं भेळा करियोड़ा छः सौ मांय सूं पांच सौ रुपिया मालजी नैं चंदै रा देवणा पड़ै। भोळियौ तो चंदौ देवण सारू आगौ-पाछौ हुवै, पण पारबती आपरै मेळै जावण रै सुपनै नैं त्याज'र कैवै:

''म्हारै सुपनै सूं बेसी इण घर री इज्जत रौ सवाल है। मा'सा अर जीसा कदैई इण मामलै में आपरी नाक नीं कटण दी। काका (मालजी) भी की आस लेय'र ई आपणै घरां आवै। फेरूं धरम-करम रौ काम है, आपां नैं तो पुन्न ई मिलसी, इण मांय किण बात रौ नटणौ! थे जाय'र मालजी नैं अै रुपिया देय दो। देख्या, बाबौ आपणै इण काम सूं खुस होय'र आपां नैं आपां रै काम मांय घणी ई बरकत देसी अर आवतै साल गाडै माथै बैठ'र जरूर मेळौ देखण नै चालसां।''

संग्रै मांय कुल 32 कहाणियां है, जिणां री कथावस्तु लगैटगै कोई न कोई समाजू सरोकार लियोड़ी है। इण मांय बाळपणै सूं लेय'र बुढापै तांई री बातां है। टाबरां रै पेटै माईतां रौ लगाव अर बुढापै मांय माईतां रै पेटै टाबरां री अणदेखी नैं लेय'र डॉ. कृष्णाजी मोकळी कहाणियां रची है, जिणमें 'लिछमी री मां' अर 'बुढापै री जिनगाणी' खास रूप सूं पाठकां रौ ध्यान खींचै।

अै कहाणियां समाजू सरोकारां, अबखायां अर विडरूपतावां रौ अेक दरदीलो दस्तावेज है, तो साथै ई वांरै समाधान री आफळ ई कहाणीकार कानी सूं करण री खेचळ है। समाजू कुरीतियां, कुप्रथावां, नसै री लत सूं घर रौ खोगाळ आद केई कथ्य आं कहाणियां मांय उकेरीज्या है। 'सगै री समझदारी', 'काकै रा लखण', 'कस्तूरी री समझ' 'दाय मां', 'बिना पाणी री माछली', 'दूजै री खुसी खातर' इणीज भांत री सिरै कहाणियां है।

संग्रै री छेहली कहाणी 'इयां ना डुबावो बाबूजी!' ओसार में ओछी हुवतां थकां ई घणी मार्मिक बण पड़ी है। हेमली (हेमलता) घणी पढ़ी-लिखी अर स्याणी-समझणी है, पण उणरै जोड़ रौ पढ्यौ-लिख्यौ जोगौ टाबर नीं मिल रैयौ। उण रा सगळा भाई परणीज्यां पछै आपमत्तै न्यारा-निरवाळा रस-बस जावै अर हेमली अर उणरै बापू नैं वांरै भरोसै रैवणौ अर वांरौ हाळीपौ करणौ पड़ै। बेटां री बहुवां चालती ई पीहर लंघ जावै तो घर रौ सागळौ खोरसौ हेमली नैं करणौ पड़ै। पण जद उणरी सरकारी नौकरी लाग जावै अर स्हैर जावणौ पड़ै तो भाई-भोजाई खंच खावण लागै। उणरौ रिस्तौ भी आपरै सासरै कानी रै अेक अैड़ै नाजोगै आदमी सूं करावणौ चावै जिकौ नसैड़ी न्यारौ है। छेवट बा आपरै बापू मूळजी नैं आपरै अंतस री मनगत नैं कैय दरसावै-''इयां ना डुबावो, बाबूजी!''

टूकै में इण कहाणी-संग्रै री छोटी-छोटी कहाणियां भी समाजू सरोकारां रै सागै-सागै दलित विमर्स, स्त्री विमर्स अर वृद्ध विमर्स री लूंठी बानगी है। डॉ. कृष्णा आचार्य रै इण कहाणी-संग्रै 'मांयली बात' नैं भी 'लाल चूड़ो' रै भांत ई राजस्थानी साहित्य जगत में ओपतौ आवकारौ मिलणौ चाईजै। आ सिवकामना।

समीक्षक : **शंकरसिंह राजपुरोहित**
राजपुरोहित रैवास, कृपाळ भैरूं मिंदर चौक,
सर्वोदय बस्ती, बीकानेर (राज.)-334004
मो: 7610825386

काया री कळझळ

लेखिका : **संतोष चौधरी;** प्रकाशक : **राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति, श्रीडूँगरगढ़;** संस्करण : **2020;** पृष्ठ संख्या : **112;** मूल्य : **₹ 200।**

बदलते वक्त के साथ साहित्य का परिवर्तित होना स्वाभाविक है, साहित्य समाज का दर्पण है और सिर्फ वही दिखाता है जो उसके सामने होता है। साहित्य अपना यह धर्म पूरी ईमानदारी व जिम्मेदारी से निभाता आ रहा है, परम्परा बनने से लेकर उसके रुढ़ होने तक व रुढ़ि के टूटने तक को साहित्य ने सहजता से स्वयं में समाहित किया है। इस निर्भीक लेखन के लिए लेखकों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करना प्रत्येक पाठक का धर्म बनता है।

राजस्थानी साहित्य में बातपोशी/हथाई/

बंतळ का एक अनूठा इतिहास रहा है। तात्कालिक समय के सच को लोक व लेखक ने अपने-अपने तरीके से सहेजा, समृद्ध किया व आने वाली पीढ़ियों को सौंपा। गवाड़/गट्टों व पाटों से होती हथाई सोशल मीडिया के मंचों तक पहुँची और वहाँ जाकर थोड़ी आकळ-बाकळ हो गई। क्योंकि ग्लोबल होने की होड़ में अपनी देशी पहचान कहीं पीछे छूट रही है। सब जानते हैं जड़ों व जमीन के बिना कोई भी लेखक नहीं ठहरता। फिर भी लेखन अपनी गति से निरन्तर जारी है।

साहित्य अपनी चौकीदार, चेतना को चूंटिये भरकर जागरूक करने के प्रयासों में कतई पीछे नहीं है। विगत पर नजर डालें तो लेखकों में पुरुष की कलम का बोलबाला व धणियाप बना रहा है। यहाँ तक कि स्त्री मन को लिखने का जिम्मा भी उन्होंने ही ले लिया। इक्का-दुक्का महिलाओं ने जब लिखना प्रारम्भ किया तो उन्हें सहारा जरूर दिया किन्तु स्वतंत्र नहीं होने दिया। स्त्री के लेखन को थोड़ा हल्का और उसका ही विलाप माना व मनवाया गया। लेकिन स्त्री और उसकी क्षमताएँ धरा की कोख में दबी वह चीज है जो परती भूमि को तोड़ कर कभी भी अंखुवा सकता है। ऐसी ही यह साहित्यिक यात्रा लक्ष्मी कुमारी चूड़ावत से कमला कमलेश तक जारी रही। साहित्य ने बहुत करवटें बदली, गाँव-गवाड़ी घर आँगन से होते हुए कहानी मन आँगन तक पहुँची। स्थूल से सूक्ष्म की ओर की विकास यात्रा में पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक व भावनात्मक परिवर्तनों को अंगेजते हुए अपनी पहचान बनाई। साहित्य की विद्यार्थी होने के नाते कह सकती हूँ कि राजस्थानी गद्य साहित्य ने स्वयं को पुनर्परिभाषित किया। बिम्ब, प्रतीकों, रूपकों, विषय वस्तु व उनके निर्वाह का सर्वथा नवीन कैनवास तैयार किया। जहाँ वह वैश्विक साहित्य के साथ सम्मान के साथ न सिर्फ खड़ा होता है बल्कि अपनी जड़ों को सहेजता, संभालता व सींचता है। संतोष चौधरी का राजस्थानी कहानी संग्रह 'काया री कळझळ' राजस्थानी साहित्य के वयस्क व मुखर होते पक्ष को उजागर करता है। यह संग्रह साहित्यिक घटाटोप में ताजा पुरवाई का अहसास भी कराता है। किसी भी क्षेत्रीय या आंचलिक भाषा के साहित्य लेखन में दो चुनौतियाँ विशेष रूप से स्पष्ट होती हैं। एक लेखक की वैयक्तिकता दूसरा जड़ों से जुड़ाव। बदलते वक्त मूल्यों, निष्ठाओं को लिखने की कोशिश में यदि जड़ें छूट जाए तो साहित्य पूर्ण शृंगार किए हुए मुर्दा सुहागन जैसा प्रतीत होता है।

संतोष चौधरी का कहानी संग्रह इन सभी आशंकाओं, संदेहों को परे ठेलता अपनी विशिष्ट ग्राम्य सौरभ के साथ ग्लोबल होता है और यह विश्वास दिलाता है कि भाषा भावों की अभिव्यक्ति का साधन है। लेखक में यदि क्षमता हो तो वह किसी भी आंचलिक भाषा में विश्वस्तरीय साहित्य सृजन कर सकता है। राष्ट्र भाषा प्रचार समिति श्रीडूँगरगढ़ से छपे कुल 11 कहानियों के संग्रह में संतोष चौधरी ने अपनी लेखकीय समझ, सूझ, अनुभव व संभावनाओं को चतुराई से उद्घाटित किया है। सभी कहानियों में मिट्टी की खुशबू व परम्परा के चटख रंग हैं। साथ ही लेखिका परम्परा को रुढ़ि बनते देख उसे तोड़ने का हौंसला रखती है। यही सूझ साहित्य की थाती है।

आप-थापै कहानी से प्रारम्भ मन के विश्लेषण का सफर आपरो खून, टूंटियों, बा, चाँद रै पार, दूजवर, मन रा डोरा, ओळखाण, काया री कळझळ, बड़ी माँ से होता एक ठहरयोड़ी रात तक पहुँचता है। आधुनिकता को परोसते हुए गाँव को संभाले रखने का हुनर इन कहानियों की विशेषता है। रिश्तों का, रिश्तों के सत्य का व उनके भ्रम का पोस्टमार्टम करते हुए सब खोलकर कहने की लेखकीय खामचाई व हिम्मत सराहनीय है। स्त्री को केन्द्र में रखकर रचा गया यह कथा संसार स्त्री के बहाने पुरुष मन की पड़ताल भी करता है। देह को सीढ़ी बनाकर आगे बढ़ने का बेशर्म तरीका या टूंटियें जैसी लोक परम्परा के द्वारा पति-पत्नी के सम्बन्धों की थाह लेना, 'अपना खून' कहानी में खालिस वंश परम्परा को निभाने की, आफळ में चुप्पे अनैतिक सम्बन्धों को त्याग की चादर से ढककर प्रकट करना हो, लेखिका संतोष जी ने बहुत स्पष्ट तरीके से अपने पात्रों के माध्यम से किया है।

बा, मन रा डोरा, आपरो खून जैसी कहानियों में स्त्री अपने पारम्परिक, पीड़ित, त्याग की मूर्ति व मासूम भूमिका में व्यवस्था के साथ दो-दो हाथ करती नजर आती है। काया री कळझळ व बड़ी माँ की स्त्री परिवर्तित होते समय की साक्षी बनकर निर्णयात्मक कदम भी उठाती है। लेखिका अपने पात्रों को खारी और खरी होने का हक देती है।

औळखाण कहानी की पात्र प्रियंका समाज में व्याप्त दलित, पिछड़े अछूत के अभिजात्य बनने की कोशिशों में जड़ों में उखड़ने के दर्द को बयान करती है। किन्तु अन्त में अपनी मूल पहचान ही व्यक्ति को 'भय' से मुक्त करवाती है। यह स्थापित करती है।

इस संग्रह की अंतिम कहानी 'एक ठहरयोड़ी रात' लेखिका की क्षमता का कोहिनूर है। इस पूरी कहानी में सिर्फ चौबीस घण्टे हैं किन्तु स्त्री व पुरुष के सनातन दैहिक अनुभवों व ऐहिक कामनाओं का खूबसूरत प्रकटीकरण है। मृगनयनी के माध्यम से हर स्त्री स्वयं को मुखरित करती हुए प्रतीत होती है। यह संतोष चौधरी के महिला पात्रों की खासियत है कि वे अपने-अपने दायरों में पूर्ण स्वतंत्र है। यह स्वतंत्रता पाठक को अपनी भीतर भी महसूस होती है। किसी बड़े लेखक ने कहा है- 'जब पाठक या श्रोता रचना के साथ बह जाता है तो वह लेखक या रचना की सफलता नहीं होती वह पाठक या श्रोता की होती है। किन्तु जब कोई रचना मौन रहकर चेतना में उतर जाती है व उसका खारापन विचार सूत्र के रूप में ठहर जाता है तो यह लेखक और उसकी रचना की सफलता है।' इस दृष्टिकोण से संग्रह की सभी कहानियाँ चेतना में ठहरती, ठिठकती व स्वयं को अनुभूत करवाती है। किसी भी प्रादेशिक भाषा के साहित्यकार की बड़ी चुनौती अपने लेखन में अपनी पहचान को बनाए व बचाए रखना होता है। पिछले कुछ समय ऐसा राजस्थानी साहित्य भी सामने आया जिसमें मात्र भाषा की देह थी उसकी आत्मा नहीं। यूँ भी कह सकते हैं कि वह हिन्दी का राजस्थानी भाषानुवाद है। प्रायः लेखकों को लगने लगा है कि राजस्थानी भाषा में लिखकर शीघ्र पहचान बनाई जा सकती है। जिसके लिए उन्हें मात्र गाँव, गाँव के पात्र, सरपंच कुछ पुरानी परम्पराओं व वस्तुओं के नाम शब्दकोश से उठाकर जमाने हैं जिससे राजस्थानी रचना तैयार हो जाती है, वे शायद यह भूल जाते है कि शब्द ब्रह्म होता है व भाषा की अपनी आत्मा होती है।

आत्मा विहीन रचना मृतक के समान है। इस पृष्ठभूमि में देखते हैं तो संतोष चौधरी की भाषा ठेठ राजस्थानी भाषा है। उसकी मठौठ, चमक, उसका सहज हास्य, चमत्कार पूर्ण मुहावरे, बिम्ब, प्रतीक सभी उनकी लेखन की आत्मा बनकर संग्रह में सामने आते हैं। यह उनकी लेखकीय सूझ-समझ व योग्यता का परिचायक भी है। भाषा पर मजबूत पकड़ व भाषा को बरतने का सलीका इन कहानियों को विशिष्टता प्रदान करता है। समकालीन साहित्य में इस संग्रह को विशिष्ट स्थान मिलना इसका बोल्ड व खुला लेखन भी है, यह बोल्ड लेखन पात्रानुसार स्टेटमेंट के रूप में आकर कहानी के साथ न्याय करते हैं न कि दिखावे की भर्ती के रूप में आता है। उदाहरण स्वरूप देखें-'भारत मांय चरित्र रो प्रमाण फकत बिस्तर नै क्यूं माने है?' संतोष चौधरी के संवाद पात्रों के मनोभाव को न्यायोचित रूप से सामने लाने के साथ समाज से सटीक व कड़वे प्रश्न भी पूछते हैं। शब्दों से भावों के चित्र गढ़ने का सलीका बहुत उम्दा है। 'कांचळी मांय धक-धक करतो म्हारो काळजो और भारी लहंगा मांय म्हारे खानदान की मरजाद एकर तो थरथरायेगी' ये हौसला राजस्थानी भाषा व साहित्य के लिए गुमेज की बातें हैं। इस संग्रह की अंतिम कहानी विषय वस्तु, कहन व कथन के हिसाब से श्रेष्ठ है। इस कहानी में लेखिका कविता बुनती है व अन्तस के गहरे नाजुक भावों, अनुभूतियों को शब्दों व कल्पनाओं से विस्तार देती है। पढ़ते समय लगता है जैसे जमीन से जुड़ा वृक्ष आसमान की ओर बाहें फैलाए उसे स्वयं में समेट लेने को उचक रहा हो। भाषा के मुहावरे को मीनाकारी की तरह बरतती लेखिका हृदय को छूती हुई पीड़ को पाठक की मुट्ठी में मोती की तरह धर देती है। सुहागरात के बाद की सामाजिक जाँच परख व भोगे गए बलात्कार को बड़े काव्यात्मक ढंग से लेखिका ने लिखा है। 'सेज रै धवळै चादरै माथै मिल्या लोही रा की छांटा म्हारी आंख्या सूं निकळयोड़ा लाल आंसू हा अर वै पुराणी लुगायां इण बात री खुशी मनावै ही। एक आदमी रै अहम री जीत अर लुगाई रै हारण रो उच्छब मनाईजै।

इसी तरह चाँद का बहुत सुघड़ व नया प्रयोग इस कहानी में हुआ है जो कि समकालीन साहित्य में बहुत कम देखने-पढ़ने को मिला है। अलग-अलग भावनाओं, अहसासों व स्थितियों को दर्शाने के लिए चाँद का व्यंजनात्मक प्रयोग सराहनीय है। 'काती रै महीने री रात माथै सितारा टंक्योड़ा आभै रै सावंळै उजास सागै हळको मोतिया आब चिळकै हो। चांद री अबरक झाड़ती सी रात नै वा रोशन करती सी लखावै री।'

'बा म्हारी इण बात मुळकी जाणै आभै रो चांद चैरा माथै उतरग्यो।' दुःख में चाँद की क्रूरतम लेखकीय अभिव्यक्ति पाठक को विचलित करती है। 'छिण मांय चांद की धवळता लाश माथै नाख्योड़ धोळे खांपण जैड़ी लागण लागगी।' गद्य का यह सरस प्रवाह, अलंकारों का सटीक सार्थक प्रयोग लेखिका से बहुत उम्मीदें बंधाता है। साथ ही यह भाषा की समृद्धता का प्रतीक भी है। गंवारू माने जाने वाली राजस्थानी भाषा वैश्विक उपमानों से अलंकृत होकर विरोधियों के चेहरों पर तमाचा जड़ती है।

इस संग्रह में प्रेम की न्यारी और अनोखी व्यंजना काया की उपस्थिति के बावजूद उन्हें उदात्त ऊँचाइयाँ देती हैं। स्त्री के अन्तर्मन को फरोळती व उजागर करती है। जीवन दर्शन व आध्यात्मिकता का बेजोड़ संगम पढ़ते चेतना पर काबिज होता है। 'सैक्स म्हारे सारू देह सूं करयोड़ी प्रार्थना ज्यूं है जकी मांय दोय देह हथेलियां ज्यूं आपसरी मांय जुड़ने अर अेक ही ताल सूं बंधै।' राजस्थान साहित्य के लिए यह व्यंजना चमत्कृत कर देने वाली घटना है। क्योंकि हम सेक्स व योनिकता के नाम पर बिदकने वाले दोगले समाज में रहते हैं। जहाँ प्रकृति प्रदत्त गुण व भावों को नकार कर स्वयं को जितेन्द्रिय दिखाने की होड़ रहती है तथा ऐसी ही बातों, व्यवहारों पर व्यक्ति का चारित्रिक निर्धारण करके उसके पक्ष या विपक्ष में फैसला देने के लिए हर पल तैयार रहते हैं। ऐसे में किसी लेखिका का इतनी सहजता से लिखना उसके चरित्र में ताके-झांके बिना पचा लिया जाएगा थोड़ा मुश्किल लगता है? लेखिका अपने लेखकीय धर्म पर अडिग है। वह पुरुष के कायिक मन की विवेचना करती हुई लेखन को नवीन विचार व धार देती है। जब वह अपनी पात्र मृगनयनी से कहलवाती है 'जरूरी नी कै लुगाई री आदमी री देह हमेशा हथेलियां ज्यूं जुड़नै ईश प्रार्थना करै, कदैस बै न्यारी रैयनै ई सनातन साथ निभाय सकै, महादेव रै जैकारै मांय ज्यूं हाथा ने आपां ऊँचा लेयनै बारो सिमरण करां बियांन ई दोयां हाथां नै भेळा करयां बिना ही आपां एक दूजे ने याद राख सकां हां।'

कहानियों का यह प्रस्थान बिन्दु तय करने व लेखकों के लिए नया सीमांकन बाँधने के लिए संतोष चौधरी को साधुवाद। यह संग्रह राजस्थानी गद्य साहित्य में मील का पत्थर बनेगा व उसे नई पहचान व ऊँचाइयाँ प्रदान करेगा ऐसी उम्मीद है।

समीक्षक : **मोनिका गौड़**
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय,
इ.गां.न.प. कॉलोनी, बीकानेर (राज.)
मो: 9799094548

बगत रो फेर

उपन्यासकार : **डॉ. सूरज सिंह नेगी ;** अनुवादक : **श्रीमती विमला नागला;** प्रकाशक : **राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति श्रीडूँगरगढ़, बीकानेर ;** पृष्ठ संख्या : **96 ;** मूल्य : ₹ **200**।

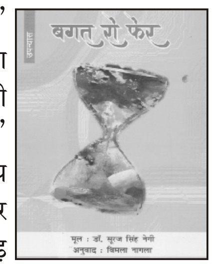

'बगत रो फेर' डॉ. सूरजसिंह नेगी रा चावां ठावा हिन्दी उपन्यास 'नियति चक्र' रो मायड़ भासा मांय उल्थौ है। उल्थाकार विमला नागला मायड़ भासा रै सिरजण मांय आपरी लूंठी ठौर राखै। आ बात पोथी रै भणिया पाछै निगै आवै कि पोथी कठै भी अनूदित कोनी लागै अर आप रै मूल भाव सूं ही पाठकां रा हिंया मांय रस भरै कैवण रो अरथ आ पोथी कोरो सबदां रो ही बदळाव मायड़ भासा मांय कोनी करै, आ भासा रै सागै मांयड़ भासा री मिठास नै भी सांवरता थका उणरी मिठास सूं हियां ने अपावै है।

आ पोथी बरतमान रै मांय जीवनमूल्यां में आवती गिरावट रै पाछै स्वारथ री पसरती बेलड़ी रै पाछै रा परणाय सारू मिनखां नै चैताता थका आं खेचळ करै कि सत्य रा मारग पर परोपकार करता चाल रैया मिनखां रै जीवण मांय भी घणा उतार-चढ़ाव आवै है, हो सकै थोड़ी घड़ी सारू वो मिनखां नै बैचेन भी कर दैवै, पण सांच बात या है कै जीवण मूल्यां, आदर्श, परोपकार,

ईमानदारी, त्याग अर संवेदनशीलता रा गुण ईज है जड़ा मानव सभ्यता रै सरू सूं लेय'र उणरै सागै है, जिणरी चमक कठैई फीकी कोनी पड़ै। डॉ. सूरजसिंह नेगी प्रसासनिक अधिकारी अर मानीता मानवीय अर नैतिक मूल्यां पर आधारित सिरजण सारू समाज रै मांय आपणी अनूठी ठौर राखै। डॉ. नेगी री सामाजिक विसै वस्तु रौ आधार जीवनगत मूल्यां माथै आधारित होवण री साख उणरो उपन्यास खुद ही भरै। समाज मांय नित नुंवां परिवर्तन रै सागै नुवीं पीढ़ी रो बदलतौ व्यौहार, समाज रा बूढ़ा बढ़ेरा कानी उणरी गिनार नी करणो जैड़ी बातां सूं लेखक रो मन घणौ बैराजी होवै अर इण कारणै ही उणरी सांतरी कलम इण दिसा मांय लगोलग बंधण लागी।

इण पोथी मांय गांवा अर सहरां दोन्यूं ही जगा रा परवेस, चरितर रो बदलाव निगै आवै, सागै ही लेखक समाज रा दोन्यूं पखा माथै आपणी कड़ी दीठ राखै... समाज रै मांय घट्यौड़ी घटनांवा रो सांतरौ बरणाव, समस्यावां रा लूठा चित राम रे सागै प्राकृतिक आपदावां, माई मां, गरीबी, कन्या भ्रूण हत्या, परीच्छा मांय असफलता अर धन रा गुमान माथै बूढ़ा बढ़ेरा री अण देखी, गांवा नै छोड़र शहर कानी भागबा री होड़, समाज मांय ईर्ष्या, गरब, राग देस, मांयता री अण देखी, सरकारी दफ्तरां रो सांच अर झूठ, कपट सगली ऐड़ी बुराइयां जिकी समाज मांय बापरै, उणनैं लेखन सारू मजबूर करै।

वठै ही दूजी कानीं लेखक आपरी सकारात्मक दीठ सूं आपसरी रै मांय भाईचारो, प्रेम, रिस्तां रै मांय री उरजा गरमाट भरता भी निगै आवै। अठै कलम समाज नै पूछती दिखै.. कांई इण संसार मांय भावनाओं, प्रेम अर ममता रो महत्त्व ही कोनी कै? मिनख नै सरीर री मांदगी सूं बैसी, मन री मांदगी कमजोर करै है। सांच ही लागै है या बात अर औजूं नवीं पीढ़ी नै चेताता तकां कियो कै जै जीवन मांय एक कानी चाहै कितरी भी धन दौलत हो जावै पण दूजी कानी जै नैतिक अर चरितर रा गुण कोनी होवै तो ओ जीवन रो कोई अरथाव कोनी राखै। उपन्यास विधा सूं मिनखां रा जीवन मांय परिवर्तन री सोच लेखक री जीवन दरसन मांय सांतरी दीठ री औलखाण करावै सागै ही लुगायां रा चरितर कानी लेखक री सकारात्मक सोच सांमी आवै..

डॉ. नेगी रा कथानक मांय ऐक अनूठी सोच, डायरी अर पाती सैली री है जिण सूं समाज नै नुंवी सोच दिसा अर प्रेरणा मिलसी। मायड़ भासा री लेखिका विमला नागला कानी सूं अनूदित 'बगत रो फेर' उपन्यास पाठको नै रुचसी। ओपते उणियारै अर पूरी गंभीरती साथै साम्हीं आयो है औ भावानुवाद उल्थो। उल्थाकार री ऊरमा री साख भरै। विमला नागला री सातरी कलम लगोलग मायड़ भासा मांय आगे बधती थका नित नुवो सिरजण करै।

इणी शुभकामना सागै, घणा रंग

समीक्षक : **डॉ. योगेन्द्र सिंह नरूका 'फुलेता'**
सहायक निदेशक
निदेशालय माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर
मोः 9602942594

पत्थर भी मुखड़ा खोलेंगे

कवि : **रघुबीर सिंह नाहर;** प्रकाशक : **श्वेतवर्ण प्रकाशन, लोकनायक पुरम, नई दिल्ली– 110041;** संस्करण : **2020;** पृष्ठ संख्या : **104;** मूल्यः **₹ 200**।

कवि रघुबीर सिंह नाहर के सद्य: प्रकाशित काव्य संग्रह 'पत्थर भी मुखड़ा खोलेंगे' में कुल 67 कविताएँ संगृहीत हैं, जो 103 पृष्ठों में समावेशित हैं। विभिन्न शीर्षकों से सृजित कविताएँ मानवीय सरोकार, संवेदना और सौहार्द्र का बोध कराती हैं। काव्य शास्त्र में सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम् को काव्य की मूल भावना के रूप में प्रतिपादित किया गया है। नाहर जी की इन कविताओं में सत्यम् सहजता, शिवम् सजगता और सुंदरम् अनुभूतियों का दिग्दर्शन है।

समीक्ष्य कृति की शीर्षक कविता 'पत्थर भी मुखड़ा खोलेंगे' में पत्थर कठोरता और नकारात्मक सोच के रूप में नहीं, मानव मन की कोमलता और अपनत्व के बरअक्स प्रतिपादित है–

पत्थर कला सिखाते हैं,
पत्थर ही हमें नचाते हैं।
पत्थर ही साज सजाते हैं,
पत्थर ही तान सुनाते हैं।
पत्थर के दिल भी होता है,
पत्थर के मन भी होता है।
पत्थर भी सजता धजता है,
पत्थर भी आहें भरता है।
पत्थर भी मुखड़ा खोलेंगे,
मैं उन्हें जगाने आया हूँ।

'चिड़ियाघर के बंदी' कविता में कवि चिड़ियाघर में बंद बेकसूर चिड़ियों की वेदना से संवाद करता है। कवि का यह संवाद कविता को ऐसा करुणामय बना देता है कि पाषाण हृदय भी कराह उठता है। यहाँ कवि व्यथित है कि मानव ने पंखेरुओं की उड़ान की भी सीमाबंदी कर दी है। जबकि परिंदे की प्रकृति तो अम्बर का चुम्बन लेने की हुआ करती है। कवि पक्षियों के पक्ष में सवाल खड़ा करता है–

क्यों बना कर चिड़ियाघर
चिड़ियों को बंद किया मानव!
वे नव बेला की धारा हैं,
कुछ गीत खुशी के गाती हैं।
अपने पंखों को फैला कर
अम्बर चुम्बन कर जाती हैं।

'आगे ही बढ़ता जाऊँगा' प्रतीकात्मक कविता है। यहाँ पंखेरू के माध्यम से इंसान के हौसले की उड़ान मापने को कवि आतुर दिखाई देता है–

दिनकर, शशि, सितारे मापूँ,
चपला, चमक, चाँदनी मापूँ।
तिनका–तिनका चूम–चूम कर
सागर की गहराई मापूँ।
पंखों से ढाल बनाऊँगा,
पँखों से पाल बनाऊँगा।
आगे ही बढ़ता जाऊँगा,
आगे ही बढ़ता जाऊँगा।

''सपना कविता में कवि–मन और सपना का अपनापा है। सपना कवि के मन में जिस प्रकार से बेचैनी पैदा करता है, यह वह सपना नहीं हैं जो रात को निंद्रा में आया करता है, यह वह सपना है, जो सोने नहीं देता। इसे कवि–मन की भावभूमि का निरुपण माना जा सकता है। कवि लिखता है–

अरे वो सपने
मदन बन।

भले आता है।
जब दिल यहाँ,
कभी हँसाता
कभी रुलाता है।

संग्रह में छंदालंकार से परिपूर्ण कविताओं के अतिरिक्त मुक्त छंद कविताएँ भी समिल्लित हैं। लेकिन इन कविताओं में पद्य का भाव कहीं भी विचलित नहीं होता है। बतौर बानगी 'सागर' कवितांश प्रस्तुत है:-

वो जिससे पूछेगा
नदी की कलकल
धरा का सन्नाटा
मेघ की गर्जन
समुद्र का ज्वार भाटा,
इंसा के साथ?
फिर से कर डालो
एक और सागर मंथन।

इसी प्रकार कवि नाहर की 'दिशासूचक' कविता समता का भाव प्रतिपादित करती है। 'लौट चलो' में अतीत के उस वक्त का स्मरण है, जब भारत सोने की चिड़िया कहलाता था। 'हस्तरेखा' कविता में जहाँ अन्नदाता की भाग्यविधाता के रूप में स्थापना है, वहीं 'पिंजरा' में लोहकूट लोहार की जीवनव्यथा यह है कि मेहनतकश पिंजर हो कर किस प्रकार देह त्यागता है। 'मेरा गाँव' कविता में गंवई गंध को शहराती परिवेश से बचा कर रखने का आह्वान है तो 'ताप' कविता में पर्यावरण के प्रति सजगता है।

नाहर जी की चाहे 'नमक के पुतले' 'क्षणभंगुर' 'दर्पण' 'सृजन' हो या 'प्रेम का मोल' हर कविता में काव्य-तत्व विद्यमान है। सार्थकता सिद्ध करने की प्रतिबद्धता तो है ही, जमीनी यथार्थ से सरोकार उनका ध्येय है। इकहत्तर वर्षीय कवि ने जिस संवेदना, भावप्रवणता, भावभूमि, अनुभव और परिपक्वता से इन कविताओं को बुना है, वह काबिले गौर है। जिस प्रकार पका हुआ फल मीठा और स्वादु होता है, उसी प्रकार उम्र के ताप से सृजित ये कविताएँ काव्य रस से परिपूर्ण हैं।

समीक्षक : **रत्नकुमार सांभरिया**
भाड़ावास हाउस ब-137, महेश नगर,
जयपुर (राज.)-302015
मो : 9636053497

शिविरा - एक परिचय

राजस्थान सरकार के माध्यमिक शिक्षा विभाग राजस्थान, बीकानेर से प्रकाशित मासिक पत्रिका शिविरा (Shivira Patrika) जुलाई, 1966 से लगातार प्रकाशित की जा रही है। इस पत्रिका में शिक्षा विभागीय मासिक आदेश-परिपत्र एवं दिशा-निर्देश, साहित्यकारों व शिक्षकों तथा शिक्षा अधिकारियों के आलेख, नवाचार एवं शैक्षिक चिन्तन संबंधी रचनाएँ नियमित रूप से प्रकाशित होती हैं। स्थाई स्तम्भों में नवप्रकाशित पुस्तकों की समीक्षा, शाला प्रांगण के माध्यम से विद्यालयों में आयोजित सह शैक्षणिक गतिविधियों का प्रकाशन, हमारे भामाशाह के अन्तर्गत विद्यालयों में भामाशाहों के दिए गए सहयोग का जिले वार प्रकाशन। बाल शिविरा के माध्यम से विद्यार्थियों की रचनाएँ भी हाल ही में प्रारम्भ की गई हैं। विशेषांक में शैक्षिक चिन्तन, हिन्दी विविधा, हिन्दी कविता, बाल साहित्य एवं राजस्थानी साहित्य की श्रेष्ठत्तम रचनाओं का प्रकाशन कर, संग्रहणीय अंक प्रतिवर्ष जयपुर में राज्य सरकार द्वारा शिक्षक दिवस समारोह में विमोचन किया जाता रहा है । प्रत्येक माह प्रकाशित शिविरा का मई-जून अंक संयुक्तांक के रूप में प्रकाशित किया जाता है। इस प्रकार कुल 11 अंकों का नियमित प्रकाशन किया जाता है। पत्रिका का प्रत्येक अंक शिक्षा जगत से जुड़े प्रत्येक पाठक के लिए संग्रहणीय अंक के रूप में प्रकाशित करने का सम्पादक मण्डल सार्थक व सकारात्मक प्रयास नियमित रूप से करता है। शिविरा पत्रिका को क्रय करने की तीन केटेगरी निर्धारित की गयी हैं, प्रत्येक की दर अलग है।

व्यक्तिगत - Rs. 100/- वार्षिक, राजकीय संस्थान - Rs. 200/- वार्षिक, गैर-राजकीय संस्थान - Rs. 300/- वार्षिक

निर्धारित भुगतान प्राप्ति के पश्चात, अगले माह से शिविरा पत्रिका दिए गए पते पर पोस्ट कर दी जाती है। यह प्रत्येक माह की 5 अथवा 6 तारीख को साधारण डाक से सदस्यों को भेजी जाती है। इस बाबत किसी भी नुकसान की जिमेदारी प्रकाशक की नहीं होगी।

आवेदन प्रक्रिया

- शिक्षा विभाग के किसी भी पोर्टल यथा शालादार्पण पर दिए गए लिंक शिविरा पत्रिका हेतु ऑनलाइन आवेदन पर क्लिक कर सर्विस-प्लस पोर्टल को एक्सेस कीजिए।
- लेफ्ट साइड में दिए गए मेनू से पूर्व में पंजीयन नहीं किया हुआ है तो 'Register Yourself' मेनू आइटम के द्वारा पंजीयन करवाएँ।
- एक बार पंजियान होने के पश्चात दाईं और दिए गए लिंक 'Login' के माध्यम से पंजीकरण के समय दिए गए लोगिन/पासवर्ड द्वारा लॉग इन कीजिए।
- लोगिन के पश्चात बाएं और दिए गए मेनू आइटम के 'Apply Service' लिंक द्वारा आवेदन करें एवं चाही गयी सभी जानकारी ध्यान से भरें।
- पासवर्ड आदि भूलने की स्थिति में होम पेज के दायीं और दिए गए लिंक 'Forgot Password' बटन का इस्तेमाल करें ।
- ग्राहक के प्रकार एवं मासिक चाही गयी प्रतियों की संख्या का सही से चयन करें।
- आवेदन समाप्ति / आवेदन पत्र प्रिंट पश्चात दिए गए लिंक द्वारा राज्य सरकार के पेमेन्ट पोर्टल 'eGRass' के माध्यम से ऑनलाइन भुगतान करें। दिए गए लिंक पर क्लिक के पश्चात प्रोग्राम स्वयं ही इग्रास लिंक पर ले जाएगा। भुगतान के समय दिए गए निर्देशों को ध्यान से पढ़ें।

शिविरा प्रकाशन, माध्यमिक शिक्षा विभाग राजस्थान, बीकानेर
फोनः 0151-2528875, मोः सम्पादक : 9460618809, वरिष्ठ सम्पादकः 9461074850

बाल शिविरा

अपनी राजकीय शालाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों द्वारा सृजित एवं स्वरचित कविता, गीत, कहानी, बोधकथा एवं चित्रों को इस स्तम्भ में प्रकाशन हेतु नियमित रूप से संस्थाप्रधान/बालसभा प्रभारी भिजवाएं। श्रेष्ठ का चयन करते हुए इस स्तम्भ में प्रकाशन किया जाता है।

-व. संपादक

समय का महत्त्व

मानव ने आज ज्ञान-विज्ञान की सहायता से भौतिक साधनों पर अधिकार कर लिया। परन्तु समय अपराजेय है। भूली हुई विद्या, खोई हुई इज्जत, नष्ट हुआ धन, गिरा हुआ स्वास्थ्य और बिछड़े हुए दोस्त मिल सकते हैं परन्तु बीता हुआ समय वापस नहीं मिलता है। समय सबके लिए समान है और समय कभी किसी की प्रतीक्षा नहीं करता। इसीलिए कहा गया है कि समय चूकि पुनि का पछिताने। समय को धन के समान माना गया है। जिस प्रकार धन को सोच-समझकर खर्च करते हैं उसी प्रकार समय को भी सोच-समझकर बिताना चाहिए। समय पालन की शिक्षा हमें सूरज से लेनी चाहिए। सूरज रोज सवेरे अपने समय पर ही निकलता है और समय पर ही डूबता है। मुर्गा एक पक्षी होते हुए भी हमें समय पालन की प्रेरणा देता है। जानते हो कैसे? वह रोज-सवेरे बांग देकर लोगों को जगाता है। इसी तरह फूल अपने समय पर खिलते हैं। घड़ी भी समय-पालन का एक अच्छा उदाहरण है। जब तक काम समय पर होता है मनुष्य को सुख और आनन्द मिलता है। पर जब मनुष्य का काम समय पर नहीं होता है वह दुखी और परेशान रहता है। जीवन को सुखी बनाने के लिए हर काम ठीक समय पर ही करना चाहिए। ठीक समय पर काम करने से काम तो पूरा होता ही है पर सुख और आनन्द भी प्राप्त होता है। महात्मा गाँधी और चाचा नेहरू समय के बहुत पाबन्द थे। इनका मानना था कि मानव जीवन की सफलता का रहस्य समय के सदुपयोग में छिपा हुआ है। समय के सदुपयोग से सामान्य व्यक्ति भी महान बन जाता है। समय का काल रोके नहीं रूकता वह तो चलता ही रहता है इसलिए समय की प्रतीक्षा करने वाला नासमझ माना जाता है। समय का सदुपयोग जो कर सके, वही सफल जीवन जीता है। समय का सदुपयोग ही सभी प्रगति एवं सफलताओं का मूलमंत्र है।

1. **Time is Tide.** समय एक प्रवाह है।
2. **Time is Wealth.** समय ही धन है।
3. **Do not west time.** समय बर्बाद मत करो।

वन्दना व्यास

कक्षा-9

बाल मन को रचनात्मक कार्यों के लिए प्रेरित करने, उनमें सृजन के संस्कार देने हेतु विद्यालय स्तर से ही कविता, कहानी लिखने हेतु उचित वातावरण प्रदान करना चाहिए। प्रत्येक विद्यालय अपने विद्यार्थियों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति को 'बाल शिविरा' में प्रकट करने का अवसर दे सकते हैं। हमें विद्यालयों के छोटे-छोटे बाल रचनाकारों की रचनाओं का बेसब्री से इंतजार रहता है।

-वरिष्ठ संपादक

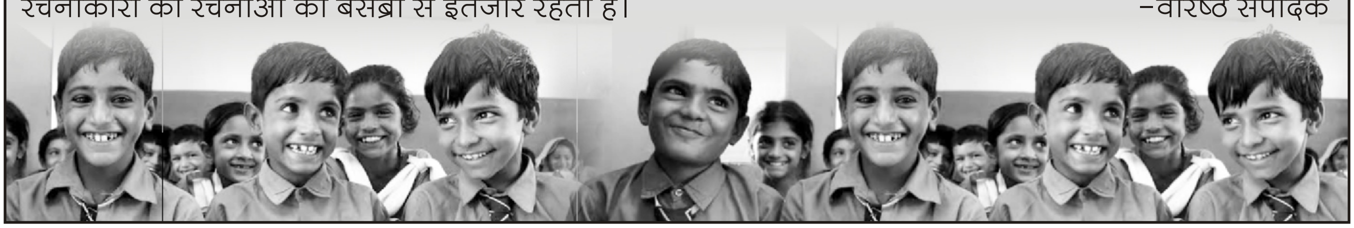

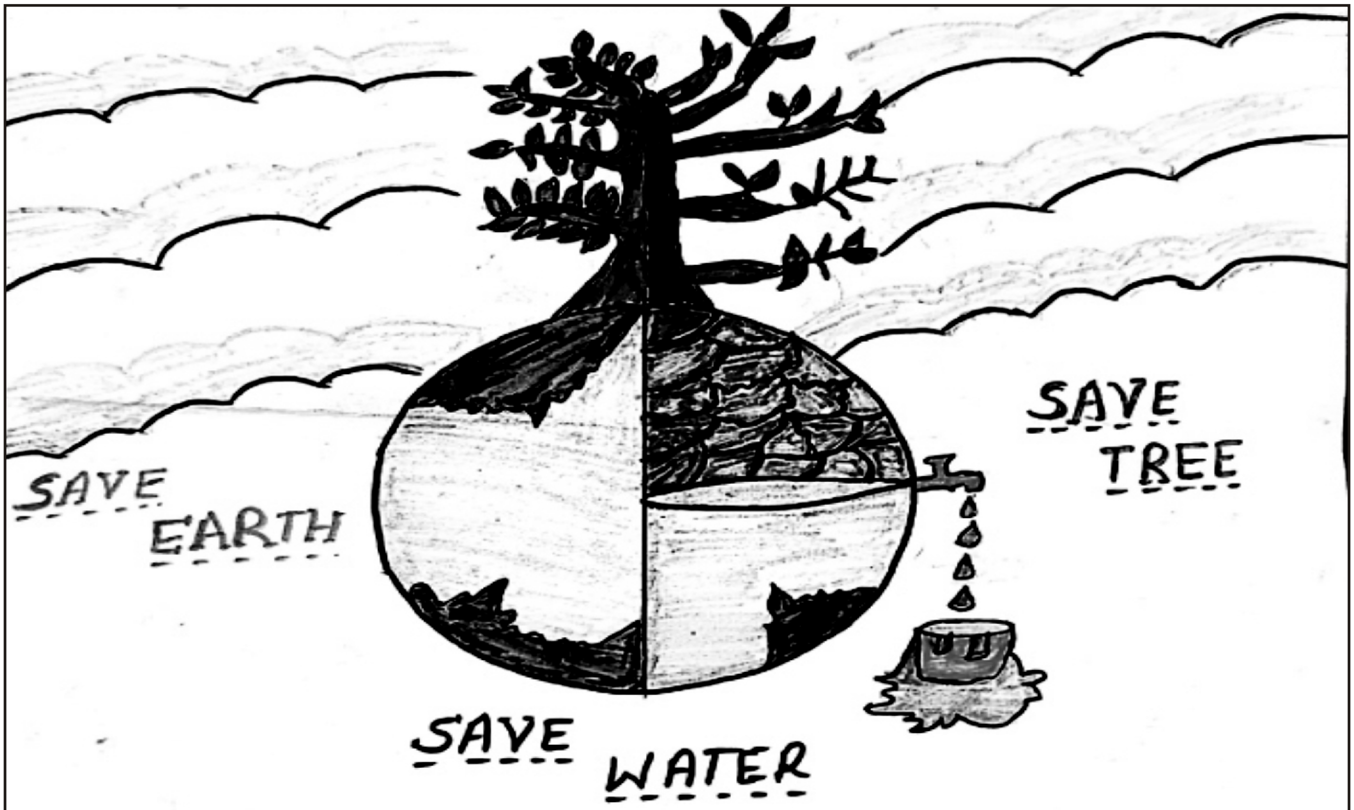

दीपिका गर्ग, कक्षा–10, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बिशनगढ़, सायला, जालोर

देव कंवर, कक्षा–2, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, बिशनगढ़, सायला, जालोर

शाला प्रांगण से

अपने शाला परिसर में आयोजित समस्त प्रकार की बालोपयोगी एवं शैक्षिक गतिविधियों को पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है अतः आयोजित कार्यक्रमों का प्रतिवेदन बनाकर **shivira.dse@rajasthan.gov.in** पर भिजवाकर सहयोग करें।

-व. संपादक

भामाशाह द्वारा विद्यालय को प्रिंटर भेंट

अजमेर : राजकीय माध्यमिक विद्यालय लाम्बा (मसूदा) अजमेर के वरिष्ठ अध्यापक उम्मेद सिंह और अध्यापक निलेश कुमार चौधरी ने मिलकर भामाशाह के रूप में विद्यालय में प्रिंटर HP-M1136 (कीमत 14,200 रुपये) भेंट किया। संस्थाप्रधान अब्दुल हसीब खाँ ने बताया कि यह कार्य अनुकरणीय एवं सराहनीय है। दोनों शिक्षक सदैव विद्यालय हितार्थ भौतिक सुविधाओं में अग्रणी रहे हैं। इससे पूर्व भी कार्यालय हेतु पंखे, कुर्सियाँ तथा विद्यालय प्रांगण में पुष्पवाटिका निर्माण हेतु फूलों वाले गमले भी भेंट किए हैं। साथ ही इन दोनों शिक्षकों का परीक्षा परिणाम भी लगातार शत-प्रतिशत रहा है। इस मौके पर शिक्षक महावीर प्रसाद जाँगिड़, गणपत लाल शर्मा, रामजीलाल सैनी, दशरथ लाल माली, सुमन निठारवाल, देवराज कांटीवाल आदि उपस्थित थे।

रंगारंग वार्षिकोत्सव सम्पन्न

बीकानेर : राज्य सरकार के आदेशानुसार राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय सांईसर के प्रांगण में वार्षिकोत्सव, भामाशाह सम्मान समारोह पूर्व विद्यार्थी संगम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के प्रारंभ में मुख्य अतिथि ACBO श्री शिवनारायण भादू, जिला परिषद सदस्य श्री राजाराम नैण, सरपंच श्री श्रवण SMC अध्यक्ष श्री भंवरलाल नैण एवं प्रधानाचार्य श्री गोमाराम जीनगर द्वारा माँ सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण व दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। तदुपरान्त रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत किए गए जिसमें लोकनृत्य, लोकगीत, देशभक्ति कविता, सूर्य नमस्कार के अलावा संस्कृत भाषा में गीत व 'संस्कृत भाषा का महत्त्व' विषय पर संस्कृत भाषण भी प्रस्तुत किया गया और ग्रीष्मावकाश में कोरोना महामारी से बचाने के लिए क्वारंटीन सेन्टर पर ड्यूटी देने वाले शिक्षकों को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। विद्यालय में उपस्थित भामाशाहों में से विद्यालय की रंगाई-पुताई कराने वाले पाँचू निवासी श्री उम्मेदाराम मेघवाल को साफा, शॉल व स्मृति चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया। अन्य भामाशाह श्री हरीश नैण (वरिष्ठ अध्यापक) की अनुपस्थिति में उनका धन्यवाद ज्ञापित किया गया है। सत्र 2019-20 में कक्षा 10 व कक्षा 12 के श्रेष्ठ परिणाम देने वाले 3-3 विद्यार्थियों को स्मृति चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया। कक्षा 12 में उत्कृष्ट परिणाम के फलस्वरूप बालिका प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त करने वाली तीन छात्राएँ मैनका नैण, टीना भादू एवं पूजा खावा को भी स्मृति चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया। विद्यालय से स्थानांतरित श्री मुकेश कुमार (व्याख्याता, हिन्दी) एवं श्री मांगीलाल अध्यापक (L-2) को बुलाकर विद्यालय परिवार द्वारा साफा बंधवाकर, शॉल व प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। पूर्व विद्यार्थी पतराम विश्नोई (अध्यापक) द्वारा कक्षा 10 व 12 में श्रेष्ठ परिणाम देने वाले एक-एक विद्यार्थी को चाँदी का सिक्का प्रदान कर सम्मानित किया।

ACBO श्री शिवनारायण भादू ने उपस्थित जन समुदाय व विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए शिक्षा का महत्त्व व वार्षिक उत्सव की उपयोगिता व संकल्पनाओं पर चर्चा करते हुए कहा कि भामाशाह विद्यालय की भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने में सक्रिय भूमिका निभाएं और विद्यार्थी व शिक्षकों के बीच सेतु का काम करें। SMC अध्यक्ष श्री भंवरलाल नैण ने अपने उद्बोधन में छात्रों को कड़ी मेहनत कर श्रेष्ठ परिणाम प्राप्त करने का आह्वान किया। अंत में प्रधानाचार्य श्री गोमाराम जीनगर ने भामाशाह पूर्व विद्यार्थियों व आगन्तुक ग्रामीणों का आभार व्यक्त करते हुए विद्यार्थियों से समय नियोजन करते हुए अच्छी सफलता प्राप्त करने का आह्वान किया। सम्पूर्ण कार्यक्रम का मंच संचालन विद्यालय के श्री जसराज पंचारिया (वरिष्ठ अध्यापक) संस्कृत द्वारा सफलतापूर्वक किया गया।

वार्षिकोत्सव व प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन

सिरोही : राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय देवका में 9 मार्च, 2021 वार्षिकोत्सव व प्रतिभावान सम्मान समारोह का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जीरावल सरपंच श्री कांतिलाल कोली, कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री कमल कांत शर्मा पी ई ई ओ जीरावल, विशिष्ट अतिथि अतिरिक्त मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी श्री पूनम सिंह सोलंकी, संदर्भ व्यक्ति श्री हनवंत सिंह देवड़ा, श्री मगसिंह चौहान उपसरपंच, व्याख्याता श्री भगवत सिंह सोलंकी, एस एम सी अध्यक्ष उकाराम कोली व वार्ड पंच निरमा देवी रहे। संस्थाप्रधान अनिता मालवीय ने बताया कि विद्यालय के बालक बालिकाओं ने विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम प्रस्तुत कर अपनी कला का प्रदर्शन किया। कोरोना काल में उत्कृष्ट कार्य, प्रतिभावान विद्यार्थियों व भामाशाहों का सम्मान किया गया। मंच संचालन गणपत सिंह देवड़ा द्वारा किया गया। कार्यक्रम के भामाशाह के रूप में सर्वश्री माधाराम, अमृत लाल, जबराराम, लवजीराम, वना राम, नोनाराम, ओबाराम, शंकर, कैलाश, बाबूराम,गणेश ओबाराम कोळी ने सहयोग प्रदान किया। इस अवसर पर अध्यापक किशन सिंह, संजय कुमार, रमेशी प्रजापत, प्रियंका, गणपत सिंह, रमेश प्रजापत, रमेश कुमार, शकील अली, दलपत सिंह सहित ग्रामवासी उपस्थित रहे।

वार्षिकोत्सव एवं भामाशाह सम्मान समारोह का आयोजन

राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय कंवरली के परिसर में वार्षिक उत्सव, पूर्व विद्यार्थी स्नेह मिलन एवं भामाशाह सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री बालाराम मूढ़ ने कहा कि विद्यार्थी समय चक्र को समझते हुए अपने लक्ष्य की ओर बढ़ें। पूर्ण मनोयोग से पढ़ाई कर विद्यालय का नाम रोशन करें। प्रतिस्पर्धा के युग में एकाग्र होकर अपनी मंजिल को प्राप्त करें। समारोह अध्यक्ष पाटोदी के प्रधान ममता जोगेंद्र प्रजापत ने कहा कि बालिकाएँ पढ़ करके आगे बढ़ें जिससे परिवार और क्षेत्र का नाम रोशन होगा। विद्यालय में कक्षा-कक्ष के नव निर्माण के लिए प्रस्ताव बनाकर शीघ्र भेजने की बात कही।

उप प्रधान प्रतिनिधि नखत सिंह कालेवा ने कहा कि आगे बढ़ने के लिए कई रुकावटें आती हैं लेकिन उन सबको पार करते हुए जो सफल होता है उसी को विजय माना जाता है। कार्यक्रम में विद्यालय के पूर्व विद्यार्थी एवं पुरस्कृत शिक्षक फोरम बाड़मेर के जिलाध्यक्ष सालगराम परिहार ने कक्षा आठवीं के विद्यार्थियों को श्रीफल प्रदान कर शुभकामनाएँ प्रेषित की तथा कहा कि कठोर परिश्रम के साथ उत्कृष्ट श्रेणी से परीक्षा में सफलता प्राप्त करें। कार्यक्रम में श्री दलपत सिंह पुत्र श्री जालम सिंह ने विद्यालय के मुख्य द्वार के नव निर्माण की घोषणा की। कार्यक्रम के भामाशाह सर्वश्री चौथा राम परिहार, बुधाराम परिहार, मग सिंह का अतिथियों ने साफा पहनाकर अभिनंदन किया। बालक बालिकाओं द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। इस अवसर पर सर्वश्री भंवर सिंह राठौड़ , बाबूलाल चांदोरा, पदम सिंह कंवरली, वार्ड पंच अभय सिंह, जसवंत सिंह, तखत सिह, जेताराम, सहित विद्यार्थी एवं गणमान्य लोग उपस्थित रहे। कार्यक्रम के अंत में संस्थाप्रधान बीजा राम ने सभी अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

मोकलसर में गणित प्रयोगशाला का उद्घाटन

मेराम चंद हूंडिया रा. बा. उ. मा. वि. मोकलसर में बुधवार को गणित प्रयोगशाला का उद्घाटन मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी श्री हनुमाना राम चौधरी के कर कमलों से किया गया। मोकलसर पीओ श्री रणछोड़ा राम बारड एवं बालिका विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री सुरेश कुमार सोलंकी ने अतिथि महोदय का साफा एवं माल्यार्पण कर स्वागत किया गया। बालिका विद्यालय में कार्यरत गणित के शिक्षक कुमार जितेन्द्र के निर्देशन में कक्षा 6 से 10 वीं तक सभी बालिकाओं के सहयोग से गणित प्रयोगशाला का निर्माण किया गया। इस प्रयोगशाला में शून्य नवाचारों का अधिक प्रयोग किया गया। बालिकाओं ने विद्यालय एवं अपने घर में अनुपयोगी वस्तुओं से विभिन्न गणितीय आकृतियों का निर्माण करके एक अनोखी प्रतिभा दिखाई और चार्ट पर विभिन्न गणितीय सूत्रों, परिभाषाओं और गणितज्ञ की आकृतियों को सजाया। मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी ने गणितीय प्रयोगशाला में शून्य नवाचारों के प्रयोग के लिए बालिकाओं और गणित के अध्यापक श्री कुमार जितेन्द्र की हौसला अफजाई की। विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री सुरेश कुमार सोलंकी ने अतिथियों का आभार व्यक्त किया। इस अवसर व्याख्याता सर्वश्री भरत कुमार सोनी, ओम प्रकाश पटेल, जगदीश विश्नोई, वरिष्ठ अध्यापक कुमार जितेन्द्र, हीरा राम गर्ग अध्यापिकाएँ श्रीमती सुधा रैया, श्रीमती सजना कुमारी, श्रीमती रेखा जाट, श्रीमती सुमित्रा बाई मीणा, लिपिक श्री जेठु सिंह, श्री मुकेश रॉयल, श्री शंकर राम कटारिया सहित विद्यालय की चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी सागर बाई, तुलसी बाई और बालिकाएँ उपस्थित रही।

पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन हुआ

झालावाड़- राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बेडला, ब्लॉक -डग

जिला झालावाड़ मे 21 मार्च को पुरुस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया, कार्यक्रम मे मुख्य अतिथि सरपंच प्रतिनिधि श्री धीरज सिंह व अध्यक्षता प्रिंसिपल श्री सत्यनारायण सुमन जी ने की, शिक्षा के क्षेत्र में एवं स्कूल में वृक्षारोपण के लिए श्री कुंजबिहारी निगम व मुशर्रफ अली को सम्मानित किया गया।

वार्षिकोत्सव व पुरस्कार वितरण समारोह

दौसा– चांदराना कस्बे में स्थित राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, चांदराना का वार्षिकोत्सव एवं पुरस्कार वितरण समारोह, भामाशाह सम्मेलन विद्यालय के पूर्व विद्यार्थी सम्मेलन–2021 का आयोजन दिनांक 01.03.2021 को विद्यालय परिसर में किया गया। इस समारोह में मुख्य अतिथि श्रीमती शकुन्तला देवी सरपंच महोदया, ग्राम पंचायत चांदराना, विशिष्ट अतिथि श्री नाथूलाल शर्मा उपसरपंच, श्रीमान अतिरिक्त मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी श्री रामनारायण मीना, सदंर्भ व्यक्ति श्री लोकेश गुर्जर, श्री जगदीश नारायण गुर्जर (प्रधान) श्री सुशील कुमार जैन, श्री बनवारी लाल पटेल, श्री जगदीश नारायण गौत्तम, श्री रामनारायण मीना रिटायर्ड अध्यापक बगरवाला, श्री जगन्नाथ सैनी, श्री चन्द्र प्रकाश शर्मा प्रधानाध्यापक बिहारीपुरा रहे। समारोह का शुभारम्भ अतिथियों द्वारा माँ शारदे की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलन कर किया गया। तत्पश्चात अतिथिगणों का शाला परिवार द्वारा माल्यार्पण, साफा पहनाकर व स्मृति चिह्न प्रदान कर स्वागत व अभिनन्दन किया गया। विद्यार्थियों द्वारा राष्ट्रगीत, दीप मंत्र, सरस्वती वंदना, स्वागत गीत प्रस्तुत किए गए। बालिकाओं ने आयो रे शुभ दिन, प्रेरणा गीत–दिल है छोटा सा, छोटी सी आशा आरती कंवर शेखावत ने तलवारों पर सर वार दियो देशभक्ति गीत का गायन प्रस्तुत किए। सांस्कृतिक प्रस्तुतियों में राजस्थानी नृत्य, हरियाणवी गीत, राजस्थानी संस्कृति लोकगीत द्वारा प्रस्तुतियाँ देकर कार्यक्रम को चरम पर पहुँचाया जिसके माध्यम से भारतीय संविधान एवं भारतीय संस्कृति की जानकारी दी गई।

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, चांदराना में 10वीं व 12वीं कक्षा बोर्ड परीक्षाओं में 75% से अधिक अंक प्राप्त 7 छात्र व 11 छात्राओं को अतिथियों द्वारा प्रशस्ति प्रमाण–पत्र व स्मृति चिह्न प्रदान किया गया। कार्यक्रम में प्रधानाचार्य श्री कैलाश चन्द्र मीना ने विद्यालय का संक्षिप्त प्रतिवेदन व शाला प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की व श्रीमान ACBEEO श्री रामनारायण मीना व श्री लोकेश कुमार गुर्जर (R.P.) द्वारा अपने उद्‌बोधन में शिक्षा विभाग द्वारा प्रोत्साहन हेतु छात्रवृत्ति व अन्य संचालित योजनाओं की जानकारी देकर सम्बल प्रदान किया गया। स्कूल के विकास में योगदान देने पर श्री सुशील कुमार जैन, श्री ज्ञानचन्द जैन, श्री विनोद जैन, श्री जगदीश नारायण प्रधान, श्री बनवारी लाल पटेल, श्री रामनारायण मीना, श्री अमरसिंह शेखावत, श्री सोनू सैनी, श्री जगदीश नारायण गौत्तम का सम्मान किया गया।

समारोह में स्कूल के विकास के लिए श्री रामनारायण मीना, श्री जगन्नाथ सैनी, श्री बनवारी पटेल, श्री निरंजन लाल, श्री चन्द्र प्रकाश शर्मा (प्र.अ.), श्री जगदीश गौत्तम, श्री दिनेश लक्षकार, नाथूलाल शर्मा, श्री सुशील जैन, श्री जगदीश गुर्जर (प्रधान), श्री दिनेश कुमार मीना, श्री रामशरण स्वामी सहित अन्य लोगों ने नकद राशि देकर सहयोग प्रदान किया। कार्यक्रम के समापन अवसर पर अपने उद्‌बोधन में प्रधानाचार्य श्री कैलाश चन्द मीना ने सभी अतिथियों, SDMC सदस्यों, अभिभावकों का आभार जताते हुए धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगीत के साथ किया गया। कार्यक्रम में मंच संचालन श्री संतोष कुमार मीना द्वारा किया गया। सहमंच संचालक श्री मोहनलाल शर्मा व्याख्याता रहे।

वरेठा में स्टेशनरी बैंक का शुभारंभ

रानीवाड़ा– निकटवर्ती वरेठा के राजकीय माध्यमिक विद्यालय में भामाशाह सर्वश्री अरविन्द सिंह, लीलाराम चौधरी, सरपंच प्रतिनिधि कालूराम के सहयोग से स्टेशनरी बैंक का उद्‌घाटन किया। इस बैंक की स्थापना के लिए प्रधानाध्यापक श्री बुद्धाराम ने स्वयं भामाशाह बनकर 200 कॉपियाँ भेंट कर अन्य भामाशाहों से जुड़ने के लिए आग्रह किया और उन्हें स्टेशनरी बैंक के महत्त्व को समझाया, जिसमें स्थानीय भामाशाह सहयोग के लिए आगे आए। ज्ञात रहे, विद्यालय में नवनियुक्त प्रधानाध्यापक अपने अल्प कार्यकाल में विद्यालय में कई आधारभूत सुविधाओं को जुटाने में सफल रहे हैं, जिसके तहत विद्यालय में 16 सीसीटीवी कैमरे, फर्नीचरयुक्त शानदार विद्यालय ऑफिस, प्रधानाध्यापक मेज, इलेक्ट्रॉनिक बेल, बच्चों के लिए सांस्कृतिक पोशाक सहित तमाम आधारभूत सुविधा जुटाई है। प्रधानाध्यापक बुद्धाराम ने बताया कि उक्त स्टेशनरी बैंक असहाय और गरीब बच्चों की सहायता के लिए यह खोली गई है, जो बच्चे किसी कारणवश कॉपी, पैन, रबर, बैग नहीं ला सकते उनको तुरंत सहयोग देकर एक पल भी उनका खराब नहीं होगा। इसमें जुटाई गई सामग्री का पूरा रिकॉर्ड रखते हुए आने वाले कई वर्ष तक बच्चों के लिए व्यवस्था चालू रखी जाएगी। इसके माध्यम से धीरे–धीरे बच्चों के लिए जूते, मोजे, चार्ट आदि की व्यवस्था करने के लिए प्रयास किया जाएगा। प्रधानाध्यापक श्री बुद्धाराम ने बताया कि स्टेशनरी बैंक में योगदान करने वाले भामाशाहों को वार्षिकोत्सव में सम्मानित भी किया जाएगा।

विद्यालय में वार्षिकोत्सव, भामाशाह सम्मान व पूर्व छात्र स्नेह मिलन समारोह मनाया गया।

बूँदी– रा.मा.वि. धानुगाँव (नैनवां) बूंदी में दिनांक 09.03.2021 को वार्षिकोत्सव–2021, भामाशाह सम्मान व पूर्व छात्र स्नेह मिलन समारोह हर्षोल्लास के साथ आयोजित किया गया। जिसमें अतिथि के रूप में श्री रामस्वरूप मीणा (पूर्व प्रधान, नैनवां) द्वारा Water R.O. सप्रेम भेंट किया गया, श्रीमान राजेन्द्र सिंह, CBEO नैनवा, श्री दुर्गालाल कारपेन्टर, ACBEO नैनवाँ, श्री शिवराज कहार, ACBEO नैनवाँ उपस्थित रहे। इसमें पूर्व छात्र व भामाशाहों ने निम्न प्रकार योगदान किया। डॉ. राजीव मीणा चिकित्साधिकारी (नगरफोर्ट), टोंक ने 21,000 रुपये, श्री बाबू लाल मीणा (अध्यापक) धानुगाँव, नैनवाँ ने 11,101 रुपये, श्री छोटू खाँ (SMC अध्यक्ष) ने 6,100 रुपये, श्री विनोद शर्मा (SMC सदस्य) ने 6,100 रुपये, श्रीमती अंजना शर्मा धानुगाँव (जयपुर) ने 5,100 रुपये, श्री हरिनारायण जी डीलर धानुगाँव ने 5,100 रुपये, श्री शंकर लाल मीणा, धानुगाँव ने 2,100 रुपये, श्री राकेश कुमार नागर, पाण्डुला ने 2,100 रुपये, भीमराव अम्बेडकर समिति, बैरवों का झोपड़ा, धानुगाँव ने 2,100 रुपये भेंट किए। संस्थाप्रधान श्री लक्ष्मी नारायण बैरवा ने सभी पूर्व छात्रों/भामाशाहों का आभार व्यक्त किया।

कबाड़ से जुगाड़ TLM नवाचार कार्यशाला सम्पन्न

जालोर– कोरोना काल एवं खाली समय का सदुपयोग कर स्थानीय राउमावि कागमाला, जिला जालोर के संस्थाप्रधान श्री नारायण लाल जीनगर व कर्मठ स्टाफगण श्री उदमसिंह चाहर (वरिष्ठ अध्यापक), श्रीमती अमिता कुमारी (वरिष्ठ अध्यापक), श्री दीपू सिंह (वरिष्ठ अध्यापक), श्री जेमताराम चौधरी (वरिष्ठ अध्यापक), श्री छगनाराम सुथार (वरिष्ठ अध्यापक), श्री चौथाराम (अध्यापक) व श्री मदनलाल विश्नोई (अध्यापक) के द्वारा कबाड़ से जुगाड़ व अपनी कला का प्रदर्शन कर बिना मजदूर व कारीगर के विद्यालय परिसर में TLM आधारित नवाचारों का निर्माण किया गया जिसमें स्काउट गार्डन, स्टार गार्डन, स्पोर्ट्स गार्डन, गणित गार्डन, एबीसीडी गार्डन, सौर मण्डल मॉडल, मानव श्वसन तंत्र मॉडल, हृदय की संरचना मॉडल, अमर जवान ज्योति मॉडल, भारत मानचित्र मॉडल, पृथ्वी मॉडल का निर्माण किया गया। उक्त कार्य में सीमेंट मसाला, खुदाई, चुनाई, प्लास्टर, रंगरोगन व नाम लेखन का कार्य स्टाफ द्वारा किया गया। सत्र 2020–21 में हरित पाठशाला, नवाचारों व भामाशाहों के सहयोग के लिए संस्थाप्रधान श्री नारायण लाल जीनगर को श्रीमान संभागीय आयुक्त जोधपुर व श्रीमान जिला कलेक्टर जालोर द्वारा सम्मानित किया गया।

भामाशाहों द्वारा सहयोग किया गया

अजमेर– रा.बा.उ.मा. विद्यालय डिग्गी मौहल्ला ब्यावर अजमेर में शिक्षक बद्रीप्रसाद शर्मा के प्रयास व प्रेरणा भारत विकास परिषद् द्वारा 300 मास्क, 5 लीटर, सैनेटाइजर व सेनेटाइजर स्टेंड छात्राओं के सुविधा हेतु प्रदान किए गए। संस्थाप्रधान श्रीमती हेमलता चौहान ने परिषद के सभी सदस्यों व भामाशाहों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

भामाशाह द्वारा निर्मित विज्ञान हॉल का लोकार्पण।

दौसा– डॉ. सत्यनारायण खण्डेलवाल (पूर्व छात्र व भामाशाह) ने अपने माता–पिता स्व. श्री रामनिवास मामोडिया व श्रीमती नारायणी देवी मामोडिया की स्मृति में उ.मा.वि. सैंथल (दौसा) में एक विज्ञान हॉल का निर्माण करवाया जिसकी लागत लगभग 11 लाख रुपये विद्यालय को दिनांक 26.02.2020 का अभूतपूर्व समारोह में लोकार्पण किया गया। आप प्रतिवर्ष 15 अगस्त/26 जनवरी को विद्यालय में प्रतिभावान छात्र व अध्यापकों को सम्मानित करते है एवं मनोबल बढ़ाते है। विद्यालय परिवार आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है व आशा करता है कि आपका मार्गदर्शन हमेशा प्राप्त होता रहेगा। इस समारोह में शिक्षक समाज के सम्मानित निधियाँ, शिक्षाकर्मी बोर्ड के पूर्व चैयरमेन डॉ. सत्यनारायण मेठी, पूर्व उप निदेशक कॉलेज शिक्षा डॉ. ओ.पी. गुप्ता, पूर्व अति. जि.शि.अ. श्री बनवारी लाल बड़ाया, पूर्व आर.पी.एस.सी. सदस्य श्री विनोद बिहारी शर्मा, पूर्व प्रधान श्री रामप्रताप मीना व डी.सी. बैरवा प्रधान दौसा इत्यादि उपस्थित रहे। प्रेरणास्रोत श्री अनिल कुमार गुप्ता व अध्यापक व पूर्व प्रधानाचार्या श्रीमती कमला शर्मा रहे। डॉ. सत्यनारायण खण्डेलवाल वर्तमान में खण्डेलवाल हॉस्पिटल दौसा के निदेशक है, आपकी धर्मपत्नी श्रीमती माया खण्डेलवाल दौसा जिला उपभोक्ता मंच की माननीय सदस्य है।

पूर्व छात्रों ने मुख्य द्वार का निर्माण करवाया

अजमेर– अजमेर के प्रधानाचार्य रामगोपाल शर्मा ने अपने ही पढ़ाए गए पूर्व शिष्यों को प्रेरित किया। प्रेरणास्वरूप सत्र 1996–97 के कृषि संकाय कक्षा–12 के कुल 25 छात्र–छात्राओं द्वारा शाला का मुख्य द्वार 4,07,000 रुपये की लागत से बनवाया गया और दिनांक 18.02.2021 को शाला को समर्पित किया जो आकर्षक एवं श्रेष्ठ गुणवत्ता युक्त है। इस अवसर पर प्रधानाचार्य ने पूर्व छात्रों की भूरि–भूरि प्रशंसा की तथा श्रीमान निदेशक महोदय के प्रति आभार प्रकट किया। जिनके मार्गदर्शन से छोटे से गाँव में भामाशाह बने। ये पल सचमुच सभी को गौरवान्वित करने वाले है।

संकलन : **प्रकाशन सहायक**

समाचार पत्रों में कतिपय रोचक समाचार/दृष्टांत समय-समय पर छपते रहते हैं। इन्हें पढ़कर हमें विस्मय तो होता ही है, साथ ही हमारा ज्ञानवर्धन भी होता है। ऐसे समाचार/दृष्टांत चतुर्दिक स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित किये जाते हैं। आप भी ऐसे समाचारों का पुनर्लेखन कर संदर्भ एवं पेपर कटिंग के साथ शिविरा में प्रकाशन हेतु हमें भिजवा सकते हैं।

-वरिष्ठ सम्पादक

चतुर्दिक समाचार

जमीन में दफन 2000 साल पुरान अनुष्ठानिक रथ मिला

रोम– इटली के पोम्पेई शहर में पुरातत्व विशेषज्ञों ने दो हजार साल पुराना अनुष्ठानिक (सेरेमोनियल) रथ खोजा है। इसमें चार पहिए लगे हैं। नेपल्स की खाड़ी में की गई यह खोज काफी अहम मानी जा रही है। रथ पूरी तरह संरक्षित है। इसके साथ लोहे के उपकरण भी मिले हैं। रथ पर काँसे की सजावट है। इसे प्राचीन पोम्पेई के उत्तर में सिविता गिउलियाना के प्राचीन विला के अस्तबल के पास खोजा गया है। इटली के संस्कृति मंत्रालय का कहना है कि यह खोज अद्वितीय अध्याय का प्रतिनिधित्व करती है। इटली के इतिहास में ऐसी खोज पहले नहीं हुई।

वैक्सीन बन रही अब शक्ति प्रदर्शन का जरिया

भारत–कभी हथियारों की होड़ ने विश्व को विभाजित किया। बड़ी ताकतों ने शक्ति का प्रदर्शन किया, आज वहीं काम वैक्सीन के लिए हो रहा है। वैक्सीन निर्माता देशों में कूटनीतिक श्रेय लेने की प्रतिस्पर्धा तेज हो गई है। एक ओर अमरीका टीकों को देश की जनता के लिए सुरक्षित करने में लगा है तो यूरोप वैक्सीन की कमी से जूझ रहा है। उधर चीन और रूस उन देशों को वैक्सीन आपूर्ति में प्राथमिकता दे रहा है, जिनसे उनके व्यापारिक रिश्ते हैं या जिन देशों पर उनकी नजर है। चीन के टीके भले ही विश्वसनीयता की कसौटी पर कमतर आंके गए, लेकिन वह अल्जीरिया, सेनेगल, सिएरा लियोन और पाकिस्तान को वैक्सीन भेज चुका है। उधर रूस के लिए विश्व को यह दिखाने के लिए मौका था कि वह अमरीका व पश्चिमी यूरोपीय देशों की तुलना में कुशलता से टीके विकसित करने में सक्षम है।

ई-गीता, पीएम की तस्वीर और 19 उपग्रहों के साथ इसरो ने भरी 2021 की पहली उड़ान

बेंगलूरु– भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने ब्राजीली उपग्रह अमेजोनिया-1 समेत निजी क्षेत्र के 19 उपग्रह पृथ्वी की कक्षा में सफलतापूर्वक स्थापित कर 2021 की शानदार शुरूआत की। यह अंतरिक्ष विभाग के अंतर्गत नवगठित न्यू-स्पेस इंडिया लिमिटेड (एन-सिल) का पहला मिशन भी है। मिशन के साथ लाँच किया गया स्टार्टअप कंपनी स्पेसकिड्स का उपग्रह सतीश धवन सैट (एसडीसैट) अपने साथ भागवत गीता की इलैक्ट्रॉनिक कॉपी और पीएम मोदी की तस्वीर के साथ इसरो अध्यक्ष के. सिवन, इसरो के वैज्ञानिक सचिव उमा महेश्वरन आर. सहित 25 हजार लोगों के नाम भी ले गया है। तीन शैक्षिक संस्थाओं के तीन उपग्रहों (यूनिटीसैट) और अमरीका के 12 स्पेसबीज उपग्रह धरती की कक्षा में स्थापित किए गए। ऐसा पहली बार हुआ, जब इसरो ने किसी निजी कंपनी के उपग्रह का प्रक्षेपण किया।

गन्ने के रस से कफ बनता, सर्दी-जुकाम में न पिएँ

भारत–गन्ने के रस के कई फायदे हैं लेकिन कुछ स्थितियों में इसे पीने से बचें। अधिक मात्रा में गन्ने का जूस पीने से शरीर में कफ की समस्या बढ़ सकती है। इसलिए सर्दी जुकाम में न पिएँ। बच्चों के पेट में कीड़े होने की समस्या हो या फिर पेट दर्द हो रहा हो तो भी गन्ने का रस उन्हें पीने के लिए न दें। पेट से संबंधित कोई समस्या होने या सर्जरी होने के बाद तुरंत भी इसे पीने से बचना चाहिए। इसमें पोलिकोसनॉल नामक तत्व पाया जाता है तो खून को पतला करता है। इससे खून का थक्का बनने में देरी हो सकती है। जिन्हें ब्लड क्लॉट बनने से संबंधित समस्या है, उन्हें भी पीने से बचना चाहिए। यदि खून पतला करने की कोई दवाई ले रहे हैं तो गन्ने का जूस न पिएं।

धरती के हर सेंटीमीटर के परिवर्तन को परखेगा 'निसार'

बेंगलूरु– इसरो व अमरीकी स्पेस एजेंसी नासा साल 2023 में एक ऐसा सैटेलाइट लॉन्च करने जा रही हैं जो पूरी दुनिया को प्राकृतिक आपदाओं से बचाएगा। यह आपदा आने से काफी पहले सूचना दे देगा। यह दुनिया का सबसे महंगा अर्थ ऑब्जरवेशन सैटेलाइट होगा। लागत करीब 7 हजार करोड़ रुपए है। जो सैटेलाइट इसरो और नासा तैयार कर रहा है, उसे नासा इसरो सिंथेटिक एपर्चर रडार (एनआइएसएआर) यानी 'निसार' नाम दिया गया है। यह दो रडार एस-बैंड और एल बैंड सिंथेटिक एपर्चर रडार पर काम करेगा। निसार की मदद से धरती की एक सेंटीमीटर से भी कम की सतह में होने वाले परिवर्तनों को भी परखा जा सकेगा। नासा के मुताबिक इस सैटेलाइट की मदद से दुनियाभर में प्राकृतिक संसाधनों को व्यवस्थित किया जा सकेगा। भूकम्प, सुनामी, ज्वालामुखी और भूस्खलन के बारे में भी जानकारी मिल सकेगी। साथ ही साथ पर्यावरण में परिवर्तन के प्रभावों पर और बेहतर व विस्तृत समझ हासिल हो सकेगी। यह पृथ्वी की बाहरी कठोर सतह (क्रस्ट) के बारे में भी समझ बढ़ाएगा।

अधिकांश देशों की कोल्ड चेन में फिट है भारत की कोवैक्सीन

नई दिल्ली– भारत बायोटेक की ओर से बनाई कोवैक्सीन के दूसरे चरण के ट्रायल में दुष्परिणाम देखने को नहीं मिले हैं और यह पूरी तरह सुरक्षित है। यह जानकारी 'द लैसेट' में छपे अध्ययन में सामने आई है। रिपोर्ट में कहा गया है कि कोवैक्सीन कितनी प्रभावी होगी, इसे लेकर दूसरे ट्रायल में सुनिश्चित नहीं किया जा सकता। पहले चरण की तुलना में दूसरे चरण के ट्रायल में बेहतर सुरक्षित परिणाम दिखाई दिए। पहले चरण के ट्रायल में सेकंड वैक्सीनेशन के 3 महीने बाद सभी प्रतिभागियों में एंटीबॉडी रिस्पॉन्स बढ़ा मिला। रिपोर्ट में कहा गया है कि इसमें इम्युनोजेनिक है और इसे 2 से 8 डिग्री सेल्सियस पर रखा जा सकता है, जो कि अधिकांश देशों के टीकाकरण कोल्ड चेन आवश्यकताओं के साथ फिट बैठती है। उधर, न्यू इंग्लैण्ड जर्नल ऑफ मेडिसिन में छपी स्टडी के मुताबिक फाइजर और बायोटेक की कोरोना वैक्सीन ब्राजील में फैल रहे वेरियंट के खिलाफ असरदार पाई गई है। स्टडी में पाया गया है कि वैक्सीन ने संक्रामक पी1 वेरियंट के स्पाइक प्रोटीन वाले वायरस के खिलाफ असर दिखाया है।

अंतरिक्ष तक प्रयास, फ्राँस ने किया पहला सैन्य अभ्यास

पेरिस– फ्रांस ने अंतरिक्ष में दुनिया का पहला सैन्य अभ्यास करके सबको हैरान कर दिया है। यह सैन्य अभ्यास 8 मार्च से शुरू होकर 12 मार्च को पूरा हुआ। इसके बाद दुनियाभर में इसकी चर्चा हो रही है। फ्रांस की नवनिर्मित स्पेस कमांड के प्रमुख मिशेल फ्राइडलिंग ने पृथ्वी की कक्षा में अपने उपग्रहों व अन्य रक्षा उपकरणों पर हमला रोकने की क्षमता का परीक्षण करने के लिए ये सैन्य अभ्यास किया। इस अभ्यास को 'एस्टरएक्स-2021' नाम दिया गया, जो फ्रांस के पहले सैटेलाइट के नाम पर है। अभ्यास में जर्मनी व अमरीका की सुरक्षा एजेंसियों ने भी हिस्सा लिया। दरअसल, फ्रांस अंतरिक्ष में अभ्यास कर दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी स्पेस पावर बनाना चाहता है।

संकलन : **प्रकाशन सहायक**

बूँदी

रा.मा.वि. धानुगाँव (नैनवां) को श्री रामस्वरूप मीणा (पूर्व प्रधान) से Water R.O. प्राप्त हुआ, श्री (डॉ.) राजीव मीणा (चिकित्साधिकारी) (नगर फोर्ट) टोंक से नकद 21,000 रुपये प्राप्त, श्री बाबू लाल मीणा (अध्यापक) से 11,101 रुपये प्राप्त, सर्वश्री छोटू खाँ (SMC अध्यक्ष) व विनोद शर्मा (SMC सदस्य) प्रत्येक से 6,100-6,100 रुपये प्राप्त, श्रीमती अंजना शर्मा व श्री हरिनारायण (डीलर) प्रत्येक से 5,100 रुपये प्राप्त, सर्वश्री शंकर लाल मीणा, राकेश कुमार नागर, भीमराव अम्बेडकर समिति प्रत्येक से 2,100 रुपये प्राप्त हुए।

जयपुर

रा.उ.मा.वि. जमवारामगढ़ को श्रीमती सुमन श्रीमाली (से.नि.) द्वारा विद्यालय में कार्यालय हेतु फर्नीचर के लिए सहयोग राशि 21,000 रुपये भेंट, श्री हरिनारायण मीना (से.नि.) से विद्यालय को दो कूलर हेतु सहयोग राशि 12,000 रुपये भेंट, श्री भगवान सहाय मीना द्वारा विद्यालय में कार्यालय हेतु 01 कम्प्यूटर सेट भेंट जिसकी लागत 40,000 रुपये व विद्यालय को माईक साउण्ड सिस्टम भेंट जिसकी लागत 12,000 रुपये, श्रीमती सीमा वशिष्ठ (वरिष्ठ अध्यापक) से 05 पंखे प्राप्त, श्रीमती आशीष शर्मा (अ.) व श्री अभिषेक गुर्जर (कनिष्ठ सहायक) से 02-02 पंखे प्राप्त, श्री बलराम गुर्जर से एक पंखा प्राप्त, श्री प्रभात सैनी से एक विद्युत घण्टी प्राप्त जिसकी लागत 17,000 रुपये।

सवाई माधोपुर

रा.उ.प्रा.वि. फूसोदा को श्री रामप्रसाद शर्मा (अति. मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी) ने अपने पिता स्व. श्री बाल मुकुन्द शर्मा की स्मृति में विद्यालय के छात्रों को पानी पीने के लिए वाटर कूलर सप्रेम भेंट जिसकी लागत 23,000 रुपये।

बाड़मेर

रा.उ.प्रा.वि. बनाणियों की ढाणी, होडू, सिणधरी को श्रीमती इमरती देवी से एक सोफा सेट प्राप्त जिसकी लागत 7,500 रुपये, श्री आइदान राम से चार कुर्सियाँ प्राप्त जिसकी लागत 4,800 रुपये, श्री चूनाराम सियोल से चार कुर्सियाँ प्राप्त जिसकी लागत 4,800 रुपये, श्री भीयाराम गोदारा से साफे एवं मालाएँ प्राप्त जिसकी लागत 5,100 रुपये, श्री गिरधारी लाल गोदारा द्वारा विद्यार्थियों को स्मृति चिह्न भेंट जिसकी लागत 4,000 रुपये, श्री नैना राम से एक कुर्सी प्राप्त जिसकी लागत 1,200 रुपये, श्री खरताराम से एक कुर्सी व पुरस्कार प्राप्त जिसकी लागत 1,200 रुपये, श्री अर्जुनराम से दो कुर्सी व पुरस्कार लागत 7,500 रुपये, श्री पन्नाराम से चार कुर्सियाँ प्राप्त जिसकी लागत 4,800 रुपये, श्री मेवाराम से एक कम्प्यूटर प्राप्त जिसकी लागत 22,000 रुपये, श्री शंकराराम द्वारा विद्यार्थियों को पुरस्कार राशि 2,200 रुपये भेंट, श्री भल्लाराम से तीन पंखा प्राप्त जिसकी लागत 5,100 रुपये, श्री खेमाराम लुखा से एक अलमारी प्राप्त जिसकी लागत 11,000 रुपये, श्री गागोणी डूडी परिवार से पी.टी. परेड ड्रम प्राप्त जिसकी लागत 2,100 रुपये, श्री लालचन्द गुर्जर से शौचालय निर्माण हेतु नकद राशि 20,000 रुपये प्राप्त, स्थानीय जनसहयोग से रिवालविंग चेयर प्राप्त जिसकी लागत 23,000 रुपये, विद्यालय स्टाफ से एक प्रिन्टर (इंक्जेट) प्राप्त जिसकी लागत 7,500 रुपये।

चित्तौड़गढ़

रा.उ.मा.वि. बस्सी में जनसहयोग से 64X30 फीट के आकार का टीन शैड का निर्माण हुआ जिसकी लागत 1,72,600 रुपये तथा इसी विद्यालय पर रंग-रोगन कराया गया जिसकी लागत 95,000 रुपये।

हमारे भामाशाह

भामाशाहों के अवदान का वर्णन प्रतिमाह इस कॉलम में कर पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है। आइये, आप भी इसमें सहभागी बनें। **-व. संपादक**

भीलवाड़ा

रा.उ.मा.वि. रीछड़ा पं.स. सुवाणा को कल्याणम संस्थान भीलवाड़ा द्वारा 12 छात्र/ छात्राओं को 12 टेबलेट वितरित किए जिसकी लागत 1,20,000 रुपये, श्री भंवर सिंह राणावत से पुरस्कार सामग्री प्राप्त जिसकी लागत 11,000 रुपये, डॉ. राजेश सुवालका द्वारा नल फिटिंग कराई गई जिसकी लागत 26,000 रुपये, सर्वश्री भैरूलाल सुवालका, संजू गुजर, दिनेश तिवाड़ी प्रत्येक से 05-05 टेबल-स्टूल प्राप्त जिसकी प्रत्येक की लागत 5,000-5,000 रुपये, श्रीमती बीना व्यास से 04 ऑफिस चेयर प्राप्त जिसकी लागत 8,000 रुपये, श्रीमती सुशीला पंवार से 02 ऑफिस चेयर प्राप्त जिसकी लागत 2,000 रुपये, श्री हंसराज चौधरी (नवग्रह आश्रम रायला) से 50 ट्री गार्ड प्राप्त जिसकी लागत 25,000 रुपये, श्री बंशी लाल कोली द्वारा सरस्वती मंदिर का निर्माण करवाया जिसकी लागत 20,000 रुपये।

जालोर

रा.उ.मा.वि., बिशनगढ़ पं.स. सायला को श्री रणछोड़राम चौधरी द्वारा 50 सैट टेबल-स्टूल विद्यालय को सप्रेम भेंट जिसकी लागत 69,000 रुपये, श्री सुरेश कुमार चौधरी द्वारा 50 सैट टेबल-स्टूल विद्यालय को सप्रेम भेंट जिसकी लागत 69,000 रुपये।

उदयपुर

रा.उ.मा.वि. नामरी तह. मावली को चौकसी हेरियर्स संस्थान उदयपुर द्वारा छात्रों के बैठने हेतु 80 सैट टेबल-स्टूल विद्यालय को सप्रेम भेंट जिसकी लागत 1,00,000 रुपये।

चूरू

शहीद सूबेदार ओमप्रकाश रा.उ.मा.वि. रामपुरा बेरी ब्लॉक राजगढ़ को ग्राम विकास समिति गाँव रामपुरा बेरी तह. राजगढ़ जिला चूरू ज्ञान संकल्प पोर्टल के माध्यम से 3,71,200 की धनराशि विद्यालय को सप्रेम भेंट।

राजसमंद

रा.उ.मा.वि. केलवा में श्री तनसुख, श्रीमती सुशीला एवं नरेन्द्र विनीता बोहरा द्वारा 1,91,00,000 की लागत से भवन का निर्माण करवाया गया।

सिरोही

रा.मा.वि. भाटकड़ा को सर्वश्री मोहनलाल, देवेन्द्र कुमार माली हाल (आंध्र प्रदेश), महेन्द्र कुमार माली (जोधपुर) द्वारा विद्यालय विकास हेतु 11,000-11,000 रुपये सप्रेम भेंट, सर्वश्री बाबूलाल जैन (अध्यक्ष) श्रीमती कसु बाई चेरिटेबल ट्रस्ट हाल सिंगापुर लालाराम माली (हाल चैन्नई) से 10,000-10,000 रुपये विद्यालय विकास हेतु प्राप्त हुए, श्री देवाराम माली से विद्यालय विकास हेतु 5,101 रुपये प्राप्त, श्रीमती बृजलता अरोड़ा से विद्यालय विकास हेतु 5,100 रुपये प्राप्त, श्री लालाराम माली से 5,000 रुपये प्राप्त, सर्वश्री कन्हैयालाल माली (अमरदीप एजेन्सीज), पंकज कुमार (बालाजी हाई पावर बैटरी), खेताराम माली (हाल चैन्नई), जोगाराम माली, किशन लाल माली (लक्ष्मी वीडियो सिरोही) से विद्यालय विकास हेतु प्रत्येक से 5,000-5,000 रुपये नकद प्राप्त, श्री रघुनाथ माली (अध्यक्ष) श्रीमती पूनमाजी माली चेरिटेबल ट्रस्ट सिरोही से 7,000 रुपये विद्यालय विकास हेतु प्राप्त।

सीकर

रा.उ.मा.वि. थोई, खंडेला को माहेश्वरी टी कम्पनी प्रा.लि. जयपुर के निदेशक भामाशाह श्री गजानन्द, गौरीशंकर, महेश व नवीन परवाल जी ने 31,20,000 रुपये का चेक मुख्यमंत्री जन सहभागिता हेतु भेंट।

संकलन : **प्रकाशन सहायक**

शिविरा पत्रिका (मासिक) : अप्रैल, 2021 / निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर द्वारा प्रकाशित एवं प्रसारित तथा हरिहर प्रिण्टर्स, जे-97, अशोक चौक, आदर्श नगर, जयपुर-302 004 फोन : 0141-2600850 से मुद्रित। वरिष्ठ सम्पादकः अनिल कुमार अग्रवाल, प्रकाशन हेतु सामग्री चयन के लिए उत्तरदायी।

बाल शिविरा

नाम-खुमाराम,
कक्षा-7

एवं

चन्दूराम,
कक्षा-5

श्रीमती राधा
रा.उ.प्रा.वि.
बींजवाड़िया,
तिंवरी, जोधपुर

राउमावि. सूडसर, बीकानेर में विद्यार्थियों कक्षा12 के अशोक कटारिया, मनीष कुमार मेघवाल, कक्षा-11 के रामचन्द्र भाजू कक्षा 10 के दीपेन्द्र सिंह, गायत्री नायक, खुशबू कुमारी व लीला दर्जी ने अनुपयोगी सामग्री से शाला प्रांगण में एक सृजनात्मक कृति (कुएँ का मॉडल) का निर्माण प्रधानाचार्य एवं स्टाफ के मार्गदर्शन में किया।

राजकीय महात्मा गाँधी अंग्रेजी माध्यम विद्यालय छाजा का नांगलोई, सीकर में 27 फरवरी 2021 को आयोजित विज्ञान मेले में प्रसून शर्मा कक्षा-7, बैटरी से चलने वाली पनडुब्बी का प्रदर्शन करते हुए।

चित्रवीथिका : अप्रैल, 2021

Sh. Girdhari Sharma member State Council, Rajasthan State Bharat Scouts & Guides presenting a book "Sewa Ki Adhyatm Sheelayen" during state executive council meeting held at State Head Quarters, Jaipur on 21.03.2021 Book presenting to Sh.Sourabh Swami Director of Secondary Education Rajasthan, Bikaner.

श्रीमान सौरभ स्वामी निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ने वैक्सीन लगवाकर शिक्षा जगत को एक आदर्श निदेशक होने की मिशाल प्रस्तुत की।

श्रीमान सौरभ स्वामी निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर के साथ 19 मार्च 2021 को हल्दीराम ग्रुप के चेयरमैन श्री मनोहर लाल अग्रवाल द्वारा बीकानेर जिले के दो बालिका विद्यालयों में 2.25 करोड़ प्रति विद्यालय एवं राजकीय महारानी महात्मा गाँधी अंग्रेजी माध्यम विद्यालय बीकानेर में करीब एक करोड़ की लागत से नवीन कक्षा कक्ष एवं अन्य आवश्यक संसाधन उपलब्ध करवा कर विद्यालय गोद लेने के संबंध में आगामी रूपरेखा तय की।

निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान श्री सौरभ स्वामी द्वारा डा. प्रमोद कुमार चमोली की पुस्तक 'कुछ पढ़ते...कुछ लिखते...' का लोकार्पण किया। साथ हैं शिक्षा अधिकारी सर्व श्री अरुण शर्मा, उपनिदेशक माध्यमिक, डा. रोहतास पचार, स्टाफ आफिसर; लेखक डा. चमोली, शिविरा सम्पादक मुकेश व्यास एवं डा. अशोक शर्मा, सहायक निदेशक।

राजकीय माध्यमिक विद्यालय किला (रियाबड़ी) नागौर में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर कक्षा 10 की छात्रा रोशनी कुर्डिया एक दिन की बनी संस्थाप्रधान के रूप में कार्य संलाचन करते हुए एवं अन्य शिक्षकवृंद।

राजकीय महात्मा गाँधी अंग्रेजी माध्यम विद्यालय धारियावाद, (प्रतापगढ़) के वरिष्ठ अध्यापक (विज्ञान) श्री विजेन्द्र टेलर द्वारा कक्षा 10 के विद्यार्थियों के लिए बनाया गया साइंस केप्सूल पुस्तिका का विमोचन करते शाला के शिक्षकवृंद।

राजकीय प्राथमिक विद्यालय सोमता जसवंतपुरा, जालोर के प्रधानाध्यापक श्री रणजीत, अध्यापिका ममता मीणा एवं इन्द्रा देवी ने 40,000 रु. लगाकर लॉकडाउन के कार्यकाल में विद्यालय को एज्यूकेशन एक्सप्रेस का नया रूप दिया।